ISSN 2454-504X | 16-31 जनवरी, 2025 | राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका | RNI No. DELHIN/2002/08663

₹ 15

# दूसरा मत

दूसरा मत कामयाबी के 22 साल

www.doosramat.com | YOUTUBE DOOSRA MAT | जहां सच बोलते हैं शब्द

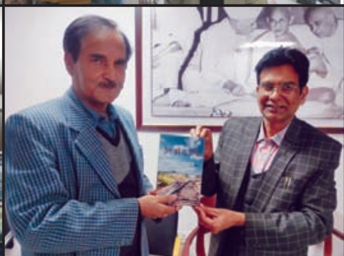

1. प्रो. जाबिर हुसेन को साहित्य अंक भेंट करते ए आर आज़ाद
2. डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी को 'बेटी : एक ग़ज़ल' भेंट करते आज़ाद
3. डॉ रामदरश मिश्र को 'मां : एक ग़ज़ल' भेंट करते आज़ाद
4. डॉ अनामिका को शॉल एवं पुस्तकें भेंट करते ए आर आज़ाद
5. पद्मश्री डॉ. एम. वली को 'बेटी : एक ग़ज़ल' भेंट करते आज़ाद
6. अरविन्द सिंह को 'रेल की पटरियां' भेंट करते ए आर आज़ाद
7. प्रो. ज्ञानतोष कुमार झा को 'तस्वीर' भेंट करते ए आर आज़ाद

## दिनकर की धरती के देदीप्यमान सूर्य आचार्य हाशमी

## सशक्त प्रधानमंत्री थे मनमोहन

इंडियनऑयल
IndianOil
YEARS OF SERVICE TO THE NATION
BARAUNI REFINERY
1965-2025
इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
बरौनी रिफाइनरी
हीरक जयंती
राष्ट्र सेवा के
60
वर्ष
ऊर्जा, विकास और आत्मनिर्भरता का संगम
1965-2025
हर कदम प्रकृति के संग

अगर आप में है जोश और
देश से प्यार
तो आइए दिल्ली से प्रकाशित
राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका
दूसरा मत
के साथ
अगर शिक्षक, प्रोफेसर, इंजीनियर और डॉक्टर बनते हो तो हमेशा एक ही काम करोगे लेकिन पत्रकार बनते हो तो दुनिया समझने को मिलेगी, दुनिया समझाने को मिलेगी। दुनिया को पढ़ने का मौक़ा मिलेगा, दुनिया को पढ़ाने का मौक़ा मिलेगा
हम आपके हाथ में देते हैं क़लम
समाज–निर्माण की ताक़त के साथ।
योग्यता
ख़बरों की समझ
और देश के साथ
सच्ची प्रेम–भावना
सोचो, समझो और दूसरा मत से जुड़ो
संपर्क : +91–9643709089

# दूसरा मत

## पढ़ें और पढ़ाएं दूसरा मत

एक शुभचिंतक, दिल्ली

# दूसरा मत
जहां सच बोलते हैं शब्द

RNI No. DELHIN/2002/08663

वर्ष: 24, अंक: 02

16-31 जनवरी, 2025



संपादक
ए आर आज़ाद

संपादकीय सलाहकार
मन्नेश्वर झा (IAS R.)
(पूर्व प्रमुख सलाहकार, योजना आयोग, भारत सरकार)

प्रमुख परामर्शी एवं प्रमुख क़ानूनी सलाहकार
न्यायमूर्ति राजेन्द्र प्रसाद
(अवकाश प्राप्त न्यायधीश, पटना उच्च न्यायालय)

प्रमुख सलाहकार
जियालाल आर्य (IAS R.)
(पूर्व गृह सचिव एवं पूर्व चुनाव आयुक्त बिहार)

सलाहकार संपादक
सुरेश दत्त

ब्यूरो प्रमुख
रुफी शमा

राजनीतिक संपादक
देवेंद्र कुमार प्रभात

बेगूसराय ब्यूरोचीफ
सह ब्यूरो बिहार
एस आर आजमी



ब्यूरो ऑफिस बिहार
बजरंगबली कॉलोनी, नहर रोड,
जज साहब के मकान के सामने, फुलवारी शरीफ,
पटना, बिहार-801505

संपादकीय एवं पंजीकृत कार्यालय
81-बी, सैनिक विहार, फेज़-2, मोहन गार्डेन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
Email: doosramat@gmail.com
MOBILE. 9810757843
Whatsapp. 9643709089



स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
ए आर आज़ाद द्वारा 81-बी, सैनिक विहार, फेज़-2, मोहन गार्डेन, उत्तम नगर, नयी दिल्ली-110059 से प्रकाशित एवं शालीमार ऑफसेट प्रेस, 2622, कूचा चेलान, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 से मुद्रित।
संपादक-ए आर आज़ाद



*पत्रिका में छपे सभी लेख, लेखकों के निजी विचार हैं, इनसे संपादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। पत्रिका में छपे लेखों के प्रति संपादक की जवाबदेही नहीं होगी।
सभी विवादों का समाधान दिल्ली की हद में आने वाली सक्षम अदालतों में ही होगा।
*उपरोक्त कुछ पद अवैतनिक हैं।*



**आवरण** 36
सशक्त पीएम थे मनमोहन

**प्रेरक** 12
सावित्रीबाई फुले

**समय** 14
परवरिश पर सोचने का समय

**दृष्टिकोण** 16
शरज़ील के बहन के बहाने

**राष्ट्र गौरव** 06
स्वामी विवेकानंद

**पर्यटन** 68
पहली पसंद की ओर एमपी

**यात्रा** 64
आगरा, मथुरा, ग्वालियर

कवि मीमांसा : देदीप्यमान सूर्य हाशमी 08
ग़ौरतलब : फ़ज़लुर रहमान हाशमी ... 10
व्यक्ति विशेष : जन-जन के गौरी भाऊ 18
विवाद : 'अल्लाह-ईश्वर तेरो नाम' 20
रिवाज़ : भुर्री की परंपरा 22
पड़ताल : अपनों के ही निशाने पर कांग्रेस 24
भाषा-विमर्श : हिन्दी : निरंतर संघर्ष 26
आधी आबादी : इक्विटी बाज़ार में महिला..28

# संपादकीय

ए आर आज़ाद

## श्रीनाथ खंडेलवाल के बहाने

बेटे ने जब कहा पापा चांद चाहिए
तो पिता ने हनुमान की तरह
पूरा आसमान ही उठा कर थमा दिया
जिसमें चांद भी,
जगमग करते तारे भी,
अंगड़ाई लेते बादल भी,
और कल उगने वाले सूरज भी होते हैं

पिता को मालूम है
बेटे की चाहत
उसकी सांसों से ज़्यादा क़ीमती है
बेटे की मुस्कान
उसके लिए सबसे मूल्यवान है

बेटे के आंसू
देख नहीं सकता कोई पिता
इसलिए
ज़िंदगी भर
बेटे के लिए समर्पित हो जाता है पिता
लेकिन
एक दिन बेटा को जब लगता है कि
अब यह 'बिल्ली' चूहा खाने लायक़ नहीं
रही
तो फिर उसे घर से निकाल देता है
कुछ बेटे ऐसे क्यों होते हैं?
कुछ के हालत को देखकर
कुछ लोग ऐसा सोचने लगते हैं
लेकिन वे भी आख़िरकार वही करते
जिसकी सज़ा
कोई न कोई बाप भुगत रहा होता है...!

यह कविता बहुत कुछ कहती है। यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी कल रहेगी। दुनिया के पिता के सामने यह सवाल यक्ष प्रश्न बना ही रहेगा। दरअसल पिता का हृदय पुत्र के लिए एक ऐसी बहती धारा बन जाती है, जो उसकी हसरतों की नाव को मंज़िल तक पहुंचाने और सोच को परवान चढ़ाने में मददगार साबित होती है। हर पुत्र इसी धारा में पिता का बहाव देखना चाहता है। और पिता भी पुत्र की ख़ुशी के लिए अपने आपको त्याग की प्रतिमूर्ति और सेवक बन जाना चाहता है। यह सोच इसलिए ग़लत नहीं है कि यह सोच प्रकृति प्रदत्त होती है। प्रकृति के वरदान की तरह होती है। और यह सोच इंसानियत को ज़िंदा रखने का सबसे बड़ा हथियार भी होती है। लेकिन जब पिता संस्कार की जगह सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी संतान को सत्कार ही देता है तो फिर वह बच्चा संस्कार के अभाव में पिता के सत्कार को अपनी जवानी और उमंगों की सत्ता में भूल जाता है। जब बच्चा जवानी की सत्ता और उमंग के सिंहासन पर बैठने लगता है, तो पिता अपने बेटे की बैसाखी के सहारे पर टेक लगाने लगता है। वह टेक कितनी कारगर होती है- वह सबकुछ बचपन में दिए गए उसके संस्कार पर निर्भर करता है।

इसलिए बच्चों को सत्कार के साथ-साथ मां-बाप को बच्चों के संस्कार पर भी ध्यान देना चाहिए। सिर्फ़ बच्चों के लिए संपत्ति जमा कर देने या ज़मीन और जागीर तैयार कर देने से एक दिन वह बच्चा संस्कार विहीन होकर ऐसी भूल कर ही देता है, जिससे उसे ज़िंदगी भर की शर्मिंदगी उठानी पड़ती है। और बुढ़ापे के आलम में माता-पिता को बेटे के दर्द का बोझ अपनी बुज़ुर्गियत की पीठ पर लादे रहना पड़ता है। और यह बोझ जब बर्दाश्त से बाहर हो जाता है, तो फिर उसकी सांसें थम जाती है। और फिर क़ब्र में एक मुट्ठी मिट्टी देने के लिए भी वह बच्चा मौजूद नहीं होता है। ऐसा ही कुछ तो चर्चित साहित्यकार श्रीनाथ खंडेलवाल के साथ हुआ। बच्चों के लिए अथाह और अकूत संपत्ति जमा कर दी। लेकिन बावजूद इसके बच्चों ने घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया। मौत ने जब आगे बढ़कर थाम लिया, तो संतान को इतनी भी फ़ुर्सत नहीं मिल सकी कि वो श्मशान घाट पर जाकर उन्हें मुखाग्नि दे सकें। यह वक़्त सोचने का है। सबको सोचने का है। एक सभ्य समाज बनाने का है। हिन्दू-मुसलमान करने का नहीं। ऊपर की पंक्ति के बाद सबको नीचे की पंक्ति पर गहराई से सोचने का है-

**"पूत सपूत तो का धन संचय,**
**पूत कपूत तो का धन संचय"**

क्षमा याचना के साथ।
जय हिन्द! जय भारत!!

# स्वामी विवेकानन्द राष्ट्र के गौरव

मोहन मंगलम
*स्तंभकार*

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के लोगों का ही नहीं, अपितु पूरी मानवता का गौरव बढ़ाया। भारतीय आध्यात्मिकता को पश्चिमी भौतिक प्रगति के साथ जोड़ने का प्रयास किया। आत्म-पूर्णता और सेवा उनके आदर्श थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व की छाप पूर्व और पश्चिम दोनों पर छोड़ी।

1857 की क्रांति के असफल हो जाने के बाद संपूर्ण भारतवर्ष में एक तरह का नैराश्य व्याप्त हो गया था। भारत के लोग अपने को राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में 'हारे हुए' मानने लगे थे। वे आत्म-गौरव पूरी तरह खो बैठे थे। ऐसे में अमेरिका में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने अपने वक्तव्य से सनातन धर्म का ध्वजा फहरा दिया था। स्वामी विवेकानन्द की इस दिग्विजय-यात्रा के बाद ही देशवासियों की ग्लानि दूर हुई थी और बरसों बाद पहली बार भारतवर्ष आत्मविश्वास और स्वाभिमान से उछल पड़ा था।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ था। उनका नाम नरेन्द्रनाथ था। पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध वकील थे। माता भुवनेश्वरी देवी को पुराण, रामायण, महाभारत आदि की कथा सुनने का बहुत शौक था। माता-पिता के संस्कारों और धार्मिक वातावरण के कारण बालक नरेन्द्र के मन में बचपन से ही ईश्वर को जानने और उसे प्राप्त करने की लालसा दिखायी देने लगी थी।

नरेन्द्र बचपन से ही ध्यान का अभ्यास करते थे। रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आने के बाद उनके जीवन में एक बड़ा बदलाव आया। रामकृष्ण परमहंस के दिव्य मार्गदर्शन में उन्होंने आध्यात्मिक पथ पर अद्भुत प्रगति की। 25 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिए थे। तत्पश्चात स्वामी विवेकानन्द ने पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान देश में भयानक गरीबी और पिछड़ापन देखकर वे बहुत द्रवित हुए। वे भारत के पहले धार्मिक नेता थे, जिनका मानना था कि जनता ही जनार्दन है। जनता की उपेक्षा करने से देश पिछड़ जाएगा। वे देश की आर्थिक स्थिति में सुधार करने, आध्यात्मिक ज्ञान, नैतिक बल को मजबूत करने में शिक्षा को ही एकमात्र साधन मानते थे। उनके शब्दों में 'शिक्षा मनुष्य को जीवन में संघर्ष के लिए तैयार करने में मदद करती है। शिक्षा चरित्रवान, परोपकार और साहसी बनाती है।'

स्वामी विवेकानन्द 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका के शिकागो में हो रहे विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि के रूप में पहुँचे। यूरोप-अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। उन्होंने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानन्द

को विश्व धर्म सम्मेलन में बोलने का समय ही न मिले, परंतु एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला। विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाषण की शुरूआत ह्यअमेरिकी बहनो और भाइयोह्व से की, जिससे पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। स्वामी जी ने कहा, 'मुझे उस धर्म व राष्ट्र से संबंध रखने पर गर्व है जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता सिखाई है। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे भारतीय होने पर गर्व है, जिसमें विभिन्न राष्ट्रों के पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।'

स्वामी विवेकानन्द के उदगार सुनकर विश्व के विद्वान चकित हो गये। फिर तो अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द के भक्तों का एक बड़ा समुदाय बन गया। विवेकानन्द तीन वर्ष तक अमेरिका में रहे और वहां के लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अद्भुत ज्योति प्रदान की। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएँ स्थापित कीं। अनेक अमेरिकी विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था - 'यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िए। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पाएंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।'

विश्व धर्म सम्मेलन में ऐतिहासिक व्याख्यान के बाद स्वामी विवेकानन्द ने यूरोप का भी व्यापक दौरा किया। उनकी दिव्यता, नैतिकता, पूर्व-पश्चिम का जुड़ाव व एकता की भावना विश्व के लिए वास्तविक संपत्ति है। अमेरिका से लौटकर स्वामी विवेकानन्द ने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा था- 'नया भारत निकल पड़े भड़भूँजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से, बाजार से; निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से।' और जनता ने स्वामी विवेकानन्द की पुकार का उत्तर दिया। वह गर्व के साथ निकल पड़ी। महात्मा गांधी को आजादी की लड़ाई में जो जन-समर्थन मिला, वह विवेकानन्द के आह्वान का ही प्रतिफल था। इस प्रकार वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के भी प्रमुख प्रेरणा स्रोत बने।

स्वामी विवेकानन्द स्वीप्नद्रसष्टा थे। उन्होंरने एक ऐसे समाज की कल्पाना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्यन-मनुष्यर में कोई भेद न रहे। वे सैद्धान्तिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, बल्कि व्यावहारिक शिक्षा को व्यक्ति के लिए उपयोगी मानते थे। उन्होंने कहा था, 'जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र निर्माण नहीं करती, जो समाज सेवा की भावना विकसित नहीं करती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ?'

विवेकानन्द ने हमारे देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को परिभाषित किया। उनके बारे में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है ''स्वामीजी इसलिए महान हैं कि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया है, देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास आत्मसात किया है।''

स्वामी विवेकानन्द का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है। उनके दिखाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत-श्रेष्ठ भारत, आत्मनिर्भर भारत, स्वस्थ भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। 39 वर्ष के अल्प जीवनकाल में स्वामी विवेकानन्द जो काम कर गये, वे आने वाली अनेक शताब्दियों तक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे। ●

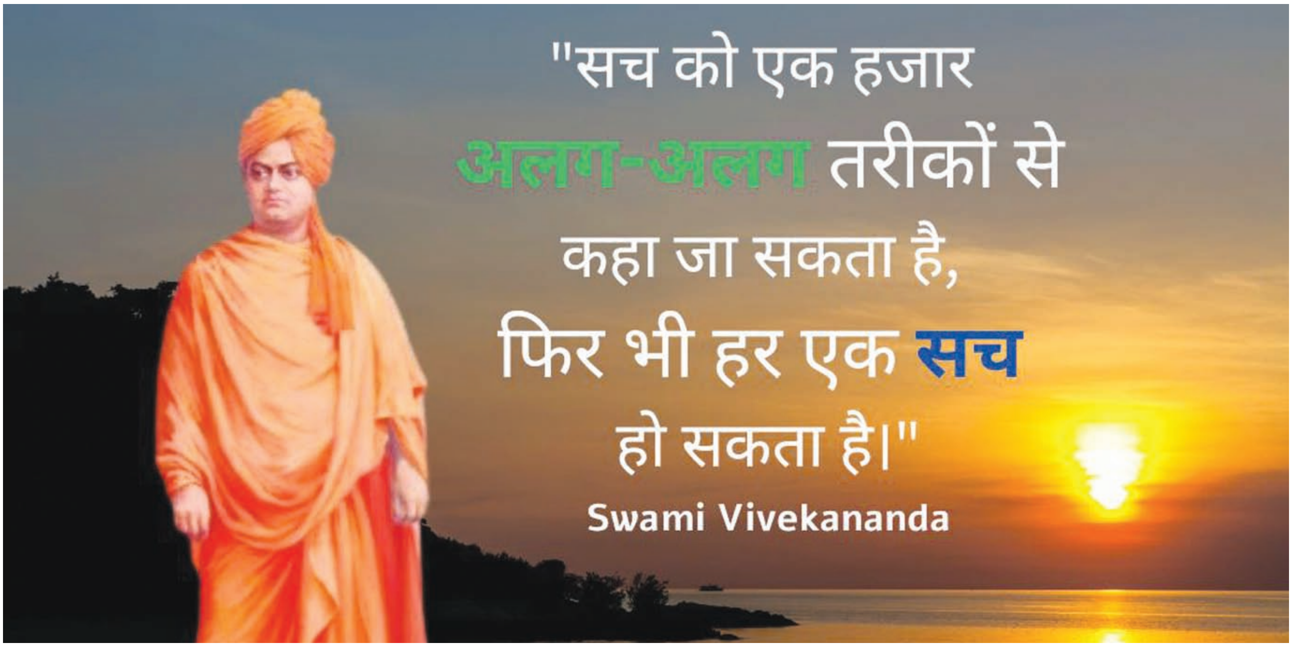

# दिनकर की धरती के देदीप्यमान सूर्य आचार्य हाशमी

▸▸ए आर आजाद

आचार्य हाशमी दिनकर की धरती के देदीप्यमान सूर्य के तौर पर जाने जाते हैं। उनकी प्रतिभा 'कुमुद' की शीतलता और 'सुहृद' की सहृदयता को अपने अंदर समेटे हुए थी। वो एक ऐसे शब्दकोष थे, जो बोलते थे। उनकी जुबान से निकली हुई शब्दावली ज़ायक़ेदार बोली बनकर कान में मिश्री घोलती थी। उनकी आवाज़ का जादू लोगों के सर पर चढ़कर बोलता था। यही वजह है कि कोई उन्हें शब्दों का जादूगर, कोई शब्दकोश, तो कोई आखर को आकृति देने वाला सबसे बड़ा मूर्तिकार यानी आखरकार मानता था।

वास्तविकता इससे भी आगे थी। वो सरल प्रकृति के मनुष्य थे। मनुष्यता उनका आभूषण था। हर्फ़ों को लहज़े में ऐसे ढालते थे, जैसे कोई जौहरी हीरे को तराशकर नायाब बना देता है। जिसको वे अक्षर भर का ज्ञान दे देते थे, वह उस ज्ञान का शिक्षक बन जाता था। वे बेगूसराय में ग़ज़ल की बारीकियों का ज्ञान बांटने वालों के तौर पर जाने जाते थे। बेगूसराय में ग़ज़ल में उनका कोई दूसरा सानी नहीं हुआ है। मुक्तकों के वे कंठ माने जाते थे। कविता में उनकी ख़ास पहचान थी। छंद की कविताएं हों या मुक्त छंद दोनों में पारंगता उनकी प्रतिभा की सबसे बड़ी प्रासंगिकता थी। और यही उनकी प्रासंगिता आज भी प्रासंगिक है, यह प्रसन्नता की बात है।

उनके अंदर एक तेज था। एक ऊर्जा थी। एक संयम था। एक शिष्टाचार-बोध था। वे अरबी के ज्ञाता थे। और संस्कृत की सांस्कृतिक विरासतों को अपने मन के कंधों और क़लम की नोक से काग़ज़ पर ऐसे उकेरते थे कि देखने वाले और सुनने वाले दांतों तले अंगुली चबा लेते थे। धर्म मामलों के वे पंडित थे। कोई भी धार्मिक पंडित और संस्कृत के कई प्रमुख विद्वान उनकी योग्यता और सामर्थ्यता को जानकर अचंभित और हैरतज़दा हो जाते थे।

इस्लाम का उनको वास्तविकता भरा ज्ञान था। वे प्रमाण-पत्र वाले भले इस्लामिक विद्वान न हों, लेकिन उनकी ज्ञान-धारा का बहाव उन्हें बहुत दूर तक ले जाता था। वे सामर्थ्य थे महाभारत पर

प्रभाव के साथ प्रभावीशाली तौर पर व्याख्यान देने में। और लोगों को अपने आख्यान से प्रभावित करने में। वे वेद पर निः संकोच बोलने की हिम्मत रखते थे। उन्होंने गीता ज्ञान को एक ज्ञानी की तरह समझाने की कला में निपुणता को पूर्णता के तौर पर ग्रहण कर लिया था। उन्हें पुराण ज्ञान भी ज्ञान-धारा की एक इकाई के तौर पर निपुणता प्रदान करता था। उन्होंने मनु स्मृति को भी आत्मसात कर लिया था। उर्दू तो घर की भाषा थी। अरबी भी ख़ानदान की विरासत थी। वे फ़ारसी को उर्दू में पिरोने का बख़ूबी हुनर जानते थे। और हिंदी तो इनकी जान ही थी। हिंदी माध्यम से इन्होंने पढ़ा ही था। इन्होंने हिंदी में अरबी, फ़ारसी और उर्दू के मिश्रण से अपने साहित्यिक दायित्व को पूरा किया। और इस तरह से उन्होंने अपनी रचनाओं में मैथिली का तड़का लगाकर अपनी रचनात्मकता को आसमान छुलाया। और अपना साहित्यिक क़द आसमान को छूलाते हुए समर्पित कर दिया।

मैथिली को इन्होंने गौरव दिया। और इस भाषा को पराकाष्ठा पर पहुंचाने में जो योगदान दिया, उसका उदाहरण आज हर कोने में विराजमान मैथिली है।

मैथिली और आचार्य हाशमी दोनों का अन्योन्याश्रय संबंध हर जगह दिखता भी है। मैथिली में इन्होंने योगदान दिया, तो इस भाषा ने भी बदले में इन्हें भरपूर सम्मान दिया। आचार्य हाशमी साहित्य अकादमी, भारत सरकार में मैथिली पुरस्कार विभाग के लंबे समय तक सदस्य रहे। और लंबे वक़्त तक पुरस्कार समिति के जूरी भी रहे। साहित्य अकादमी का इन्हें पुरस्कार भी मिला। और इनकी तीन अनुवाद पुस्तकें भी साहित्य अकादमी से प्रकाशित हुई। मैथिली के इंटर और मैट्रिक की कक्षा में इनकी कविताएं भी पढ़ाई गईं। और आज भी पढ़ाई जा रही हैं। और कुछ शोधार्थी आचार्य हाशमी पर गौरवपूर्ण तरीक़े से पीएचडी भी कर रहे हैं।

इन्होंने मैथिली में 'हरवाहक बेटी' देकर सीता जी पर जो महाकाव्य लिखा, उसे चारों तरफ से ख्याति मिली। उस पुस्तक को आज भी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'उर्मिला की उदासीनता विषयक' के तौर पर एक अलग नज़रिए से देखा जाता है। और 'हरवाहक बेटी' आज भी एक मील का पत्थर साबित हो रही है।

उनकी समस्त रचनाओं पर विमर्श एक लेख में आसान नहीं है। उन्होंने जितना लिखा, अगर कोई उसे सुरक्षित और संरक्षित करने वाला होता, तो हर विधा को मिला कर उनकी कम से कम सौ पुस्तकें हमारे और आपके सामने होतीं।

बहरहाल हाशमी साहब जैसे लोग पुस्तकों की संख्या से पहचाने नहीं जाते।, वे अपनी कुछ रचनाओं से मानव-मन और मानस-पटल पर अपना स्थान बना लेते हैं। ऐसे रचनाकारों को प्रेरक मानने वाले साहित्यकार ही अपना क़द को ऊंचा उठा सकते हैं। आचार्य हाशमी इस देश की थाती थे, हैं, और रहेंगे। उनके चिंतनशील शब्दों के ज़रिए साहित्य ने अपने वैभव को क़ायम किया है। हम सब उनके इस वैभव से साहित्यिक माहौल को गौरवशाली बनाने का काम करें। और समाज के बिखरे ज़ुल्फ़ों को एक कंघी की तरह संवारने का काम करें। यही उन्हें सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी। ●

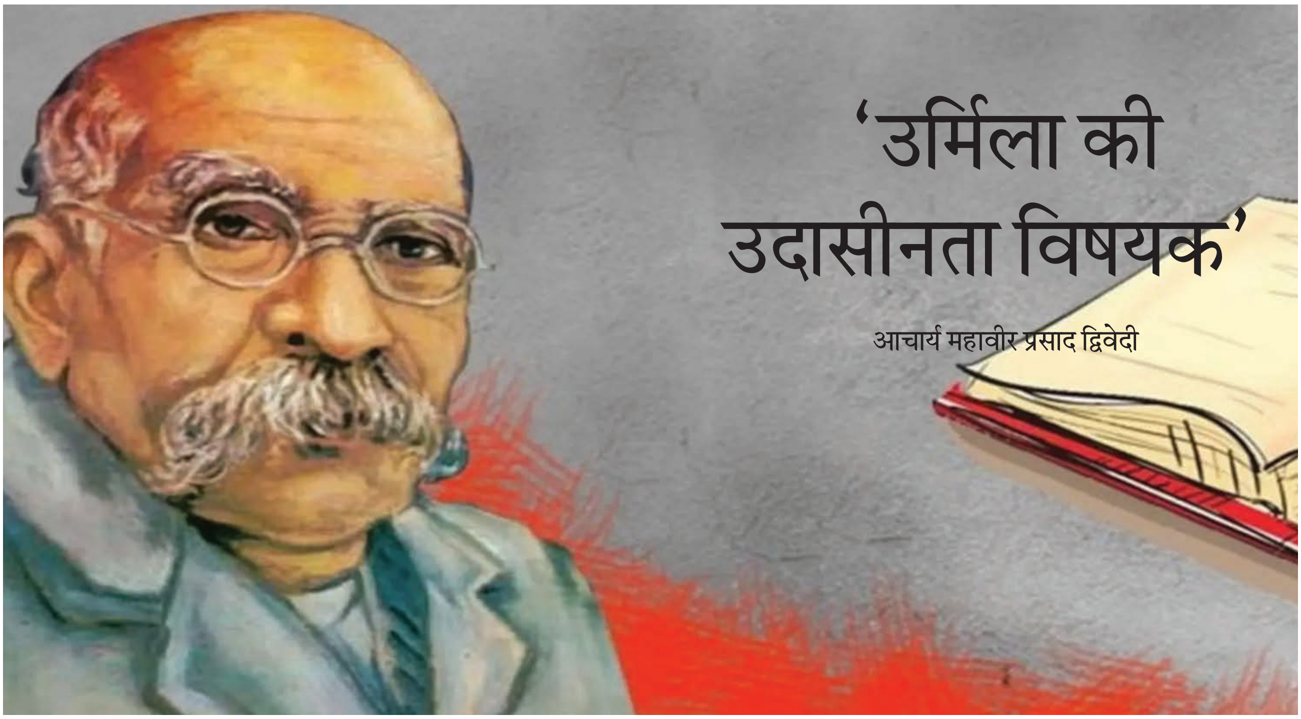

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री
*साहित्यकार*

# फ़ज़्लुर रहमान हाशमी की साहित्यिक उड़ान

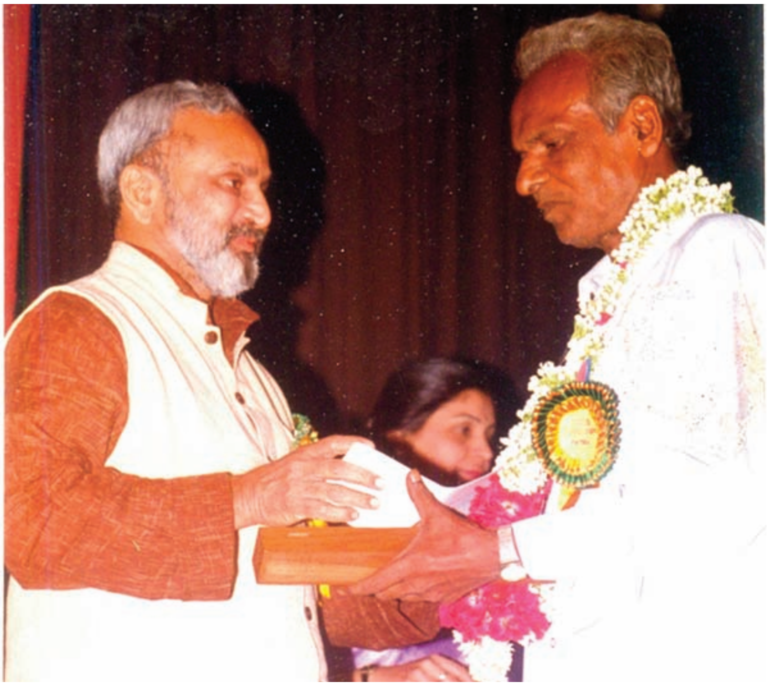

बेगूसराय के कवियों शायरों में दिनकर के बाद जिस व्यक्ति का नाम निर्विवाद रूप से लिया जाता है,वह फ़ज़्लुर रहमान हाशमी हैं। वह उर्दू हिंदी और मैथिली के महत्वपूर्ण लेखक तो थे ही,अंग्रेज़ी और संस्कृत का भी उन्हें अच्छा ज्ञान था। बेगूसराय के भवानंदपुर गांव में उन्होंने अपनी परवरिश पाई। और अपनी ख़ूबसूरत लेखनी से उर्दू, हिंदी और मैथिली भाषा के साहित्य को समृद्ध किया। वह विश्व के पहले मुसलमान थे, जिन्हें मैथिली में साहित्य अकादमी का अवार्ड मिला। साहित्य अकादमी भारत सरकार के पूरे पांच वर्षों तक वह सलाहकार रहे। साथ ही साहित्य अकादमी के पुरस्कार निर्णायक समिति के सदस्य भी रहे। साहित्य अकादमी की तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों मीर तक़ी मीर, फ़िराक गोरखपुरी, और अबुल कलाम आज़ाद का मैथिली में अनुवाद किया। मीर तक़ी मीर की साहित्य अकादमी की जहां अंग्रेज़ी की पुस्तक थी, वहीं अबुल कलाम आज़ाद उर्दू, और फ़िराक गोरखपुरी हिंदी में प्रकाशित थीं। हिंदी में रश्मिरथी, जहां उनका खंडकाव्य है; वहीं 'मेरी नींद तुम्हारे सपने' उनकी ग़ज़लों का संग्रह है। उन्होंने भगवत गीता का भी उर्दू में अनुवाद किया था, तथा 'शापित कर्ण' नामक खंडकाव्य की रचना की। 'हरवहाक बेटी' और 'निमोर्ही' उनकी मैथिली कविताओं का संग्रह है। फ़ज़्लुर रहमान हाशमी को मिथिला यूनिवर्सिटी ने आचार्य की उपाधि दी थी; उनकी साहित्य साधना पर कम से कम दो छात्रों ने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वह आकाशवाणी दरभंगा के नियमित वातार्कार थे। वह पहले ऐसे लेखक थे, जिनकी रचना सूरदास और उनकी शायरी को आकाशवाणी पटना ने अपने उर्दू प्रोग्राम में दस बार से ज़्यादा प्रसारित किया था। हाशमी की कविता 'थरमसक चाय' मैथिली के दशम वर्ग के पाठ्यक्रम में शामिल है। उनकी कविताएं इंटर और ग्रेजुएट के पाठ्यपुस्तक में भी पढ़ाई जाती हैं। फ़ज़्लुर रहमान हाशमी को मुशायरे के बेहतरीन संचालक के तौर पर भी जाना जाता है। मुशायरे में उनके मौजूद रहते हुए शायद ही कोई आयोजन उनके संचालन में न हुआ हो। भाषा पर उनका ज़बरदस्त अधिकार था। इस्लाम, हिंदू, ईसाई सभी मज़हब की गहरी जानकारी उन्हें थी। उनकी तक़रीर जब शुरू होती थी तो आने-जाने वाला मुसाफ़िर भी रुक जाता था। हिंदी में उन्होंने जहां व्यंग्य प्रधान कविताएं अधिक लिखी हैं, वहीं उर्दू में उनकी शायरी हालत-ए-हाज़रा से मुतासिर है। मैथिली कविताओं में उन्होंने पौराणिक संदर्भों का इस्तेमाल अधिक किया है।

हाशमी सच्चे भारतीय थे। और कानून के बड़े पाबंद थे। उनकी शनाख़्त काफ़ी दूर तक थी। हरिवंश राय बच्चन और मैथिलीशरण गुप्त ने उनकी कविताओं पर भूमिका लिखी थी, तो इंदिरा गांधी ने उन्हें एक पहचान पत्र देते हुए लिखा था कि वह उन्हें व्यक्तिगत तौर पर जानती हैं। अली मियां नदवी और वली रहमानी अक्सरअपनी बातों में उनका ज़िक्र किया करते थे। क़ानून के वह ऐसे पाबंद थे कि रेलवे के मुशायरे में भी प्लेटफार्म से गुज़रने के लिए टिकट ले लेते थे। नेपाल के कवि सम्मेलन में जब लौटते हुए उन्होंने जब बॉर्डर पुलिस से एक नेपाली घड़ी ले जाने की इजाज़त मांगी तो बॉर्डर पुलिस ने उन्हें यह कहकर अपनी कुर्सी बढ़ा दी, जहां लाखों करोड़ों की चीज़ें तस्करी कर ली जाती

हैं, और आप सिर्फ़ एक घड़ी लेने के लिए इजाज़त ले रहे हैं।

.हाशमी का घराना भी बड़ा पढ़ा लिखा था। 'नदीम', 'कारवां', 'एक-एक कतरा', 'दूसरा मत', 'निष्पक्ष वार्ता', 'भारत श्री', 'ग्लोबल ऑब्ज़र्वर' जैसी पत्र पत्रिकाएं उनके घर से प्रकाशित होती थीं। उनमें से कुछ का प्रकाशन अभी भी जारी है। उनकी बेटियां, बेटे भी शायरी करते हैं। घर का पढ़ा-लिखा और साहित्यिक माहौल है। वह जब तक ज़िंदा रहे अंत समय तक लिखते रहे। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले जो ग़ज़ल लिखी थी, उसमें भी मौत का ही ज़िक्र है। वह पंक्तियां इस प्रकार थीं-

ज़माने को कलंकित कर गया हूँ
मिला भाई तो उससे डर गया हूँ
नहीं अनुभूति है जीवंत मेरी
मुझे लगता है जैसे मर गया हूँ

हाशमी उर्दू में 'बीसवीं सदी' और 'गुलाबी किरण' के नियमित लेखक थे उनका बाल साहित्य भी ग़ज़ब का था। हिंदी उर्दू की तमाम बाल पत्रिकाओं में वह नियमित तौर से लिखते थे उर्दू में उनका यह हम्द स्कूलों में पढ़ा जाता है-

जुबान ए पाक में या रब असर दे
हो संग सख़्त भी तो मोम कर दे
शबे तारीक से घबरा रहा हूँ
मेरे या रब मुझे नूरे नज़र दे

हाशमी की ग़ज़लें भी कम लोकप्रिय नहीं है। हिंदी उर्दू में तो ग़ज़ल वो लिखते ही थे; मैथिली में ग़ज़ल लिखने की शुरूआत भी सबसे पहले उन्होंने ही की। उनकी ग़ज़लों की भाषा जहां आम फ़हम होती थी, वहीं उसका असर इतना ज़्यादा था कि हर आदमी जो जीवन से थका हुआ है, बेचैन है, परेशान है, वह उनकी शायरी में जगह पाता है। देश की परिस्थितियों का वर्णन उनकी ग़ज़लों में प्रमुखता से हुआ है। उनकी शायरी में हर वह दर्द शामिल शामिल है जिसे एक आम आदमी अपनी ज़िंदगी में महसूस कर सकता है। उनके कुछ शेयर देखे जा सकते हैं-

साया भी तो हट जाता है हर रात को देखो
जब आप मेरे पास तो दूजा नहीं होता

ग़ैर को देखते हो बहुत ग़ौर से
अपनी जानिब भी मुड़ मुड़ के देखा करो

आज रोटी के साथ है सब्ज़ी
घर में मेरे बहार आई है

ग़म में जो लोग मुस्कुराना सके
ज़िंदगी के करीब आ न सके

अपनी क़िस्मत से यार आई है
उनके घर से पुकार आई है

दिल मेरा तोड़ कर कहाँ तस्कीन पाएगा
रो देगा अगर आईने का ज़िक्र आएगा

न देखा यान में लंगर कहाँ है
मुझे तो हौसला है डर कहाँ है

हम तुम्हारे क़रीब आएँगे
अपना दुखड़ा नहीं सुनाएँगे

ग़रीबी एक चादर है फटी सी
इसी कारण लगी है दिल लगी सी

वक़्त का कुछ रुख़ बदलना चाहिए
एक दीपक बनकर चलना चाहिए

अज़्म जिसका जवान होता है
आदमी वह महान होता है

यह तो दरख़्वासत की शोभा है केवल
कहीं व्यवहार में सादर कहाँ है

जब से सर से गुज़र गया पानी
अपनी आँखों का मर गया पानी

अपना ग़म मुझको सबसे प्यारा है
जिसने सौ बार मुझ को मारा है

जिनको संसार में सँभलना है
साथ मेरे ही उनको चलना है

मेरा तो काला ही काला
अपना उजला दामन देख

कहना न होगा कि हाशमी में जो प्रतिभा थी, वह प्रतिभा कम लोगों में देखने को मिलती है। एक छोटे से गांव में पल-बढ़कर और रहकर उन्होंने अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाई या उनके निरंतर और मज़बूत लेखनी से ही संभव हो सका है। ●

# महिलाओं के स्वाभिमान की प्रेरणा का दूसरा नाम सावित्री बाई फुले

डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल

समाज में व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध लड़ने के लिए समय-समय पर कुछ लोगों के उठने और संघर्ष करने के अनेक उदाहरण मिलते हैं, लेकिन उनमें से कुछ ऐसे विशेष व्यक्तित्व होते हैं जिनके दिए गए विचारों और शुरू किए गए उपक्रमों का भावी पीढ़ियों पर बहुत गहरा असर पड़ता है। ऐसी ही एक महान विभूति श्रीमती सावित्री बाई फुले की 190 वीं जयंती है। समाज सुधार के लिए उनके उठाए गए कदम न केवल उनके दौर की पृष्ठभूमि में महान थे, बल्कि आज भी वे हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं, और वर्तमान में भी प्रासंगिक है। सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 में महाराष्ट्र के नायगांव में पिता खन्दोजी नेवसे व माता लक्ष्मी के घर हुआ। 1840 में 9 वर्ष की आयु में उनका विवाह समाज-सुधारक ज्योतिराव (ज्योतिबा) फुले के साथ हुआ। विवाह के समय वह अनपढ़ थी।

जिस दौर में सावित्री बाई फुले पढ़ने का सपना देख रही थी। उस दौर में अस्पृश्यता, छुआछूत, भेदभाव जैसी कुरीतियां चरम पर थी। उसी दौरान की एक घटना के अनुसार एक दिन सावित्री बाई अंग्रेजी की किसी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी, तभी उनके पिताजी ने देख लिया। वह दौड़कर आए और उनके हाथ से पुस्तक छीनकर घर से बाहर फेंक दी। कारण सिर्फ इतना था कि शिक्षा का अधिकार केवल उच्च जाति के पुरुषों को ही था। दलित और महिलाओं के लिए शिक्षा ग्रहण करना पाप समझा जाता था। बस उसी दिन से वह पुस्तक वापस लाकर प्रण कर बैठी कि कुछ भी हो जाए वह एक न एक दिन पढ़ना जरूर सीखेगी।

सावित्रीबाई फुले के पति ज्योतिबा फुले उनके जीवन में शिक्षक बनकर आए। 1841 में पढ़ने-लिखने का प्रशिक्षण उन्हें ज्योतिबा फुले से ही मिला। पूना में अंग्रेजी अधिकारी रे जेम्स मिचेल की पत्नी नारी शिक्षा की पक्षधर थी। अतः नार्मल स्कूल द्वारा सावित्री बाई फुले को विधिवत अध्यापिका का प्रशिक्षण दिया गया। अंग्रेजी भाषा में पारंगत होने के बाद सावित्री बाई फुले ने टामसन क्लांक्सन की जीवनी पढ़ी। टामसन नीग्रो लोगों पर हुए जुल्मों के विरुद्ध न केवल लड़े थे, बल्कि कानून बनवाने में भी सफल हुए थे। उनकी जीवनी पढ़कर सावित्री बाई फुले बहुत प्रभावित हुई।

वे भारत में अछूत और स्त्रियों की गुलामी के प्रति चिंतित थी। सावित्री बाई फुले ने अपने पति दलित-चिंतक व समाज-सुधारक ज्योतिराव फुले से प्रेरणा प्राप्त कर सामाजिक चेतना को आगे बढाया।

उन्होंने जनवरी, 1848 से लेकर 15 मार्च, 1852 के दौरान इन तीन सालों में अपने पति और सामाजिक क्रान्तिकारी नेता ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर लगातार एक-एक करके बिना किसी आर्थिक मदद और सहायता के लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोलकर, शैक्षणिक-सामाजिक क्रान्ति का शंखनाद किया। इस तरह का क्रान्तिकारी और समाज व्यवस्था में बदलाव लाने वाला काम देश में सावित्री बाईफूले से पहले किसी और ने नहीं किया था लेकिन तत्कालिक जातीवादी व महिला शिक्षा के विरोधी लोगों द्वारा सावित्रीबाई फुले को प्रताड़ित किया जाने लगा। जब भी सावित्री बाई फुले स्कूल जाती थी, तो लोग उन पर पत्थर और गोबर फेंक दिया करते थे। ऐसा प्रतिदिन होता था। लेकिन सावित्रीबाई पीछे नहीं हटी और उन्होंने इसका हल भी ढूंढ लिया। वे अपने साथ एक अतिरिक्त साड़ी भी लेकर स्कूल जाने लगी। ताकि वहां जाकर साड़ी बदल सके। भारी विरोध व प्रताड़ना के बाद भी सावित्रीबाई फुले ने स्कूल जाना नहीं छोड़ा। सावित्री बाई फुले देश की महिला शक्ति और अछूतों के लिए एक मिसाल और प्रेरणा हैं कि अगर दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति हो तो

समाज में नई चेतना का विस्तार किया जा सकता है।

सावित्री बाई फुले को देश की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने ऐसे समय में शिक्षा पर कार्य करना शुरू किया, जब शिक्षा के सारे द्वार महिलाओं के लिए बंद प्रायः थे। महिलाओं को पैरों की जूती कहा जाता था। महिला का जीवन चूल्हे-चैके और बच्चे पैदा करने में, पति-सेवा तक ही सीमित था। उनकी इच्छा, रुचि, अभिरुचि व मान-सम्मान का कोई मूल्य नहीं था। उच्च जाति के समुदायों की महिलाओं की स्थिति भी सोचनीय थी, परन्तु दलित व पिछड़ी महिलाओं की स्थिति अत्यधिक चिंतनीय थी। दलित महिलाओं पर उच्च जातियों के महिला-पुरुष के साथ-साथ अपने समाज के नियंत्रण का शि-कंजा भी कसा हुआ था। लेकिन सावित्री बाई फुले अटूट संकल्प के साथ महिला शिक्षा एवं सामाजिक क्रांति के लिए प्राण-प्रण से जुटी हुई थी।

सावित्रीबाई फुले देश में महिला शिक्षा जागृति एवं सामाजिक चेतना आंदोलन की प्रवर्तक थी। वे नारी शिक्षा एवं दलित महिला आन्दोलन की साहसी अग्रदूत महिला थी, वहीं वेएक कुशल सामाजिक कार्यकर्ता भी थी। सावित्री बाई फुले कोई साधारण महिला नहीं थी, जिन्हें इतिहास के गर्भ में छुपा दिया जाए और वे गुमनामी के अंधेरों में छुप जाएं। उन्नीसवीं शताब्दी की वह एक क्रांतिकारी चिंगारी थी, जिन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के अन्दर अपनी न केवल क्रांति बिखेरी बल्कि अंधविश्वास, पाखंड, ढोंग धार्मिक कर्मकांडों को प्रति आवाज उठाकर अछूतों व स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए। तत्कालीन समाज की विकट परिस्थितियों से टकराते हुए समाज सुधारक सावित्री बाई फुले युग प्रवर्तक बनकर सामने आयी। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, निर्भीक व्यक्तित्व, सामाजिक सरोकारों से ओत-प्रोत ज्योतिबा फुले के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज की दकियानुसी सोच बदलने के लिए न्याय-चिंतन के आधार पर कठोरसंघर्ष किया। उन्होंने महिला जीवन को गौरवान्वित करते हुए सामाजिक न्याय के लिए भरसक प्रयास किये। फुले दम्पति ने संयुक्त रूपसे नारी मुक्ति के लिए परम्परागत सामाजिक रुढ़ियों का खण्डन व खुलकर विरोध किया। देश में प्रथम बार सती-प्रथा तथा विधवा-मुंडन का विरोध एवं विधवा-विवाह का समर्थन कर विधवा जीवन की त्रासदी को समझा। सावित्रीबाई फुले के जागृतिपूर्ण कार्यों में समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा है के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है।

सावित्री बाई ने 1853 में बालहत्या प्रतिबंधक गृह स्थापित किए, जिसमें विधवाएं अपने बच्चों को जन्म दे सकती थी। अगर वो मां अपने बच्चे को साथ न रख पाएं, तो वो उसे वहां छोड़कर भी जा सकती थी क्योंकि उस समय विधवा को उसके सगे संबंधी या अन्य गर्भवती बना छोड़ देते थे। परिवार व समाज द्वारा उन्हे अपनाने से इनकार कर दिया जाता था, इससे बचने के लिए विधवा महिलाएं अपने बच्चों को आश्रय के लिए छोड़ देती थी। तत्कालीन समाज की ऐसी विकट समस्याओं के लिए सावित्री बाई का कार्य बेहद ही सराहनीय थी। सावित्री बाई फुले और ज्योतिबा फुले ने 24 सितंबर, 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की जिसके माध्यम से विधवा विवाह की परंपरा शुरू की और इस संस्था के सहारे प्रथम विधवा पुनर्विवाह 25 दिसंबर, 1873 को सम्पन्न करवाया गया। इसके अलावा उन्होंने मजदूरों के लिए रात्रिकालीन स्कूल खोला ताकि दिन में काम करने वाले मजदूर रात में पढ़ भी सकते है। उन्होंने दलित-वंचितों के लिए अपने घर का कुआं खोल दिया था, यह उस समय की बहुत बड़ी घटना थी क्योंकि लोग उन्हें सार्वजनिक कुएं से पानी नहीं लेने देते थे।

पुणे में प्लेग फैला तो सावित्री बाई फुले 66 वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र डा. यशवंत के साथ पूरी मेहनत व तन-मन से रोगियों की सेवा में जुटी रही लेकिन दुर्भाग्य से सावित्री बाई फुले प्लेग का शिकार हो गई और 10 मार्च, 1897 को इस महान विभूति का निधन हो गया। वर्तमान में केन्द्र व अनेक राज्य सरकारों ने उनके किए गए अतुलनीय योगदान को सबके सामने उजागर किया है। और उनके निस्वार्थ मिशन को आदर्श मान कर व उससे प्रेरणा लेकर सावित्री बाई फुले के नाम पर स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय, सरकारी योजनाएं आदि शुरू किए जा रहे है, जिससे देश के दलित, पिछड़े,आदिवासी व वंचित समाज के लोगों को आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक सहायता भी मिल रही है। देश में महिला शिक्षा एवं सामाजिक स्वावलंबन की प्रणेता सावित्रीबाई फुले को शत-शत नमन। ●

## समाज में बढ़ती संवेदनहीनता क्यों?

# परवरिश पर सोचने का समय

बलदेव राज भारतीय
*स्तंभकार*

काशी कुष्ठ सेवा संघ के वृद्धाश्रम में बिताए उनके अंतिम दिन दर्द भरे थे। एक वायरल वीडियो में उन्होंने अपनी पीड़ा साझा करते हुए कहा था, 'मैंने अपनी पूरी जिंदगी अपने बच्चों के लिए लगाई, लेकिन आज वे मेरे लिए अजनबी बन गए हैं। मेरे पास सब कुछ था, लेकिन आज मैं अकेला हूं।'
यह बयान न केवल उनकी वेदना को प्रकट करता है, बल्कि संतान के संवेदनहीन रवैए पर भी चोट करता है।

जिस देश में श्री राम अपने पिता के एक वचन को निभाने के लिए सहर्ष वनवास स्वीकार कर लेते हैं, श्रवण कुमार अपने अंधे माता-पिता को बहंगी में बिठाकर चारों धाम की यात्रा करवाने ले जाते हैं। उसी देश में आज के समय में श्रीनाथ खंडेलवाल जैसे समृद्ध और उच्च कोटि के साहित्यकार को उसकी संतान वृद्धाश्रम में ठोकरें खाने के लिए छोड़ दे और जब उन्होंने गत 28 दिसंबर को प्राण त्यागे तो उन्हें मुखाग्नि देने का समय भी बेटे और बेटी के पास न हो तो, इसे विडंबना कहेंगे या फिर युग का प्रभाव? यह समाचार पढ़कर किसी का भी हृदय कांप जाए तो उनकी संतान की ऐसी क्या विवशता थी कि उन्हें उनका बुढ़ापा भारी पड़ गया। इस वाकये की वजह से फिल्म 'बागबान' याद आ गई। जिसमें एक पिता की पुस्तक छपने के बाद रॉयल्टी के लालच में उसके चारों बेटे फिर से पिता का सान्निध्य पाना चाहते थे। लेकिन इस घटना में तो 400 से अधिक पुस्तकें छपने और 80 करोड़ की संपत्ति अर्जित कर उसे संतान के नाम करने के बाद भी पिता को अपने अंतिम दिन वृद्धाश्रम में काटने पड़े।

लोग अक्सर कहते हैं कि कितना अभागा है वह पिता, जिसकी अर्थी को उसके अपने बेटे का कंधा भी न मिल पाया। जिसको बेटे के हाथ से मुखाग्नि भी न मिल पाई। परन्तु यहां अभागा पिता नहीं बल्कि वह बेटा और बेटी भी हैं, जो उसके अंतिम संस्कार के वक्त वहां अनुपस्थित थे। श्रीनाथ खंडेलवाल के बेटा-बेटी को अपनी भूल सुधार का कोई अवसर अब प्राप्त नहीं होगा। अब लोगों के समक्ष वे चाहे जितने भी बहाने बनाएं, लोग यही कहेंगे कि यही था जिसने अपने पिता को बुढ़ापे में वृद्धाश्रम में मरने के लिए छोड़ दिया और उसका अंतिम संस्कार करने भी नहीं गया। कहते हैं कि बेटी अक्सर पिता के हृदय के बहुत करीब होती है। यदि बेटा निकम्मा भी निकल आए तो भी बेटी माता-पिता का ध्यान-सम्मान करती है। दूसरे घर में होते हुए भी अपने माता-पिता की अधिकाधिक देखरेख करती है। परन्तु उक्त मामले में बेटी भी पाषाण-हृदय निकली- यह जानकर ठेस लगना स्वाभाविक है।

श्रीनाथ खंडेलवाल का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था, लेकिन उनका मन हमेशा से साहित्य की ओर झुका रहा। मात्र 15 वर्ष की आयु में लेखन शुरू किया और एक प्रतिष्ठित साहित्यकार के रूप में पहचान बनाई। शिव पुराण और मत्स्य पुराण जैसे ग्रंथों का उन्होंने हिंदी में अनुवाद किया। खंडेलवाल ने संस्कृत, असमिया, और बांग्ला में भी साहित्य सृजन किया। उनका जीवन साहित्य और ज्ञान को समर्पित था। वैभव और ख्याति के बीच, श्रीनाथ खंडेलवाल का निजी जीवन संघर्षों से भरा रहा। उन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ किया, लेकिन वही बच्चे उनके अंतिम दिनों में उनकी सबसे बड़ी पीड़ा बन गए। उनका बेटा एक सफल व्यवसायी और बेटी अधिवक्ता है। बावजूद

इसके, मार्च 2024 में उन्होंने अपने पिता को घर से निकाल दिया। करीब 80 करोड़ की संपत्ति के बावजूद उन्हें वृद्धाश्रम में रहना पड़ा। उनकी यह स्थिति हमें सोचने पर विवश करती है।

काशी कुष्ठ सेवा संघ के वृद्धाश्रम में बिताए उनके अंतिम दिन दर्द भरे थे। एक वायरल वीडियो में उन्होंने अपनी पीड़ा साझा करते हुए कहा था, 'मैंने अपनी पूरी जिंदगी अपने बच्चों के लिए लगाई, लेकिन आज वे मेरे लिए अजनबी बन गए हैं। मेरे पास सब कुछ था, लेकिन आज मैं अकेला हूं।'

यह बयान न केवल उनकी वेदना को प्रकट करता है, बल्कि संतान के संवेदनहीन रवैए पर भी चोट करता है।

गत 28 दिसंबर को उनकी तबीयत बिगड़ने पर जब अस्पताल से उनके बच्चों को सूचित किया गया, तो बेटे ने 'बाहर होने' का बहाना बना दिया और बेटी ने फोन तक नहीं उठाया। आखिरकार, एक सामाजिक कार्यकर्ता और उनके कुछ साथी इस समय अस्पताल में उनके साथ रहे। उन्होंने न केवल वृद्धाश्रम में श्रीनाथ का ध्यान रखा, बल्कि उनके निधन के बाद बनारस के मणिकर्णिका घाट पर उनके अंतिम संस्कार की व्यवस्था भी की। श्रीनाथ खंडेलवाल का जीवन और निधन समाज के समक्ष एक गंभीर सवाल उठाता है। यह घटना बताती है कि आधुनिकता और व्यस्तता के नाम पर हम अपने माता-पिता और बुजुर्गों को भुला रहे हैं। संपत्ति और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागते हुए, हम उन्हें अनदेखा कर रहे हैं जिन्होंने हमारे लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाया।

यह केवल एक परिवार की कहानी नहीं है, बल्कि समाज के व्यापक बदलाव का प्रतीक है। ऐसी घटनाएं हमें चेताती हैं कि अब रिश्तों और जिम्मेदारियों को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। नैतिक मूल्यों को पहचानने और अपनाने की सोच को दकियानूसी बताकर पल्ला झाड़ने के परिणाम भयंकर हो सकते हैं। इसलिए आवश्यकता अपने बच्चों को महंगे स्कूलों में पढ़ाकर उन्हें इंजीनियर, व्यवसायी, डॉक्टर या कुछ और बड़ा बनाने से पहले उन्हें संवेदनशील इंसान बनाने की है। हर माता पिता यही सोचता है कि उसका बच्चा किसी तरह कामयाब हो जाए, फिर उसका जीवन सुखी तो अपना भी सुखी। परन्तु श्रीनाथ खंडेलवाल का उदाहरण सामने है। उनके दोनों बच्चे कामयाबी की ट्रेन में सवार हैं, परन्तु इंसानियत को कहीं पीछे छोड़ आए। शायद उसी का खमियाजा श्रीनाथ जी को अंतिम समय में भुगतना पड़ा। ●

# शरजील की जज बहन के बहाने

» गौतम चौधरी

देशद्रोह के आरोप में विगत कई वर्षों से जेल में बंद, शरजील इमाम की बहन फरहा निशात, बिहार लोक सेवा आयोग की 32वीं बिहार न्यायिक सेवा परीक्षा पास कर जज बन गई हैं। यह खबर थोड़ी बहुत सुर्खियां तो बटोरी लेकिन इस पर चर्चा बहुत कम हुई। इस खबर की खास बात यह है कि एक ओर शरजील इमाम पर देश के संविधान को चुनौती देने का आरोप है, तो दूसरी ओर उसकी बहन फरहा देश के संविधान की रक्षा का प्रण ले रही हैं। यह एक परिवार में दो चिंतन को रेखांकित नहीं करता, अपितु आधुनिक भारतीय समावेशी राष्ट्रवाद को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार की प्रशासनिक उदारता दुनिया में शायद ही कहीं देखने को मिलती है।

दअरसल, दिल्ली दंगों के आरोपी शरजील इमाम की छोटी बहन फरहा निशात, बिहार न्यायिक सेवा परीक्षा पास कर जज बन गई हैं। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार को दिया है। इस घटना के बाद शरजील इमाम का परिवार एक बर फिर सुर्खियों में आ गया है। बता दें कि फरहा से जब शरजील को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि हमें अपनी न्यायिक व्यवस्था पर पूरा भरोसा है, मुझे उम्मीद है कि इसका निपटारा भी जल्द हो जाएगा। फरहा यहां साफ तौर पर भारतीय संविधान और यहां की न्यायिक व्यवस्था पर विश्वार व्यक्त करती दिख रही हैं।

यह साधारण बात नहीं है। दुनिया के कई लोकतांत्रिक देशों में भी देशद्रोह के आरोपी के परिवार को बेहद शक की निगाह से देखा जाता है लेकिन भारत में ऐसी बात अभी तक देखने को नहीं मिली है। मसलन, जिस किसी ने भी देश की एकता और अखंडता को चुनौती दी, उसके खिलाफ तो कानून के अनुसार कार्रवाई हुई, लेकिन उसके परिवार को कभी शासन या प्रशासन के द्वारा पूर्वाग्रही रवैया अपनाते हुए नाहक तंग नहीं गया। यदि कुछ उदाहरण सामने आए भी हैं तो देश की न्यायिक व्यवस्था ने उन्हें भरसक न्याय दिलाने का प्रयास किया। इमाम की बहन इस बात से वाकफ हैं और यही कारण है कि वह देश की कानून व्यवस्था पर विश्वास व्यक्त कर रही हैं।

शरजील इमाम के जेल जाने के लंबे समय बाद उनके परिवार को फरहा निशात के जज बनने से खुशी मिली है। 28 वर्षीय फरहा निशात ने कड़ी मेहनत से ये मुकाम हासिल किया है। शरजील के जेल जाने के बाद उनके परिवार के लिए यह पहला खुशी का मौका है। एक तरफ जहां फरहा की सफलता पर लोग उन्हें बधाई दे रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ शरजील के छोटे भाई मुज्जम्मिल इमाम के एक सोशल मीडिया पोस्ट ने भी सबका ध्यान खींचा। दरअसल, मुज्जम्मिल ने अपनी पोस्ट में लिखा, ''जिंदगी का यही फलसफा है। एक भाई जुल्म के खिलाफ इंसाफ की लड़ाई लड़ने के लिए जेल में है तो दूसरी तरफ बहन जुल्म के खिलाफ इंसाफ देने के लिए जज की कुर्सी पर बैठेंगी। फरहा निशात ने 32वीं बिहार

न्यायिक सेवा परीक्षा पास की है। उम्मीद है कि अपने कार्यकाल में तुम अपने फैसलों से किसी बेगुनाह के साथ जुल्म नहीं होने दोगी।''

फरहा निशात ने अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार को दिया। उन्होंने कहा कि सेल्फ स्टडी और परिवार के मार्गदर्शन से उन्होंने मुख्य परीक्षा पास की है, जबकि इंटरव्यू के तैयारी की लिए उन्होंने कुछ संस्थानों की मदद ली। फरहा को किताबें पढ़ना, बच्चों को पढ़ाना और सीरियल देखना पसंद है। उन्होंने कहा कि वे जल्द ही न्यायपूर्ण फैसले देकर समाज की सेवा करना चाहती हैं।

दूसरी ओर, शरजिल इमाम को दखें। इमाम, कथित तौर पर राष्ट्र विरोधी बयानबाजी करने के आरोप में जनवरी, 2020 में जहानाबाद से गिरफ्तार किया गया था। उन दिनों शरजील इमाम का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। उस वीडियों में इमाम, कथित तौर पर देश विरोधी बयानबाजी करते नजर आ रहे थे। पुलिस के मुताबिक वायरल वीडियो में शरजील इमाम भाषण देते नजर आ रहे हैं। पुलिस के अनुसार, ''प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि यह वीडियो 16 जनवरी को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में एक सार्वजनिक भाषण के दौरान रिकॉर्ड की गई थी। वीडियो में शरजील को राष्ट्र विरोधी बयानबाजी करते हुए देखा जा सकता है। इसमें इमाम, उत्तर-पूर्व भारत को शेष भारत से काटने की बात करते नजर आ रहे हैं।'' बता दें कि शरजील इमाम दिल्ली के शाहीन बाग में चल रहे विरोध-प्रदर्शन के शुरूआती दौर में उसके आयोजकों में से भी एक थे।

जेएनयू छात्र शरजील इमाम पर आपराधिक साजिश, राष्ट्रद्रोह और धर्म के आधार पर समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने के आरोप लगाए गए हैं। दिल्ली पुलिस ने इमाम पर भारतीय दंड संहिता की धारा 124 ए, 153 ए और 505 के तहत मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार किया था। असम पुलिस ने भी शरजील के भाषणों को लेकर उसके खिलाफ आतंकवाद रोधी कानून यूएपीए के तहत एक मामला दर्ज किया था।

शरजील इमाम बिहार के अभिजात्य मुस्लिम परिवार से अपना तालुकात रखते हैं। शरजील के पिता अकबर इमाम बिहार की सत्तारूढ़ पार्टी जनता दल यूनाइटेल के नेता थे। शरजील इमाम जवाहरलाल नेहरू विश्विद्यालय में मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री के छात्र हैं। शरजील ने आईआईटी मुंबई से कंप्यूटर साईंस में ग्रेजुएट कर रखा है।

कुल मिलाकर हम देखते हैं कि भारत एक समावेशी राष्ट्रवादी चिंतन का देश है। यहां यदि छोटी-मोटी घटनाओं को छोड़ दें तो कोई बड़ा विवाद देखने को नहीं मिलता है। ●

हेमेन्द्र क्षीरसागर
*पत्रकार व लेखक*

# जन-जन के गौरी भाऊ

शिक्षा, कृषि, श्रमिक और युवाओं, महिलाओं, आमजनों की समस्याओं से अच्छी तरह वाकिफ आम आदमी की तरह सहज, सरल-शैली, व्यक्तित्व व कृत्तिव और अस्तित्व। जन-रागात्मकता से युक्त ठेठ देशी अंदाज में अपनी बात रखने वाले पूर्व कैबिनेट मंत्री, पूर्व राज्य पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग अध्यक्ष, पूर्व सांसद, पूर्व विधायक गौरीशंकर बिसेन का बचपन से ही गांव की माटी व शहरों की गलियों से गहरा नाता रहा। शोषित, वंचित और पीड़ितों को ठगते निरंकुश-तंत्र के खिलाफ अपनाते बगावती तेवर ने ही अंतस में विद्यमान नेतृत्व क्षमता को जगाने में मुख्य भूमिका निभाई। सही मायनों में ये छोटे-छोटे लोगों के बडे-बडे कामों को अमलीजामा पहनाने के कारण ही आम लोगों के खास हैं। अपने धुन के पक्के जन-जन के गौरी भाऊ ने सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास और सबका विश्वास अर्जित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कालजयी, अटल पथ के फक्कड़ पथिक, गौरी भाऊ राजनैतिक अस्पृश्यता के दौर में सर्व समाज और सर्वदल में सर्वग्राही बने हुए हैं। तभी तो सभी सर्वमन से कहते हैं, जननायक, गौरी भाऊ यथा दूजा कोई नहीं।

**शुचिता की राजनीति**

फलस्वरूप, साफगोई नीति, नैतिकता और शुचिता की राजनीति के अजातशत्रु गौरी भाऊ को वर्ष 2008 में प्रदेश के मुख्यमत्री शिवराज सिंह चौहान ने हर घर नल, हर घर जल और ब्याज जीरो, किसान हीरो की परणिति के बोध से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी के साथ-साथ सहकारिता विभाग के मंत्री का दायित्व सौंपा था। इस जवाबदेही को जनहित में सफलता पूर्वक निभाने के उपरांत आप 2013 में कृषक कल्याण व कृषि विकास मंत्री के तौर पर खेती को लाभ का धंधा बनाने के अभिप्राय जी-जान से जुटे रहे। परिलच्छित, देश के राष्ट्रपति ने प्रदेश को पांचवी बार ह्यकृषि कर्मण अवार्डह्य से सम्मानित किया। अभिभूत देश में प्रदेश की कृषि की विकास दर क्षितिज पर आसिन होना श्री बिसेन के लक्ष्यभेदी अभियान का प्रतिफल हैं। 2023 में मां नर्मदे की सेवा करने का अवसर नर्मदा घाटी विकास मंत्री का दायित्व उन्हें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सौंपा था।

**जनसरोकार अविरल**

अपने कार्यकाल के दौरान गौरीशंकर बिसेन ने एक स्वप्नदृष्टा की सराहनीय भूमिका निभाते हुए जिले और प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। अविरल, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, सिंचाई, पेयजल, आवागमन, ब्रॉडगेज व्यपवर्तन, समेत अनेकानेक ग्रामीण विकास और नगरीय विकास के कार्यों में उन्होंने अपनी अनूठी छाप छोड़ी। बतौर बालाघाट में मेडिकल कॉलेज की स्वीकृति, बालाघाट नगर और लेडेंझरी में सीएम राइस स्कूल की स्थापना, महापुरुषों व वीर-वीरांगना की आदमकद प्रतिमाएं, मुरझड, वारासिवनी में कृषि महा-विद्यालय, शासकीय कमला नेहरू कन्या महा-विद्यालय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम, बालाघाट नगर और लालबर्रा क्षेत्र के हर घर में नल, 3 किलोमीटर पर हाईस्कूल और 5 किलोमीटर में हायर सेकेंडरी स्कूल, लालबर्रा में स्नातक महाविद्यालय, गंगा नदी पर छिंदलई, ददिया और कुम्हारी घाट पर उच्च स्तरीय पुल का निर्माण, जागपुर घाट और कनकी घाट पर प्रस्तावित उच्च स्तरीय पुल, बालाघाट जिला चिकित्सालय में ट्रामा सेंटर की स्थापना, ऑक्सीजन प्लांट, सीटी स्कैन सहित अन्य उपकरणों की उपलब्धता, बिस्तरों का विस्ता-रीकरण, जगह-जगह उप स्वास्थ्य केंद्र और प्राथमिक स्वास्थ केंद्रों की स्थापना, खेल

मैदान, जलाशयों का निर्माण, सरेखा, गर्रा, भटेरा चौकी रेलवे क्रॉसिंग पर रेलवे ब्रिज निर्माण की स्वीकृति सहित प्रत्येक गांव को दोनों ओर से पक्की सड़क से जोड़ने जैसे जनसरोकार की गाथा अविरल है।

**जनसेवा धेय्य**

लिहाजा, 01 जनवरी 1952 को बालाघाट जिले के ग्राम लेंडेझरी में जन्में मध्यमवर्गीय किसान चतुर्भुज बिसेन और माता सुशिला बिसेन के सुपुत्र गौरीशंकर बिसेन ने एमएससी की उपाधि विशेष श्रेणी में हासिल की। शासकीय सेवा को न चुनते हुए, जनसेवा को अपना धेय्य माना। चैतन्य, 1970 के दशक में उत्पन्न राजनीतिक हालातों में जनसंघ और बाबू जयप्रकाश नारायण के विचारों से प्रभावित होकर समग्र क्रांति जनांदोलन में अपनी शक्ति को निरंकुशता के खिलाफ प्रदर्शन में झोंक दिया। समकालिन जनप्रिय इस युवा संघर्षशील नेता ने नेतृत्व को अपनी प्रतिभा का एहसास कराया। सिलसिलेवार, गौरी भाऊ अपने कुशल उत्तरदायित्व निर्वहन, उत्कृष्ट कार्य व मिलनसारिता से मान्य नेतृत्व को प्राप्त करते हुए लगातार फतेह हासिल की। सन 1985, 1990, 1993, 2003, 2008, 2013 और 2018 में बालाघाट विधानसभा से विधायक चुने गए। 1998 एवं 2004 में आपने बालाघाट लोकसभा क्षेत्र सहित विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों का सर्वस्पर्शी, अद्वितीय प्रतिनिधित्व किया।

**योगदान अविस्मरणीय**

अगुवाई में बालाघाट जिले ही नहीं अपितु सारे सुबे में जन कल्याण और विकास मूलक आयामों की बयार बहीं, जिसकी गाथा अगाथ हैं। वहीं विभिन्न संगठनों के दायित्व को निभाते हुए जनता-जर्नादन की समस्याओं को प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर उठाकर अपनी अद्भुत संगठन क्षमता का विलक्षण परिचय भी दिया। पदचिन्हों पर आरूढ़ आपकी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा बिसेन ने दो बार जिला पंचायत बालाघाट के अध्यक्ष के दायित्व को अतुलनीय निभाया। अनुकरणीय उनकी पुत्री पायल बिसेन और मौसम बिसेन जनकल्याण के महाभियान में प्राण प्राण से जुटी हुई है। अभिष्ठ, प्रदेश के चतुर्दिक विकास के अभिप्राय गौरीशंकर बिसेन सांगोपांग भाव से गत पांच दशक से प्रयासरत हैं। ऐसे मर्मस्पर्शी, प्रयोगधर्मी और कर्मयोगी का राष्ट्र, प्रदेश, जिला को समर्पित अभिन्न योगदान सदा-सर्वदा अविस्मरणीय रहेगा। ●

कुमार कृष्णन
*वरिष्ठ पत्रकार*

# 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम'

'रघुपति राघव राजा राम' गांधी का प्रिय भजन था। यह भजन हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का भी हिस्सा था। गांधी की प्रार्थना सभाओं में 'रघुपति राघव राजा राम' मुख्य आकर्षण का केंद्र था। भजन का इस्तेमाल पहली बार गांधी ने 1930 में दांडी मार्च के दौरान दांडी तक की 241 मील की यात्रा के दौरान एक नए कानून का विरोध करने के लिए किया था, जिसे अंग्रेजों ने भारतीयों को नमक बनाने या बेचने से प्रतिबंधित करने के लिए बनाया था। इस आंदोलन के दौरान गांधी ने 'रघुपति राघव राजा राम' को लोकप्रिय बनाया। मार्च करने वालों ने अपने आत्मविश्वास को बनाए रखने के लिए इसे गाया था। इसने करोड़ों भारतीयों को एक दौर में राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित किया था।

अब बिहार में इसी भजन पर विवाद छिड़ गया है। पूर्व प्रधान मंत्री

अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में पटना में आयोजित एक कार्यक्रम में उस समय बवाल हो गया जब स्थानीय लोक गायिका ने भजन 'रघुपति राघव राजा राम' की प्रस्तुति दी और 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' की पंक्तियां गाईं। जैसे ही लोक गायिका देवी ने ये पंक्तियां गाईं, दर्शकों के एक वर्ग ने विरोध किया और नारेबाजी शुरू कर दी। मामला बढ़ने पर गायिका देवी ने मंच से माफी मांगी। उन्हें माफी मांगने को भी कहा गया।

उन्होंने कहा कि अगर मैंने किसी की भावना को आहत किया है तो क्षमा चाहती हूं। इसके बाद वे कार्यक्रम से चलीं गईं। उन्होंने बाद में मीडिया से कहा कि मानवता सबसे बड़ा धर्म है। हिंदू धर्म सबसे बड़ा है,जो सभी धर्मों को अपने में समाहित करता है। इस दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे भी मौजूद थे जो स्थिति को संभालने के लिए आगे आए। वह लोक गायिका को मंच से उतारते भी दिखे। गायिका के माफी मांगने के बाद कार्यक्रम स्थल पर 'जय श्री राम' के नारे गूंज उठे। अश्विनी चौबे ने भी 'जय श्री राम' की हुंकार भरी।

यह घटना 'मैं अटल रहूंगा' शीर्षक वाले कार्यक्रम ( जो अटल जी की जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया था ) में हुई। कार्यक्रम में चौबे के अलावा डॉ. सीपी ठाकुर, संजय पासवान भी मौजूद थे।

मूल रूप से उपरोक्त भजन संत लक्ष्मण आचार्य का है जो इस प्रकार था-

*रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम*

*सुन्दर विग्रह मेघश्याम, गंगा तुलसी शालिग्राम।*

गांधी ने इसे बदल कर राष्ट्रीय आंदोलन की जरूरतों के अनुरूप बनाया। उन्हें हिन्दू-मुस्लिम एकता और राष्ट्रीय सहमति की जरूरत थी। गांधी ने मूल भजन की दूसरी पंक्ति को बदल कर -

*ईश्वर-अल्ला तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान* कर दिया। गाँधी को सांस्कृतिक-वैचारिक तौर पर ईश्वर और अल्ला को एक बनाने और देश में सन्मति विकसित करने की गर्ज थी। उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष में राष्ट्रीय एकता की जरूरत थी।दरअसल उन्हें एक नया राष्ट्रवाद विकसित करने की फिक्र थी। इस दिशा में अपनी समझ के अनुरूप वह कोशिश कर रहे थे।

हम लोगों ने यह भजन स्कूलों में प्रार्थना के तौर पर गाया। बिस्मिल्ला खान ने इस धुन को अपनी शहनाई से संवारा ।

कुछ चीजें विरासत की होती हैं। उसके सहारे हम एक विरासत संभाल रहे होते हैं-जैसे वन्दे मातरम गीत। बंकिम बाबू के उपन्यास आनंदमठ का यह गीत संन्यासी दल के मुस्लिम विरोधी अभियान का प्रस्थान गीत था। लेकिन यह राष्ट्रीय आंदोलन का गीत और नारा बन गया। इस नाम से राष्ट्रीय संघर्ष की पत्रिका निकली। वन्दे मातरम् का नारा लगाते हुए अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राण उत्सर्ग किये। इसमें से अधिकांश उसकी पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ थे। अब आज हम अपनी विरासत में जब वन्दे मातरम् को लेते हैं, तो आनंदमठ के वन्दे मातरम् को नहीं, स्वतंत्रता सेनानियों के वन्दे मातरम् को लेते हैं। उसी प्रकार रघुपति राघव राजा राम का भजन अब संत लक्ष्मण आचार्य का नहीं, गांधी का भजन बन चुका है और यह संप्रदाय विशेष का नहीं, राष्ट्रीय आंदोलन का गान बन चुका है। इसमें गांधी, उनका संघर्ष और राष्ट्रीय आंदोलन की स्मृतियां समाहित हैं

इसका राम हिन्दू से बढ़ कर भारतीय ही नहीं वैश्विक बन जाता है। इसी भाव को इकबाल ने राम को इमामे हिन्द कह कर व्यक्त किया था।

समारोह में जो उन्मादी भीड़ इस भजन के विरोध में उठ खड़ी हुई वह हमारे देश-समाज में बढ़ रही फिरकापरस्ती, नफरत और तंगदिली की भावना को अभिव्यक्त कर रही थी। यह भावना कई स्तरों पर विकसित हो रही है। लोग अधिक असिहष्णु हो रहे हैं। ऐसे लोगों की समझ यही होती है कि हम सही हैं और दूसरे गलत। यह भाव इसलिए पनप रहा है कि ऐसी चीजें हमारे सामाजिक जीवन में फैलाई जा रही हैं। हम खंडित इतिहास संस्कृति और परंपरा को बढ़ावा दे रहे हैं,जबकि परंपरा और संस्कृति एक सिलसिले में होती है। सिलसिले से निकाल कर जैसे ही हम किसी एक को रखते हैं, वह मर जाती है। दरअसल जो सभ्यता जितनी पुरानी होती हैं, उसकी जटिलताएं भी उतनी ही अधिक होती हैं।स्वयं जब हिन्दू परंपरा की बात करेंगे तो उसमें सिंधु सभ्यता, वैदिक सभ्यता, उपनिषदों, जैनियों, बौद्धों, लोकायतिकों की दर्शन-परंपरा से लेकर सूफियों और भक्ति-आंदोलन जैसी अनेक सांस्कृतिक सक्रियताएं समाहित हैं। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन में ही जानें कितने तरह के विचार और बोध समाहित थे। गांधी भी थे और सावरकर अंबेडकर, सुभाष और भगत सिंह जैसे परस्पर विरोधी मतों के लोग भी।

भारत को अनेक तरह और प्रवृत्तियों के लोगों ने मिल-जुल कर गढ़ा। इसमें दार्शनिक, कवि, राजनेता, सब थे लेकिन इसके सबसे महत्वपूर्ण शिल्पकार यहाँ के लोग रहे हैं। किसान, मजदूर,कारीगर रहे हैं। आधुनिक भारत की ही बात करें तो राजा राममोहन राय, विवियन डेरोजिओ, ज्योतिबा बा फुले, सावित्री बाई फुले, रमाबाई से लेकर टैगोर, गांधी, नेहरू जैसे अब तक के हजारों लोगों ने इसे संवारने की कोशिश की है। इन सबके महत्व को हमें स्वीकार करना होगा।

लोग गांधी के विचारों से सहमत और असहमत हो सकते हैं। पर गांधी के विचारों को व्यक्त करने से रोकना, कम से कम बिहार में तो स्वीकार नहीं होना चाहिए। इस घटनाक्रम में वाल्टेयर का कथन याद आता है किञ्जरूरी नहीं है कि मैं आपकी बात से सहमत रहूं, लेकिन मैं आपके बोलने के अधिकार की मरते दम तक रक्षा करुंगा।

इस मामले पर कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी भी काफी नाराज नजर आईं। उन्होंने घटनाक्रम का वीडियो शेयर करते हुए लिखा, 'बापू का प्रिय भजन गाने पर भाजपा नेताओं ने लोकगायिका देवी जी को माफी मांगने पर मजबूर किया। 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम' उनसे नहीं सुना गया। दुनिया को दिखाने के लिए बापू को फूल चढ़ाते हैं लेकिन असल में उनके प्रति कोई आदर नहीं है। दिखावे के लिए बाबासाहेब अंबेडकर का नाम लेते हैं, लेकिन असल में उनका अपमान करते हैं। भाजपा को हमारी सहिष्णु और समावेशी संस्कृति-परंपरा से इतनी नफरत है कि वे हमारे महापुरुषों को बार-बार अपमानित करते हैं। ●

# ग्राम्य लोक-संस्कृति में भुर्री की परंपरा

▸▸प्रिया देवांगन 'प्रियू'
*लेखिका*

किसी कवि ने क्या खूब कहा है -

'गांव की माटी को सूंघो,
गंध को एक नाम दे दो।'
एक मुस्कुराती सुबह दे दो,
एक सुहानी शाम दे दो।।'

उक्त चरितार्थ पंक्तियों के संबंध में कुछ इस तरह की बातें कही जा सकती हैं कि तीन पहर का दिन और चार पहर की रात का सुहाना संगम छत्तीसगढ़ के ग्राम्य अंचलों में दिखता है। यहां के लोग पूरे बारहों महीने पसीनेतर कमाई से कभी नहीं घबराते। तप्त ऋतु की भीषण गर्मी हो, पावस की मूसलाधार बारिश हो, चाहे शीत की कड़कड़ाती ठंड हो, सब एक बराबर होते हैं इनके लिए। गर्मी और बारिश का सामना करते हैं और ठंड से वे तनिक नहीं डरते। हर स्थिति में अपने भीतर उष्णता बनाए रखते हैं; चाहे खानपान, पहनावा या फिर चाहे और कोई बाह्य स्त्रोत जैसे- चुल्हे की आग, गोरसी की खरखराती धीमी आंच या फिर पैरा या झिटका की दहकती आंच अर्थात भुर्री।

**भुर्री तापना एक परम्परा :**
---------------------------

भुर्री, यहां के लोगों के आग तापने की परंपरा है। अत्यधिक ठंड पड़ने पर ग्रामीण अंचल के लोग छोटी-छोटी लकड़ियां (चिल्फा) इकट्ठा कर गोरसी या चूल्हे में जलाकर धीमी-धीमी आँच से शरीर की सिकाई करते हैं और शरीर में गर्माहट पैदा करते हैं। यह परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। गांव में प्रायः बड़े-बुजुर्ग सूर्योदय से पहले ही जब चहुंओर शीत की बूंदें बरसने लगती हैं; सुबह उठ कर चूल्हे या गोरसी में छेना, चिल्फा या फिर कोयला डालकर आग सुलगाते हैं; जलाते हैं। आग सूर्य के रंग जैसा प्रतीत होती है, मानो सूर्य के बीच की चमकती हुई आभा चूल्हे में उतर कर मन को प्रफुल्लित करती हुई देह की सिकाई कर रही हो।

आग के अंगारे मद्धम-मद्धम दगते हैं। धीमी-धीमी आंच पड़ने पर बड़ा सुकून मिलता है। ठंड के दिनों में बड़े बुजुर्गों के अलावा बच्चे, युवा व बुजुर्ग सभी साथ में बैठकर भुर्री का आनंद लेते हैं।

**भुर्री देती नसीहतें :**
--------------------

गांव का रहन-सहन देखकर मन आनंदित हो उठता है। यहाँ बात भुर्री की है, तो मुझे बताते हुए खुशी हो रही है कि सिर्फ एक परिवार के सदस्य ही नहीं बल्कि पास-पड़ोस के लोग भुर्री का हिस्सा बनते हैं। इससे लोगों में प्रेम-भाव बना रहता है। आज भी लोग गाँव में एकत्रित होते हैं और अपने-अपने जीवन की बातें एक-दूसरे से साझा कर ठहाके लगाते हैं। भुर्री तापते लोगों में भ्रातृत्व दिखता है, एकता नजर आती है।

लोग खेत-खलिहान से आकर शाम के समय जल्दी से भोजन कर चौराहे या फिर किसी के घर-आंगन में बैठ भुर्री का आनंद लेते हैं। छोटे-छोटे बच्चे, बड़े बुजुर्गों की बातें कान लगाकर बहुत ध्यान से सुनते हैं और आनंद लेते हैं। लोगों के बीच घर-परिवार एवं खेत-खलिहान की बातें होती हैं। विचारों का आदान-प्रदान होता है। एक-दूसरे का शोर-संदेश मिलता है। भुर्री लोगों में परस्पर सामंजस्य स्थापित करती है।

उक्त बातें कहना जरा भी गलत नहीं होगा कि भुर्री लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने की सीख देती है। गाँव में कोई भी व्यक्ति अकेले भुर्री का लुत्फ उठाते नजर नहीं आएगा, कम से कम पाँचझ्छः लोग दिखेंगे ही। बड़े-बुजुर्गों का ख्याल रखते हुए कई बच्चे छोटीझ्छोटी लकड़ियां इकट्ठा करते हैं, ताकि शाम को आग जला कर पास बैठ सकें। भुर्री तापने के लिए बच्चे बहुत ही उतावले होते हैं। होंगे भी क्यों नहीं; आखिर उन्हें साथ बैठने और बातें सुनने का आनंद जो मिलता है।

हमारे छत्तीसगढ़ के देहात-अंचल में

गीत , कविता, कहानी-कंथली व लोकोक्ति-मुहावरे इन भुर्री तापते लोगों से सुनने को मिलते हैं। बड़े बुजुर्ग बातों ही बातों में बहुत से मुहावरे वगैरह प्रयोग करते हैं; जिससे बच्चों को आसानी से सीखने को मिलता है। अच्छी-अच्छी सीख घर के बड़े लोगों के पास बैठने से ही मिलती है।

कहीं-कहीं लोगों की तैयार की गई भुर्री से बेजुबानों को भी लाभ मिल जाता है। आग खपने के बाद जब लोग वहां से उठकर चले जाते हैं तब कुत्ते, बिल्ली या गाय आकर बैठ जाते हैं। इससे उन्हें भी ठंडी से राहत मिलती है।

हमारे छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में भुर्री के फायदे लोग बहुत अच्छे से जानते हैं। आज भी बहुतायत तो नहीं, लेकिन भुर्री का उपयोग किया ही जाता है। स्वेटर, शॉल की उन्हें ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती, शाम और सुबह जरूर भुर्री ताप कर ठंड भगाते हैं।

भुर्री को सहेजने की जरूरत :

------------------------------

आजकल गांवों में भी लकड़ी, छेना या कोयला सहज सुलभ उपलब्ध नहीं हो पाता। कारण है पेड़-पौधों की कटाई, पशुपालन का कम होना, खेतों में मकान बनना इत्यादि। इसका असर ज्यादातर ग्रामीण परिवेश में देखने को मिलता है। लोग अब अपनी सुख-सुविधा के चलते शहरों की ओर बढ़ते जा रहे हैं। गांव-देहात छूटता जा रहा है। कुछ सालों बाद ऐसा होगा कि गांवों में सिर्फ बुजुर्ग ही दिखाई देंगे; युवावर्ग नहीं। जो लोग भुर्री के बारे में जानते हैं, वे शहरों में गोरसी बनाकर इसका उपयोग करते हैं, करेंगे क्यों नहीं; आखिर अपने गांव की मिट्टी में पलेझ्र बढ़े हैं।

आजकल भुर्री तापने की परंपरा ही सिमट कर रह गई है। स्वेटर, शॉल व कम्बल ने इनकी जगह ले ली है पर मेरा मानना है कि क्यों न हम शहरों में भी रह कर भुर्री का उपयोग करें, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी भी इसे जाने; समझे और इससे लाभान्वित हो। इससे हम अपनी मिट्टी से जुड़े रहेंगे। मुझे एक कवि की कुछ पंक्तियां याद आ रही हैं-

'सौंधी महक मिट्टी की,
वो पगडंडी वाले गांव।
ताल-तलैया स्वच्छ पानी,
वो वट-पीपल की छांव।।
तुलसी-चौरा आंगन का,
वो गौरैये का चींव-चांव।
खोर-गली बिजली खंभा
वो घर-द्वार ठांव-ठांव।।'

# अपनों के ही निशाने पर कांग्रेस

रमेश सर्राफ धमोरा
*लेखक एवं स्तंभकार*

कांग्रेस पार्टी इन दिनों अपने ही साथी दलों के निशाने पर है। भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों के संयुक्त इंडिया गठबंधन में शामिल विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने कांग्रेस पार्टी से इंडिया गठबंधन का नेतृत्व वापस लेने की मांग की है। इंडिया गठबंधन में शामिल बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी खुले आम कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व पर सवाल उठा रही है। उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने प्रेस कांफ्रेंस करके कांग्रेस पार्टी को इंडिया गठबंधन के नेता पद से हटाने की मांग की हैं। ममता बनर्जी की मांग के समर्थन में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने भी अपनी सहमति जताई है। इससे इंडिया गठबंधन की स्थिति लगातार कमजोर हो रही है।

जून 2023 में 26 विपक्षी दलों के साथ बना इंडिया गठबंधन अब टूट के कगार पर खड़ा है। लोकसभा चुनाव में मिली हार और उसके बाद हरियाणा व महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में हुई पराजय ने इस गठबंधन को कमजोर कर दिया है। इसी के चलते कांग्रेस के सहयोगी दल ही उसकी नेतृत्व क्षमता पर सवाल उठाकर अलग राह पकड़ने के संकेत दे रहे हैं। हाल ही में दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी ने तो कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से बाहर निकलवाने तक की धमकी दे दी है। कांग्रेस द्वारा दिल्ली विधानसभा चुनाव अकेले लड़ने की घोषणा के बाद से ही आम आदमी पार्टी कांग्रेस से खासी नाराज नजर आ रही है। पार्टी नेताओं का कहना है कि कांग्रेस जिस तरह से चुनाव लड़ रही है उससे भाजपा को लाभ मिल रहा है। कांग्रेस नेता अजय माकन व संदीप दीक्षित के बयान विपक्ष को कमजोर करने के लिए भाजपा के कहने पर दिए जा रहे हैं। समाजवादी पार्टी, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद चंद पवार), नेशनल कांफ्रेंस तो खुलकर कांग्रेस की मुखालफत करने लगी है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस अपनी जीत तय मानकर आम आदमी पार्टी से गठबंधन करने से इनकार कर दिया था। जिसके चलते आम आदमी पार्टी ने कई सीटों पर अकेले ही चुनाव लड़कर 1.8 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे। जबकि हरियाणा में कांग्रेस को 39.34 प्रतिशत वोट व भाजपा को 39.94 प्रतिशत वोट मिले थे। यदि हरियाणा में कांग्रेस आम आदमी पार्टी से समझौता करके चुनाव लड़ती तो निश्चय ही सरकार

बन सकती थी। मगर कांग्रेस ने अवसर गवां दिया और वहां भाजपा ने आसानी से तीसरी बार पहले से भी अधिक बहुमत से सरकार बना ली। उत्तर प्रदेश विधानसभा के उपचुनाव में तो समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के लिए एक भी सीट नहीं छोड़ी थी। जबकि लोकसभा चुनाव कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने मिलकर ही लड़ा था।

महाराष्ट्र में कांग्रेस नीत महा विकास अघाड़ी की करारी हार होने के बाद शिवसेना (यूबीटी) ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधते हुए कहा था कि कांग्रेस ने हरियाणा में आप और समाजवादी पार्टी को सीट ना देकर गलती की थी। पार्टी के मुखपत्र सामना में भी लिखा गया कि कांग्रेस नेताओं के अति आत्मविश्वास और घमंड ने हरियाणा में हार के लिए भूमिका निभाई। पार्टी नेता संजय राउत ने तो यहां तक कह दिया कि कांग्रेस को लगने लगा था कि वह अकेले ही जीत सकती है। इसलिए किसी को भी सत्ता में भागीदार बनाना उचित नहीं समझा था।

पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 99 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। कांग्रेस कुल 329 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। जिसमें से 145 सीटों पर बिना किसी गठबंधन की अकेले चुनाव लड़ी थी। जिसमें कांग्रेस 37 सीटों पर चुनाव जीती थी। कांग्रेस का बिना किसी दल से गठबंधन में जीत का रेशियो 25.52 प्रतिशत रहा था। जबकि कांग्रेस 184 सीटों पर साथी दलों से गठबंधन करके चुनाव लड़ी थी। इसमें कांग्रेस ने 62 सीट जीती थी और जीत का रेशियो 33.75 प्रतिशत रहा था। इस तरह से देखे तो कांग्रेस पार्टी को अकेले चुनाव लड़ने की बजाय गठबंधन साथियों की बदौलत बड़ी जीत हासिल हुई थी। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 13 करोड़ 67 लाख 59 हजार 64 यानी 21.29 प्रतिशत वोट मिले थे। गठबंधन करने के कारण 2019 की तुलना में 2024 में कांग्रेस को 1.91 प्रतिशत अधिक वोट मिले थे।

कांग्रेस पार्टी ने पंजाब, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, गोवा, कर्नाटक, लक्षद्वीप, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, उड़ीसा, तेलंगाना व पश्चिम बंगाल में अपने बूते चुनाव लड़ा था। जबकि बिहार, गुजरात हरियाणा झारखंड, केरल, महाराष्ट्र, पांडिचेरी, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश में गठबंधन करके चुनाव लड़ा था। अंडमान निकोबार दीप समूह, आंध्र प्रदेश, दादरा नगर हवेली व दमन दीव, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, मध्य प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तराखंड ऐसे प्रदेश है जहां लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का खाता भी नहीं खुल सका था।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में हार के बाद कांग्रेस को सबसे बड़ा झटका महाराष्ट्र में लगा जहां उनकी सीटे 44 से घटकर 16 रह गई। महाराष्ट्र में कांग्रेस शिवसेना (यूबीटी) व राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के साथ महाविकास अघाड़ी बनाकर चुनाव मैदान में उतरी थी। वहां कांग्रेस सबसे अधिक 101 सीटों पर चुनाव लड़ी जिसमें महज 16 सीट ही जीत पाई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 80 लाख 20 हजार 921 वोट मिले जो कुल मतदान का 12. 42 प्रतिशत थे। महाराष्ट्र में कांग्रेस की जीत का स्ट्राइक रेट 15.38 प्रतिशत ही रहा।

संसद का शीतकालीन सत्र का समापन हो चुका है। जिसमें अधिकांश समय कांग्रेस ने अदानी मुद्दे को लेकर संसद नहीं चलने दी। इससे संसद का कार्य पूरी तरह प्रभावित रहा। इसको लेकर भी कांग्रेस की सहयोगी तृणमूल कांग्रेस, सपा ने कांग्रेस को घेरते हुये आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर बहस नहीं होने देना चाहती है तथा सिर्फ अदानी मुद्दे को ही जिंदा रखे हुए हैं। यदि संसद चलती तो कई तरह के मुद्दों पर सरकार को घेरा जा सकता था।

इंडिया अलायंस में जिस तरह की खटपट वर्तमान समय में चलने लगी है वह अलायंस के लिए शुभ नहीं मानी जा सकती है। अलायंस में शामिल दल ही विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस के नेतृत्व को नकारने लगे है इससे बुरी बात कांग्रेस पार्टी के लिए और क्या हो सकती है। लोकसभा चुनाव में जिस तरह से विपक्षी पार्टियों ने एकजुट होकर इंडिया गठबंधन बनाकर केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को कड़ी टक्कर दी थी। वही गठबंधन अब धीरे-धीरे कमजोर पड़ता जा रहा है।

आने वाले समय में दिल्ली विधानसभा के चुनाव होने हैं। वहां भाजपा चुनाव जीतने की पूरी रणनीति बनाने में जुटी हुई है। आम आदमी पार्टी चाहती है कि वह दिल्ली की सत्ता पर फिर से काबिज हो। मगर कांग्रेस का रवैया देखकर आम आदमी पार्टी भी सकते में है। पार्टी के नेता कांग्रेस को वोट कटवा के रूप में देख रहे हैं तथा खुले आम भाजपा की बी टीम के रूप में काम करने का आरोप लगा रहे हैं। कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों की दो सूची जारी कर दी है। शेष सीटों पर भी जल्दी ही प्रत्याशियों के नाम घोषित करने की तैयारी चल रही है। यदि दिल्ली चुनाव में आम आदमी पार्टी पराजित हो जाती है तो इंडिया गठबंधन के ताबूत में वह आखरी कील साबित होगी।

कांग्रेस को यदि इंडिया गठबंधन को बचाना है तो अपने सहयोगी क्षेत्रीय दलों की भावनाओं को समझ कर फैसला करना होगा। तभी कांग्रेस अपने राजनीतिक वजूद को बचा पाएगी। इंडिया गठबंधन टूटने की स्थिति में कांग्रेस का भी कमजोर होना तय माना जा रहा है। क्योंकि कांग्रेस अकेले भाजपा से मुकाबला नहीं कर सकती है। गठबंधन के साथी दलों की मदद से ही कांग्रेस मजबूत हो सकेगी इस बात से कांग्रेस नेता भी अच्छे से वाकिफ है।

# हिन्दी: निरंतर संघर्ष

▸▸त्रिभुवन लाल साहू

हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस जैसे कार्यक्रम हमारी मातृभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इन्हें महज औपचारिकता तक सीमित रखना दुर्भाग्यपूर्ण है। आजादी के पहले हिंदी को किसी संघर्ष की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद इसकी स्थिति कमजोर होती गई। कभी अंग्रेजों के गुलाम थे, तो अब अंग्रेजी के प्रभाव में बंधे हैं।

पहले जहां स्कूलों में हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं का माध्यम अधिक था, आज अंग्रेजी माध्यम स्कूलों का वर्चस्व बढ़ने से हिंदी पिछड़ रही है। कई बच्चे शुद्ध हिंदी बोलने और लिखने में भी असमर्थ हैं। हिंदी को उचित सम्मान और प्राथमिकता न देना हमारी सबसे बड़ी भूल है।

**स्वतंत्रता के बाद हिंदी का संघर्ष**

14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा मिला, और 1953 से हर साल हिंदी दिवस मनाया जाने लगा। लेकिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारने के बावजूद, प्रशासन में इसका स्थान अंग्रेजी के कब्जे में रहा। आजादी के 77 साल बाद भी हिंदी को उसका सही स्थान नहीं मिल पाया है।

**नई पहलः हिंदी का पुनरुत्थान**

नई शिक्षा नीति के त्रिभाषा फॉमूर्ले में दो भारतीय भाषाओं को शामिल करने से हिंदी को बढ़ावा मिल सकता है। डिजिटल युग में हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए श्लीलाश् जैसे मोबाइल ऐप्स और पेशेवर पाठ्यक्रमों को हिंदी में पढ़ाने की शुरूआत की गई है। हाल ही में मध्य प्रदेश के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में हिंदी माध्यम से पढ़ाई शुरू होना इस दिशा में एक बड़ा कदम है।

**हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य**

हिंदी सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है। फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम जैसे देशों में भी यह प्रमुख भाषा है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के प्रयास जारी हैं। प्रधानमंत्री सहित कई नेता अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में भाषण देकर इसे बढ़ावा दे रहे हैं।

**विश्व हिंदी दिवस**

हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से हुई। 2006 में इसे आधिकारिक रूप दिया गया। इसका उद्देश्य हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना है।

**आधुनिक युग में हिंदी**

डिजिटल युग में हिंदी तेजी से अपनी पहचान बना रही है। गूगल के अनुसार, भारत में हिंदी सामग्री निर्माण की दर 94% है, जो अंग्रेजी से कहीं अधिक है।

हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता का प्रतीक है। यह साहित्य, कला, और अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हमें इसे गर्व के साथ अपनाना होगा। हिंदी दिवस की सार्थकता तभी होगी, जब हर दिन हिंदी को सम्मान और प्राथमिकता मिले। ●

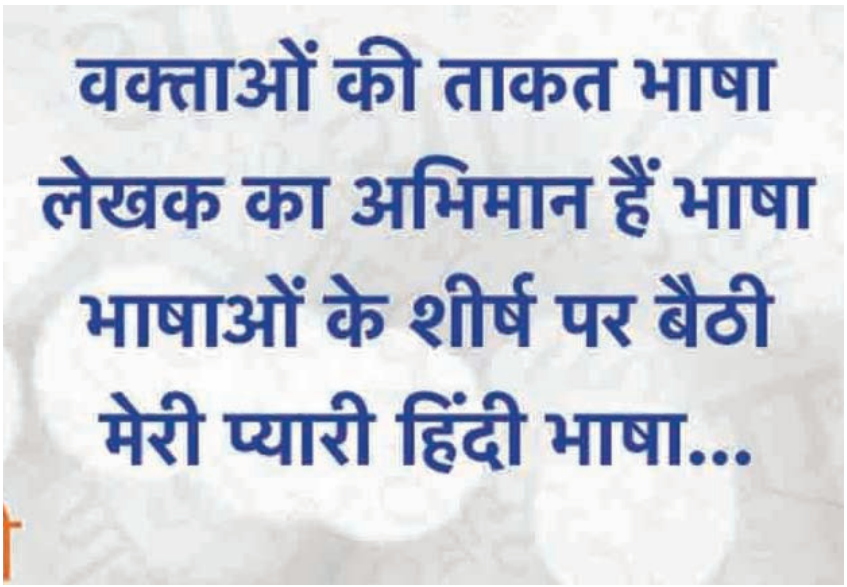

विजय गर्ग
*लेखक व स्तंभकार*

# भारत के इक्विटी बाजारों में महिला निवेशकों का उदय

इक्विटी बाजार में सबसे उल्लेखनीय रुझान महिला निवेशकों की संख्या में वृद्धि है, जिनकी भागीदारी 2015 के बाद से 6.8 गुना बढ़ गई है। भारतीय इक्विटी बाजार पिछले दो दशकों में मौलिक रूप से बदल गया है। स्मार्टफोन, डिजिटल ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के आगमन और बढ़ी हुई वित्तीय साक्षरता ने निवेशकों के एक नए युग की शुरूआत की है - युवा, वित्तीय रूप से जागरूक और सोच-समझकर जोखिम लेने के लिए तैयार। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के हालिया आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में इक्विटी

बाजार निवेशकों में अब 22 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं, जो 2015 के बाद से 6.8 गुना की वृद्धि है। शुरूआती दिनों में डीमैट ट्रेडिंग को धीमी गति से अपनाने को देखते हुए महिला भागीदारी में यह उछाल विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसका श्रेय महिलाओं को अधिक वित्तीय स्वतंत्रता का आनंद लेने, इक्विटी में बढ़ती रुचि और स्थायी धन सृजन के लिए अनुशासित दृष्टिकोण को दिया जा सकता है। महिलाओं की वित्तीय जागरूकता में वृद्धि भी इस वृद्धि का एक महत्वपूर्ण चालक रही है। क्रिसिल और डीबीएस के एक अध्ययन में पाया गया कि 47 प्रतिशत महिलाएं अब स्वतंत्र वित्तीय निर्णय लेती हैं। यह नई स्वायत्तता म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाली महिलाओं की बढ़ती संख्या में परिलक्षित होती है। एएमएफआई के आंकड़ों के अनुसार, उद्योग एयूएम में महिलाओं की हिस्सेदारी दिसंबर 2023 के अंत तक बढ़कर लगभग 21 प्रतिशत हो गई, जो मार्च 2017 में 15.2 प्रतिशत थी। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह प्रवृत्ति प्रमुख शहरों तक ही सीमित नहीं है; छोटे शहरों में महिलाएं पूंजी बाजार में निवेश के लिए समान उत्साह दिखाती हैं। हालाँकि, उसी उफ्क्रक्छ और उङ्कर अध्ययन से पता चला है कि महिलाएं अभी भी अपनी निवेश योग्य संपत्ति का 51 प्रतिशत सावधि जमा और बचत बैंक खातों में, 16 प्रतिशत सोने में, 15 प्रतिशत म्यूचुअल फंड में, 10 प्रतिशत रियल एस्टेट में और बस आवंटित करती हैं। उनके निवेश योग्य कोष का 7 प्रतिशत - सबसे कम पसंदीदा विकल्प है। पर्याप्त बाजार रिटर्न की सिद्ध क्षमता को देखते हुए, इक्विटी के प्रति महिलाओं का जोखिम-प्रतिकूल रवैया विशेष रूप से हैरान करने वाला है। पिछले पांच वर्षों में, बेंचमार्क सूचकांकों ने 100 प्रतिशत से अधिक रिटर्न दिया है। उदाहरण के लिए, दैनिक रोलिंग रिटर्न विश्लेषण के आधार पर, निफ्टी 50 टोटल रिटर्न इंडेक्स ने तीन वर्षों में लगभग 93 प्रतिशत का सकारात्मक रिटर्न दिखाया है। लंबी अवधि के इक्विटी निवेश से ये दोहरे अंक का रिटर्न पारंपरिक बचत खातों और सावधि जमा द्वारा दी जाने वाली एकल-अंकीय ब्याज दरों से कहीं अधिक है।

हालाँकि, जब बात इक्विटी की आती है तो महिलाएं सतर्क रहती हैं। इक्विटी बाजारों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का संभावित प्रभाव पर्याप्त है। बीसीजी के एक अध्ययन में पाया गया कि महिलाएं वैश्विक धन पूल में सालाना 5 ट्रिलियन डॉलर का योगदान देती हैं। व्यक्तियों और राष्ट्र के लिए एक मजबूत वित्तीय भविष्य के निर्माण के लिए महिलाओं के बीच अधिक महत्वपूर्ण इक्विटी निवेश और विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। नियामक पहले से ही महिला निवेशकों के लिए एक सुरक्षित और पारदर्शी बाजार माहौल बनाने के उपाय लागू कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, महिला निवेशक जागरूकता कार्यक्रम जैसी पहल शेयर बाजार की अवधारणाओं को सरल बनाकर और उन्हें अपने वित्तीय भविष्य पर नियंत्रण रखने के लिए प्रोत्साहित करके महिलाओं को सक्रिय रूप से शिक्षित और सशक्त बनाती है। इसके साथ ही, उद्योग जटिल वित्तीय अवधारणाओं को समझने में आसान बनाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं और पॉडकास्ट और वीडियो ट्यूटोरियल जैसे विविध प्रारूपों में सुलभ और सूचनात्मक सामग्री विकसित करके इन प्रयासों को पूरा करता है। महिलाओं को स्वयं चचाओं, खोजों में शामिल होकर शेयर बाजार में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिएज्ञान, और निवेश करने की पहल करना। एक व्यवस्थित निवेश योजना के साथ शुरूआत करना समय के साथ संपत्ति बनाने का एक स्मार्ट तरीका है। इसके अतिरिक्त, वित्तीय विशेषज्ञों से परामर्श करने से महिलाओं को आत्मविश्वास के साथ बाजार में आगे बढ़ने में मदद मिल सकती है। अब समय आ गया है कि महिलाएं इस अवसर का लाभ उठाएं, नियंत्रण अपने हाथ में लें, समझदारी से निवेश करें और अधिक न्यायसंगत तथा आर्थिक रूप से मजबूत भारत के पुनर्निर्माण में योगदान दें। ●

(लेखक सेवानिवृत्त प्रिंसिपल एवं शैक्षिक स्तंभकार हैं)

# 'दूसरा मत'-संदर्भ-यात्रा' और देश की सात विभूतियां

एआर आज़ाद
*पत्रकार एवं साहित्यकार*

मिलना-जुलना 20वीं सदी तक की सबसे बड़ी शुभ यात्रा था। और इसे इसी तौर पर देखा जाता था। आज हम बदलाव और विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर बड़ी कामयाबी के बावजूद मिलने-जुलने और अपनेपन को संजोए रखने में बहुत पीछे छूट गए हैं। इस तक़ाज़ा की भरपाई समय की बहुत बड़ी मांग है। इस कसौटी पर खरा उतरना ही एक पत्रकार, साहित्यकार और समाज के सजग प्रहरी का दायित्वपूर्ण परीक्षा है। इस परीक्षा के हवन में ख़ुद को समर्पण कर देना मेरे लिए सबसे बड़ी अग्नि परीक्षा थी। अग्नि परीक्षा इसलिए कि एक लंबे अरसे से रिपोर्टिंग को छोड़ने के बाद डेस्क पर काम करने की चुनौती ने हमें उस तरफ़ जाने से दीवार बनकर रोकने लगी थी। प्रिंट मीडिया में तो रिपोर्टिंग और डेस्क को एक साथ साधने की कला में मेरी निपुणता धीरे-धीरे स्थायी तौर पर विकसित हो चुकी थी। लेकिन 2001 के आख़िरी महीने से तो हमारा इलेक्ट्रोनिक मीडिया में प्रवेश ही मेरे मिलनसार व्यावहार के लिए ख़तरे की घंटी साबित हुई। दिल्ली छोड़कर हैदराबाद जाना पड़ा। 'ईटीवी' इलेक्ट्रोनिक मीडिया का एक नया चेहरा था। कुछ सालों में ही हैदराबाद की सरज़मीं से अलविदा कहकर दिल्ली आ गया। प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया के गोमगो में फंसा रहा। हैदराबाद में रहते हुए 'दूसरा मत' का जो ख़ाक़ा तैयार किया था, वह मूर्तरूप में सामने आ गया। उसे पाक्षिक पत्रिका के तौर पर निकाला। फिर दोस्तों ने फिर से पत्रकारिता की मुख्यधारा का हवाला देते हुए इलेक्ट्रोनिक मीडिया में क़दम बढ़ाने को प्रोत्साहित किया। नतीजे में दिल्ली में 'इंडिया न्यूज़' को ज्वाइन किया। फिर इलेक्ट्रोनिक मीडिया के ही एक तरह से होकर रह गए। क्योंकि किसी प्रिंट मीडिया में एक लंबे इंडिया' पाक्षिक पत्रिका में बतौर एसोसिएट एडिटर ज्वाइन कर लिया। इसके बाद फिर इलेक्ट्रोनिक मीडिया में दस्तक देनी पड़ी। 'चैनल वन' में आउटपुट हेड बनकर गया। फिर एक चैनल 2018 में आया। उस 'एक्सप्रेस टीवी'

अरसे तक फिर सेवा करने का मौक़ा ही नहीं मिला। नतीजे में 'इंडिया न्यूज़' को अलविदा कहकर 'पी-7' चैनल में चला गया। वहां से फिर 'ज़िया इंडिया' से जुड़ गया। 'जिया इंडिया' ने चैलन के साथ-साथ प्रिंट में भी अपना दख़ल क़ायम करने की कोशिश की थी। मैंने 'जिया में डिप्टी आउटपुट हेड बनकर गया। लेकिन वह चैनल लंबे संघर्ष के बावजूद कहां खो गया किसी को कुछ पता ही नहीं चल सका। बहरहाल मैंने इन सबके साथ 'दूसरा मत' को ज़िंदा और स्वस्थ रखा। नतीजे में 'दूसरा मत' अपनी राष्ट्रीय छवि की पहचान को संघर्ष से

हासिल कर लिया। आज देश का कोई भी वर्ग ऐसा नहीं, जो 'दूसरा मत' को किसी न किसी रूप में नहीं जानता हो। यह इसकी उपलब्धि है। 'दूसरा मत' ने देश की महत्वूर्ण पत्रिकाओं में अपना स्थान बना लिया है। और यह पीआईबी से भी एक्रिडिएट है। बहरहाल शुरूआत में जब दिल्ली आया था। और रिपोर्टिंग के ज़रिए लोगों से संपर्क का जो सिलसिला शुरू हुआ था, उसी सिलसिला को दोबारा शुरू करने की दिल में मंशा जगी, तो मैंने सोचा कि बिहार से लेकर दिल्ली तक की एक ऐसी इबारत लिखी जाए, जिसमें लोगों से मिलने-जुलने का एक सिलसिला सीधे तौर पर जीवंत हो सके। इसीलिए इस परीक्षा में बैठने का फैसला किया। और सिलसिला बिहार की राजधानी पटना से शुरू होकर फिर देश की राजधानी तक पहुंची। इस सिलसिले ने मुझे फिर से आत्मीयता का बोध कराया और साफ़ कर दिया कि देश में गंगा-जमुनी तहज़ीब की मांग है। और इस संस्कृति को कोई भी ग़ैर संजीदा संस्कृति हड़प नहीं सकती। लील नहीं सकती। इसे कोई दरिया, गंढ़क और समुंदर डूबो नहीं सकती।

बहरहाल बिहार विधान परिषद के पूर्व सभापति, पूर्व राज्यसभा सदस्य एवं साहित्यिक जगत की मशहूर शख़्सियत प्रो. जाबिर हुसेन से मिलने-जुलने के सिलसिले की शुरूआत की। उनके निजी आवास पर पहुंचा। उनसे शिष्टाचार भेंट हुई। और कई तरह की अनौपचारिक बात करते हुए उन्हें शॉल भेंटकर सम्मानित किया। इस मौक़े पर 'दूसरा मत' का साहित्य विशेषांक और स्थापना विशेषांक भी भेंट की गई। उन्होंने इसे सहर्ष ग्रहण किया।

साहित्यकारों से मिलने के सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए बिहार की राजधानी पटना से आगे बढ़ा। और देश की राजधानी दिल्ली आकर सर्दी की तरह ठहर गया। और इस बीच कई विभूतियों से मिलने-जुलने की क़वायद को थोड़ी तेज़ कर दी। इस कड़ी में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ रामदरश मिश्र से उनके आवास पर भेंट की। पता चला कि देश की जानी-मानी साहित्यिक हस्ती और देश के साहित्यिक गौरव डॉ रामदरश मिश्र ने शुभचिंतकों की शुभकामनाओं से शतायु जीवन के सुखद क्षण को स्पर्श कर लिया है। उनसे दिल्ली के द्वारका आवास पर घण्टे भर की समृद्ध मुलाक़ात हुई। इस मौक़े पर उन्हें 'दूसरा मत' का साहित्य विशेषांक एवं स्थापना अंक भेंट की गई। इस सुखद पल को और सुखद बनाते हुए 'दूसरा मत' के संपादक ए आर आज़ाद ने अपनी हाल ही में विमोचित सात पुस्तकों में से दो ग़ज़ल-संग्रह, 'बेटी : एक ग़ज़ल' एवं 'मां : एक ग़ज़ल' भेंट की। दो काव्य-संग्रह, 'तुम कहो न' और 'तस्वीर' भी भेंट की गई। इस मौक़े पर उन्हें शॉल ओढ़ाकर आदर पूर्वक सम्मानित भी किया गया। उन्होंने इस अवसर पर साहित्य विशेषांक का तत्क्षण अध्ययन भी किया। और इस अंक की जमकर प्रशंसा भी की। इस लम्हें को 'मेघ देवता' के लेखक सैयद असद आज़ाद ने कैमरे में सुरक्षित भी किया।

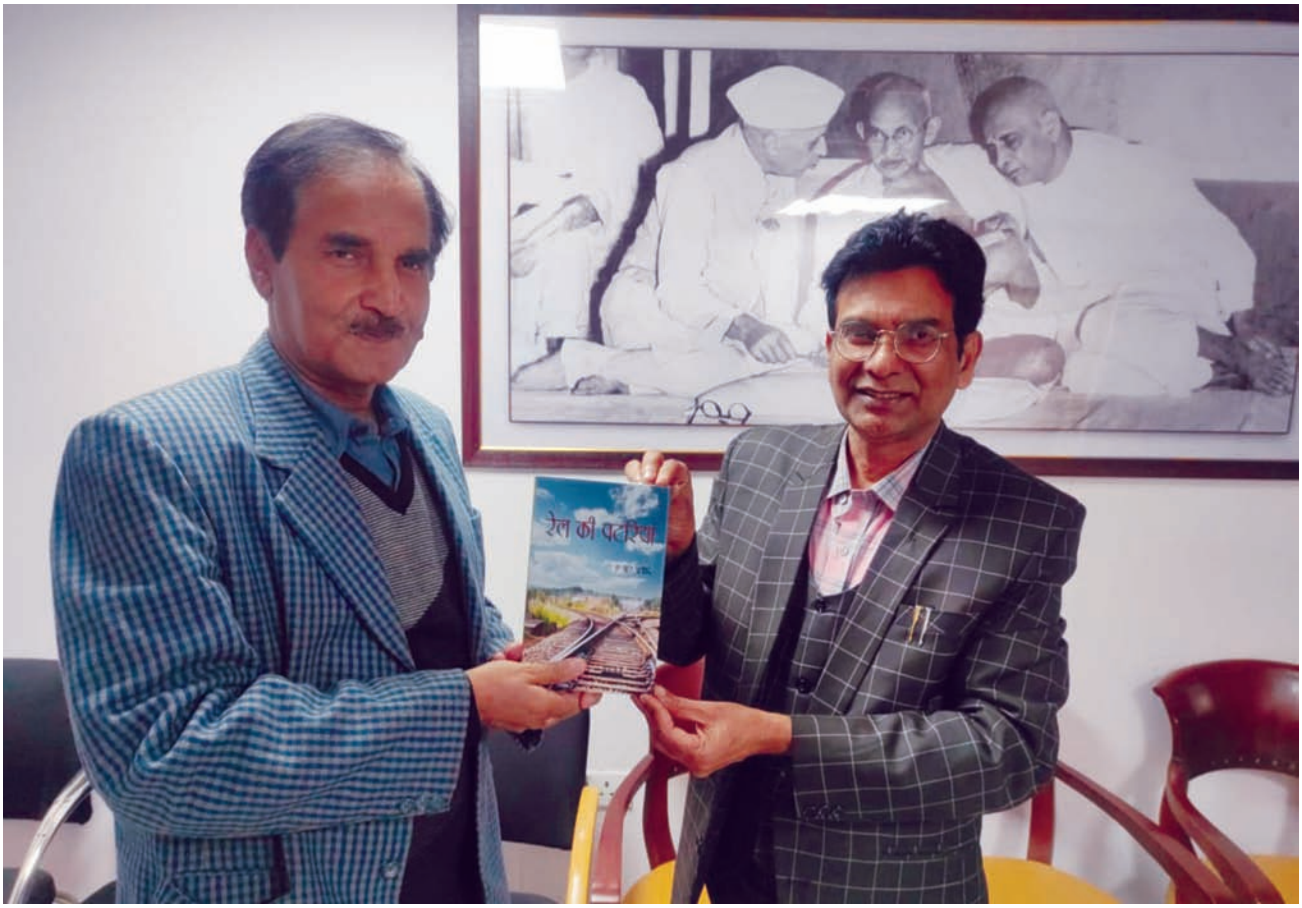


और उनके साथ फोटो भी खिंचवाएं।

फिर सिलसिला आगे की तरफ़ बढ़ा। और देश की सर्वाधिक चर्चित कवयित्री, साहित्य अकादमी सहित कई महत्वपूर्ण पुरस्कार से नवाज़ी गईं और अपने उपन्यास के लिए शोहरत याफ़्ता लेखिका और दिल्ली यूनिवर्सिटी के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेज़ी की प्रोफ़ेसर अनामिका जी से नववर्ष-2025 की पूर्व संध्या पर शानदार और यादगार मुलाक़ात हुई।

इस मौक़े पर उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। और 'दूसरा मत' का साहित्य विशेषांक उन्हें सादर भेंट की। इस मौक़े पर अपना चर्चित ग़ज़ल- संग्रह 'बेटी : एक ग़ज़ल' भी बराए नज़र की। उन्हें अपनी कविता-संग्रह 'तुम कहो न' और 'रेल की पटरियां' भी पेश की। इस गौरव क्षण में कई मुद्दों और साहित्य पर खुलकर बातचीत भी हुई।

साहित्य के बाद पत्रकारिता के ओजस्वी चर्चित चेहरे की ओर क़दम चल पड़े। देश के चर्चित पत्रकार और नेता प्रतिपक्ष राज्यसभा के मीडिया सलाहकार अरविंद सिंह जी से दिल्ली के राजा जी मार्ग में मुलाक़ात हुई। इस मौक़े पर उन्हें देश की चर्चित ग़ज़ल संग्रह 'बेटी : एक ग़ज़ल' और 'दूसरा मत' का स्थापना विशेषांक, साहित्य- विशेषांक और 'रेल की पटरियां' पुस्तक सादर व सम्मानपूर्वक भेंट की गई।

हमारे जीवन में स्वास्थ्य का एक ख़ासा मुक़ाम है। और चिकित्सक हमारे जीवन के अभिन्न अंग बनकर सामने खड़े होते हैं। इसलिए उनके बिना तो स्वस्थ जीवन की कामना करना ही व्यर्थ है। और मिलने-जुलने के सिलसिला को एक नया मोड़ देते हुए चिकित्सा के क्षेत्र में अपार लोकप्रियता हासिल करने वाले देश के चंद महत्वपूर्ण डॉक्टरों में शुमार और कई महामहिम राष्ट्रपति और कई माननीय प्रधानमंत्रियों के फ़िज़िशियन रह चुके पद्मश्री डॉ एम वली से दिल्ली के ग्रेटर कैलाश पार्ट टू में मुलाक़ात की। इस मौक़े पर उन्हें देश की चर्चित ग़ज़ल संग्रह 'बेटी : एक ग़ज़ल' और 'दूसरा मत' का स्थापना विशेषांक सादर व सम्मानपूर्वक भेंट की। आत्मीयता का वह पल ज़माने तक याद रहेगा, ऐसा भरोसा वहां से लौटने का सबब बना। फिर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी जड़ जमाने वाले कुछ हस्ती से भेंट का सिलसिला बना। और इसी कड़ी में दिल्ली यूनिवर्सिटी के आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज के प्राचार्य प्रो. ज्ञानतोष कुमार झा से मुलाक़ात हुई। इस मौक़े पर उन्हें मैंने शॉल, नव प्रकाशित कविता-संग्रह 'तस्वीर' और 'रेल की पटरियां' के साथ-साथ 'दूसरा मत' का साहित्य-विशेषांक, 'दूसरा मत' स्थापना विशेषांक भेंट की। इस मौक़े पर 'मेघ-देवता' के लेखक और बाल-साहित्यकार सैयद असद आज़ाद भी मौजूद थे। एक प्राचार्य और एक संपादक व साहित्यकार की यह भेंट अपने आप में अभूतपूर्व साबित हुई।

नववर्ष के पहले हफ़्ते की मुलाक़ात डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी पर जाकर थोड़ी थमी। डॉ

विश्वनाथ त्रिपाठी इस सदी के सबसे चर्चित, नामवर और बेबाक साहित्यकार के तौर पर देश व दुनिया में जाने जाते हैं। आलोचना के क्षेत्र में इनकी शख़्सियत बेमिसाल है। इनका साहित्य सदाबहार और भाषा व शैली झरना की सिफ़त को लिए हुए बुलंदी पर है। और इसी सिफ़त को अपने अंदर समेट कर शब्दों के गौहर बन गए हैं। इनकी आवाज़ बुलंद और अंदाज़ इनका बेहद शानदार है। इनके भाषण और व्याख्यान के क्या कहने? मैंने 2001 में ही इनका लोहा मान लिया था, जब उपराष्ट्रपति की मौजूदगी में उपराष्ट्रपति भवन में हमारी पहली पुस्तक- 'बिखरे चित्र' का विमोचन कार्यक्रम चल रहा था। विश्वनाथ जी मुख्य वक्ता थे। हमें उपराष्ट्रपति सचिवालय से सिर्फ़ 35 मिनट का समय मिला था। और जब इन्होंने धारा प्रवाह बोलना शुरू किया, तो वे हमारी किताब 'बिखरे चित्र' पर तो जमकर बोले ही। उन्होंने हमारे ख़ानदान तक का अध्ययन कर लिया था। और जब हमारे ख़ानदान के बारे में बोलने लगे तो मैं भी सुनकर दंग रह गया। उतनी जानकारी उस समय मुझे भी नहीं थी अपने ख़ानदान के बारे में। बाद में पिताजी से इसकी तस्दीक़ करने पर पता चला कि वे साहित्य की दुनिया से इतर की भी जानकारी रखते हैं। और 35 मिनट का वह कार्यक्रम राष्ट्रपति भवन में डेढ़ घंटे तक चला। यह था उनका प्रभावशाली व्याख्यान का अंदाज़ और सबको आत्ममुग्ध कर देने की कला की अदभूत प्रतिभा। निर्धारित समय पर कार्यक्रम की समाप्ति के सचिवालय अधिकारियों के दबाव के बीच उपराष्ट्रपति का इशारा इस कार्यक्रम के लिए दीघार्यु बना। और उनके भलमनसाहत का सबूत भी।

बहरहाल सोमवार यानी 6 जनवरी, 2025 की शाम साढ़े पांच से सात बजे तक यानी लगभग डेढ़ घंटे तक उनसे मुलाक़ात हुई। कई मौज़ू पर खुलकर बातचीत हुई। उन्होंने अपने अथाह ज्ञान में से बूंद-बूंद ज्ञान मेरे मस्तिष्क को रफ़्ता-रफ़्ता भेंट किया। कई महत्वपूर्ण साहित्यकारों पर चर्चा हुई। 'दूसरा मत' के साहित्य विशेषांक पर चर्चा हुई। 'दूसरा मत' के साहित्य विशेषांक को देखकर उनकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने ख़ूब आशीर्वाद दिए। और उनका यह प्यार मेरे लिए सबसे बड़ा सौग़ात बन गया।

बातचीत के तारतम्य को अल्पविराम देते हुए मैंने उनसे अनुरोध किया। और मेरे अनुनय-विनय को सहज स्वीकार करते हुए वे कुरसी से उठ खड़े हुएं। फिर मैंने और 'मेघ देवता' के लेखक व बाल साहित्यकार सैयद असद आज़ाद ने साझे तौर पर उन्हें शॉल और 'दूसरा मत' का साहित्य विशेषांक भेंट की। इस अवसर पर मैंने 'दूसरा मत' का स्थापना विशेषांक और अपनी अब तक की सबसे देश भर में चर्चित पुस्तक- 'बेटी : एक ग़ज़ल' भेंट की। और फिर थोड़ी देर तक बात चीत होती रही। और तब मैंने उनसे अनुरोध किया कि इस बार का 'आचार्य हाशमी साहित्य सम्मान' भी आपको स्वीकार करना है, तो उन्होंने कहा,- बेटे बेगूसराय

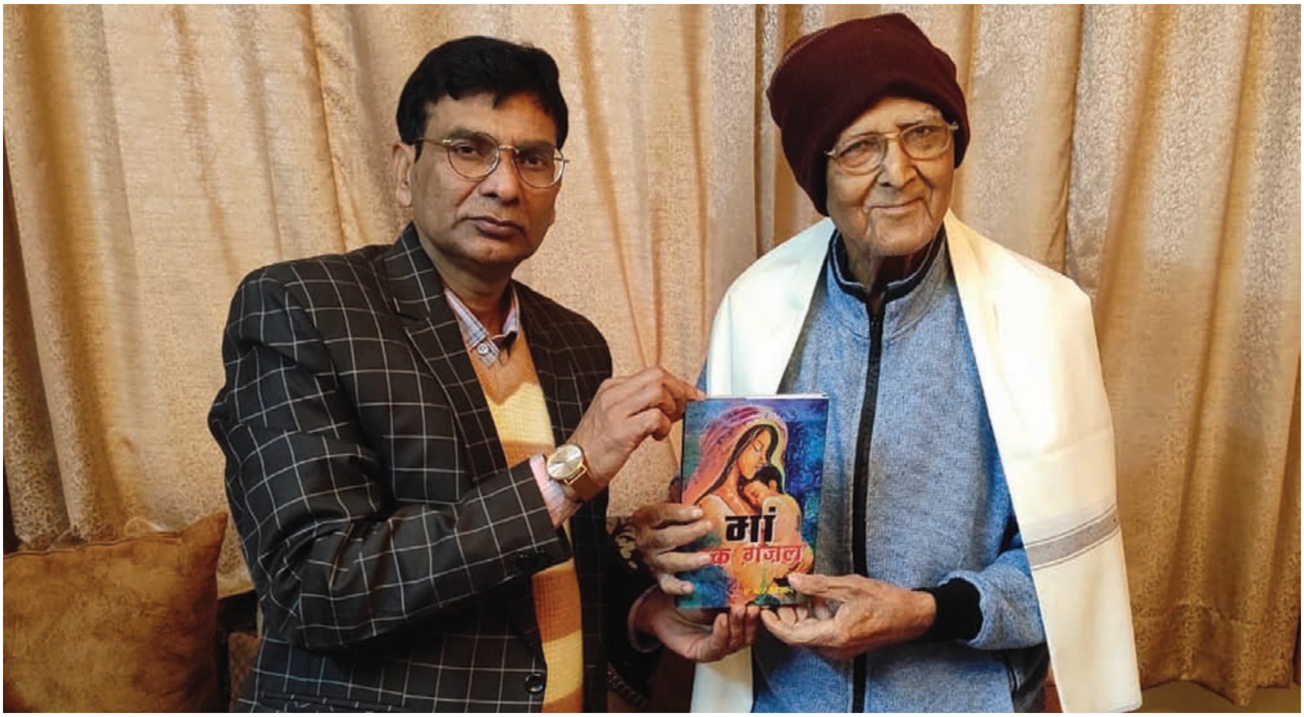


या पटना जाने की उम्र अब इजाज़त नहीं देती है। तब मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि अवार्ड आपको यहीं लाकर प्रदान किया जाएगा। यह सुनकर उन्होंने हामी भर दी। यह भी मेरे लिए एक सकून का सबब बना।

अब मैं इनकी शैली, भाषा और अपनापन से आपको रूबरू करा रहा हूं। मेरी ताज़ा तरीन ग़ज़ल की पुस्तक- 'बेटी : एक ग़ज़ल' पर इन्होंने क्या ख़ूब लिखा है, आप भी पढ़कर ज़रा इसका लुत्फ़ उठाएं। आपके लिए 'बेटी : एक ग़ज़ल' की फ़्लैप पर लिखी गई उनकी भूमिका बराए नज़र है।

मैं 94 वर्ष का हूं। और उर्दू कविता से प्रेम करता हूं। यह प्रेम बहुत कुछ अंजान आदमी का प्रेम है, जिसे अंग्रेज़ी में Blind Love कहते हैं। इसलिए उर्दू कविता के बारे में जो कुछ कहूं उसकी पहले तस्दीक़ कर ली जाए। मेरा विचार ये रहा है कि उर्दू कविता में स्त्री अधिकांशतः प्रेमिका

के रूप में चित्रित हुई है। अपवाद के रूप में मुझे केवल मीर अनीस दिखते हैं। पारिवारिक संबंधों पर वैसी एक रचना शायद किसी भाषा में न हो। इसके साथ मीर तक़ी मीर का वह शेर याद आता है, जिसका मिसरा है-

अब आया ध्यान ए आराम-ए-जाँ इस ना-मुरादी में
कफ़न देना तुम्हें भुले थे हम असबाब-ए- शादी में

फ़िराक़ गोरखपुरी ने इस क्षेत्र में ऐतिहासिक महत्व का काम किया है। उनकी एक रूबाई उर्दू साहित्य को अभुतपूर्व समृद्ध से भर देती है।-

है ब्याहता पर रूप अभी कुंवारा है
मां है पर अदा जो भी है दोशीज़ा है
वो मोद भरी मांग भरी गोद भरी
कन्या है, सुहागन है जगत माता है
बेटी पर ऐसा रूप मैंने कहीं नहीं देखा है।

आज़ाद साहब ने बड़ी कृपा करके अपनी मूल्यवान और प्रिय पुस्तक-बेटी : एक ग़ज़ल पढ़ने को भेजी। इस उम्र में आंखों की कमज़ोरी के कारण मैं पूरी किताब अच्छी तरह नहीं पढ़ पाया। लेकिन जितना पढ़ा, उससे पर्याप्त प्रभावित हुआ। मैं यह बिना संकोच के कह सकता हूं कि बेटी पर ग़ज़ल की पूरी किताब लिख देना बहुत मेहनत और लगन का काम है। अच्छा हो कि आज़ाद साहब अगले एडिशन में इस किताब की एक भूमिका लिखाएं और अच्छी तरह बताएं कि बेटी पर ऐसी अभूतपूर्व किताब लिखने की- नज़्म में नहीं प्रेरणा कहां से मिली? ज़िंदगी में वो कौन सा अनुभव और वो कौन सी घटना थी, जिसने यह धनुष उठाने का उत्साह और साहस उनको दी।

एक ही विषय पर संकल्प करके लंबी किताब लिखने में सबसे बड़ा ख़तरा होता है कि कुछ सामग्री भर्ती के लिए देनी पड़ती है। केवल यह होता है कि देखिए हम एक ही विषय पर लिख रहे हैं अदबदा कर। और इससे विषय की सीमा के कारण शिल्प में बेज़रूरत का ठहराव आ जाता है। कुछ अल्फ़ाज़ ढीले इस्तेमाल होते हैं।

ग़ज़ल हिन्दी के लिए कोई नई विधा नहीं है। कबीर, निराला, प्रसाद सबने ग़ज़ल लिखी है। और हिन्दी ग़ज़ल का अपने ढंग से अपना अस्तित्व है। आज़ाद साहब की इस लंबी किताब में मुझे कोई शेर भर्ती का नहीं मिला। और ये पता चला कि उनके पास हिन्दी शब्दों का अपूर्व भंडार है। इसमें देसी, तत्सम और तद्भव तीनों प्रकार के शब्दों का उपयोग समान रूप से किया गया है।

मैं आज़ाद साहब का व्यक्तिगत रूप से कृतज्ञ हूं कि उन्होंने ऐसी नायाब किताब मुझे पढ़ने को दी है। यह किताब हिन्दी ग़ज़ल के साहित्य में एक नयापन लाती है। और ग़ज़ल के रीतिकालीन यानी रुग्न या कोठे से उताकर सामान्य भारतीय परिवार के आत्मीय परिवेश में ला देती है।

मुझे आशा है कि आज़ाद साहब हिन्दी ग़ज़ल को नित नूतन रचनाओं से समृद्ध करेंगे। ●

सैयद असद आज़ाद
*लेखक-'मेघ देवता' एवं बाल साहित्यकार*

# सशक्त प्रधानमंत्री थे मनमोहन सिंह

भारत की आर्थिक सुधार के सूत्रधार पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने 26 दिसंबर, 2024 को आखिरी सांसें लीं। और अपने पीछे अपना आदर्श व स्वच्छ-धवल राजनीतिक जीवन छोड़ गए। उनके मरणोपरांत आज पूरा देश उन्हें नमन कर रहा है। उनके किए गए लोककल्याणकारी कार्यों को याद कर रहा है। और उनके कार्यों को याद कर उनको धन्यवाद अर्पित कर रहा है। सभी खुद को सौभाग्यशाली मान रहे हैं कि इस देश को मनमोहन सिंह जैसा आरबीआई गर्वनर,केंन्द्री वित्तमंत्री और एक सशक्त प्रधानमंत्री मिला।

उनके अब नहीं होने की अपूरणीय क्षति का भी एहसास हो रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह इस बात से अवगत थे कि उनके जाने के बाद देश उन्हें किस तरह से याद रखेगा? बतौर प्रधानमंत्री चाहे उनपर एक्सीडेंटल प्रधानमंत्री का टैग लगा हो या उनके कमजोर प्रधानमंत्री होने का सवाल उठा हो? उन्होंने हमेशा एक ही जवाब दिया,-''इतिहास बताएगा।''

उनके दुनिया को अलविदा कहने के बाद पूरा देश जिस भांति उनके लोककल्याणकारी कार्यों और उनके आर्थिक विकास और उसके क्रियान्वयन को जिस तरह याद कर रहा है, उससे ये तो साबित हो चुका है कि मनमोहन सिंह का नाम भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जा चुका है।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह खुद को एक्सीडेंटल वित्त मंत्री भी कहते थे। लेकिन बतौर वित्त मंत्री उनके कार्यकाल को देखने, परखने और समझने के बाद ये कहा जा सकता है कि अगर इस देश को उनके जैसे एक-दो और एक्सीडेंटल वित्त मंत्री मिल जाए तो भारत को अर्थव्यवस्था के मामले में दुनिया का सिरमौर बनने से कोई नहीं रोक सकता है। क्योंकि बतौर वित्त मंत्री उन्होंने जिस प्रकार 1991 में दुनिया के लिए भारत के दरवाजे को खोला वो काबिल ए तारीफ तो था ही, साथ ही उनकी निडरता और साहस का प्रमाण भी था। और उनके साहसी कदम का ही यह नतीजा है कि आज भारत पांच ट्रिलीयन इकानॉमी का सपना देख पा रहा है।

जिन मीडिया प्लेटफॉर्मों से पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को एक्सीडेंटल और कमजोर प्रधानमंत्री का टैग मिला वो और पूरा टीवी जगत मनमोहन सिंह की ही देन है। उन्होंने ही लाइसेंस राज और उसी की भांति कई पाबंदियों को खत्म किया। नतीजे में आज देश में आठ सौ से नौ सौ टीवी चैनल और कई ओटीटी प्लेटफार्म मौजूद हैं।

मनमोहन सिंह ने बतौर प्रधानमंत्री कई लोककल्याणकारी कार्यों को अंजाम दिया। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह भले ही भाषणों में कम बोले,नाप तौल कर बोलें। लेकिन उनके किए गए विकासों ने जमकर बोला। खूब शोर मचाया।

वे खुद शांत स्वभाव के थे। लेकिन उन्होंने फैसले कड़े लिए। उन्होंने जुमले नहीं गढ़े। सीधे काम करके दिखाया। वे जगह-जगह प्रचार करने नहीं गए। बल्कि उनकी उपस्थिति में उनके विकास की गूंज प्रचार स्थल पर पहुंची। उन्होंने साबित कर दिया कि बिना शोर मचाए भी विकास कार्यों को अंजाम तक पहुंचाया जा सकता है। लेकिन उनके शांत स्वभाव ने ही उन पर कमजोर प्रधानमंत्री होने का सवाल खड़ा करने दिया। इसी चुप्पी के स्वभाव की वजह से लोगों ने क्या-क्या नहीं मनगढंत आरोप लगाए। इसी मनगढंत आरोपों में से एक आरोप उनपर सोनिया गांधी और राहुल गांधी के साए में भी रहने का लगा।

उनकी यही खासियत उन्हें महान बनाती चली गई कि उन्होंने कभी इस बेहुदे और बेतुके आरोपों की चिंता नहीं की। उन्हें फिक्र रही तो देश के विकास की। उन्होंने फिक्र की तो सिर्फ अपने देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति व सुधार की।

उनके इस भलमनसाहत का नतीजा भी देश के सामने आया। उनके कार्यकाल में देश ने आर्थिक विकास की अनुभूति की। उनके प्रथम कार्यकाल में ही अर्थव्यवस्था में आठ से नौ प्रतिशत की दर से इजाफा हुआ।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने भले ही हर क्षेत्रों में जा-जाकर अपनी पार्टी का प्रचार तो नहीं किया। लेकिन भारत के हर क्षेत्र के विकास के लिए फैसले जरूर लिए। बतौर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने उन्हीं कानूनों को पारित किया, जो देशहित और राष्ट्रहित में थे। उन्होंने कभी ऐसे कानूनों को तवज्जोह नहीं दी, जो सामाजिक भेदभाव उत्पन्न करे। या ऐसे कानून जो किसी विशेष समूह को खुश करने के लिए हो।

मनमोहन सिंह ऐसे प्रधानमंत्री हुए जिन्होंने शांति के साथ देश को विकास की राह पर लाया। उन्होंने प्रचार-प्रसार कम और काम ज्यादा किया। स्वभाव भले ही उनका शांत था लेकिन उनके कार्य और उनके फैसले निडरता और साहस के प्रतीक थे।

दरअसल सत्य तो यह है कि मनमोहन सिंह का एक्सीडेंटल वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री होना एक मात्र ऐसा एक्सीडेंट था, जो भारत के लिए सौभाग्य की बात थी। और ऐसे ही एक्सीडेंट की जरूरत भारत को आज भी है। ●

टी. एन. निनान
*वरिष्ठ पत्रकार*

# आलोचना को शालीनता से लेने वाले राजनीतिज्ञ थे मनमोहन सिंह

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से पहली मुलाकात 1981 में दिल्ली में बतौर एक बिजनेस स्टैंडर्ड संवाददाता के रूप में हुई थी, जब अपने ब्यूरो चीफ के साथ योजना आयोग के सदस्य-सचिव से मिलने गया था। वे दोनों पुराने दोस्त थे। जब हम विशाल कार्यालय में सोफे पर बैठे, तो मेरे बॉस ने गौर किया कि डॉ. सिंह के पॉलिश किए हुए जूते के ऊपरी हिस्से पर सिलवटें पड़ी हुई थीं। मेरे ब्यूरो चीफ ने दोस्ताना अंदाज में पूछ ही लिया, आप नए जूते क्यों नहीं खरीद लेते? डॉ. सिंह का जवाब था कि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में पिछली नियुक्ति के दौरान जो कुछ बचत की थी, उससे अपने लिए एक घर बनवाया है। अब आगे अपनी बेटियों की शादी के लिए पैसे जोड़ने की जरूरत है।

इसके कुछ समय बाद, मैं आयोग के एक अन्य सदस्य से मिलने उनके घर गया। उन प्रतिष्ठित वैज्ञानिक ने मुझे एक कप चाय न दे पाने के लिए माफी मांगी। उन्होंने बताया कि चीनी बहुत महंगी हो गई है। यह वह समय था, जब सरकार के शीर्ष पर बैठे लोग भी मामूली वेतन पर साधारण जीवन जीते थे, उस वक्त भारतीय अर्थव्यवस्था दुनियाभर में गरीबी और घरेलू स्तर पर हर किस्म की वस्तुओं की कमी और नियंत्रण के लिए जानी जाती थी। और ऐसी अर्थव्यवस्था को डॉ. सिंह ने 1991 में नियंत्रण-मुक्त किया था। उत्पादक अब उपभोक्ताओं का पीछा करते हैं, जैसा कि उन्हें करना चाहिए।

सच है, 1991 में डॉ. सिंह ने जितना भी किया, उसके लिए उन्हें उचित श्रेय से कहीं अधिक मिला। जैसा कि उन्होंने खुद एक बार एक साक्षात्कार में कहा था, यह एक सामूहिक प्रयास था, और सभी का योगदान थाइ्र ज्यादातर चुपचाप रहकर काम करने वाले पीवी नरसिम्हा राव से लेकर उनके प्रमुख सचिव ए.एन. वर्मा और उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रालय के अन्य लोगों ने अपनी भूमिका निभाई। उसमें यशवंत सिन्हा भी शामिल थे, जिन्होंने नरसिम्हा राव की सरकार के शपथ ग्रहण करने तक, चंद्रशेखर सरकार में वित्त मंत्री रहते हुए देश को दिवालियापन से बचाने के लिए आपातकालीन उपाय किए। निःसंदेह, भारत के लिए एक नए युग का सूत्रपात करने वाली महत्वपूर्ण घटना डॉ. सिंह का 1991 का बजट रहा, जिसमें उन्होंने विक्टर ह्यूगो को उद्धृत करते हुए कहा था : 'पृथ्वी पर कोई भी शक्ति उस विचार को नहीं रोक सकती जिसका समय आ गया हो', और इन शब्दों के साथ समाप्त किया, 'पूरी दुनिया कान खोलकर और स्पष्ट रूप से सुन ले। भारत अब जाग गया है। हम पार पाएंगे। हम होंगे कामयाब'।

हालांकि, आलोचनाएं भी कम न थीं, उनके प्रधानमंत्रित्व काल में हुई कुछ चीजों के लिए जितनी आलोचना होनी चाहिए थी, शायद उससे कहीं ज्यादा थीं। एक अस्थिर गठबंधन सरकार, जिसमें हर भागीदार वही करता था, जो वह करना चाहता था। एक ऐसी सरकार, जिसे हर काम में नुक्ताचीनी ढूंढ़ने वाले वामपंथियों का समर्थन पाने को कड़वा घूंट पीना पड़ता था, एक ऐसा मंत्रिमंडल, जिसमें कई मंत्रियों की वफादारी प्रधानमंत्री के प्रति न होकर सोनिया गांधी के प्रति अधिक थी। श्रीमती गांधी ने खुद कुछ कामों की बागडोर अपने हाथ में रखी थी, सो एक दोहरी शासन व्यवस्था बनी हुई थी। पद पर बेशक डॉ. सिंह थे, लेकिन वास्तव में सत्ता या पूर्ण नियंत्रण उनके हाथ में नहीं था।

तिस पर, वे वह नेतृत्व प्रदान करने में भी असफल रहे जो वास्तव में उनकी भूमिका थी। जबकि खुद उन्होंने यह दर्शन दिया था : 'राजनीति संभावना की कला है', तथापि उन्होंने न तो खुद को मुखर करने और न ही संभावनाओं की सीमाओं का विस्तार किया- जैसा कि मैंने एक बार बेबाक किंतु मैत्रीपूर्ण व्यक्तिगत बातचीत के दौरान उन्हें यह कह भी दिया। इस पर उनका जवाब था कि उनकी अपनी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं है। एक प्रधानमंत्री के मुख से यह निकलना एक अजीब बात थी। श्रीमती सोनिया गांधी को भी यह श्रेय जाता है कि डॉ. सिंह सरकार की कई बड़ी पहलकदमियों की प्रवर्तक वे रहीं, मसलन, सूचना

का अधिकार, ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम और भोजन का अधिकार।

अंत में, जो आपके पास बचता है वह हैं उनके व्यक्तिगत गुण। पारदर्शी ईमानदारी और सार्वजनिक भलाई के उद्देश्य की भावना, हर मुलाकात की विशिष्टता रही शालीनता और शिष्टाचार। प्रत्येक भेंट में उनकी समझ और ज्ञान की गहराई, कभी-कभार उनकी मुस्कुराहट जो मुश्किल समय में भी हंसने की उनकी क्षमता को दशार्ती थी।

वे चंद शब्दों में बहुत कुछ कह जाते थे। वर्ष 1996 में, जब मैंने उल्लेख किया कि राव सरकार अपने चुनाव घोषणापत्र में आर्थिक सुधारों का जिक्र करने नहीं जा रही, तो एक पल के लिए ठिठक कर उन्होंने पूछा : 'बात करने के लिए और बचा क्या' ? टिप्पणीकार डॉ. सिंह की विनम्रता का उल्लेख करते हैं। हां, उनका व्यवहार विनम्र था जो उनके अंदर स्वाभाविक रूप से था। वास्तव में, वे लोगों को तारीफ से मिलने वाली आत्म-तुष्टि का इस्तेमाल करने वाले एक चतुर खिलाड़ी थे, जिन्हें वे अत्यधिक प्रशंसा के साथ चित्त कर देते थे झ्र जैसा कि मैंने एक से अधिक बार देखा। लेकिन कुछेक बार यह करना कुछ ज्यादा ही हो गया। एक मर्तबा, जब दिल्ली के ताज पैलेस होटल में अमेरिका के राष्ट्रपति के सम्मान में आयोजित दोपहर के भोजन के दौरान उन्होंने जॉर्ज डब्ल्यू बुश की शान में अतिशयोक्तिपूर्ण कसीदे पढ़ते हुए कह डाला : 'पूरा भारत उनसे प्यार करता है।'

उन्होंने आईएमएफ के प्रबंध निदेशक माइकल कैमडेसस के साथ भी ऐसा ही किया, जिन्होंने 1991 में भारत के लिए संजीवनी बना ऋण मंजूर किया था। उनकी दिल्ली यात्रा के दौरान एक रात्रिभोज में डॉ. सिंह ने अपने मेहमान की तारीफ के पुल बांध दिए और उन्हें 'सर' कहकर संबोधित किया। हो सकता है यह मात्र भारतीयों के अतिथि देवो भवः वाली विशेषता का प्रतीक हो। हमारी अखबार के कुछ समय के लिए क्रियाशील रहे पुस्तक प्रभाग की प्रकाशित पहली किताब का विमोचन करते समय उन्होंने कहा कि उनके लिए अपनी सरकार की विफलताओं के लिए की गई आलोचनाओं का मोल है, लेकिन कहा कि अखबार को उपलब्धियों के लिए सरकार को बनता श्रेय देना चाहिए।

याद करने लायक ऐसी एक आलोचना अशोक वी. देसाई ने की थी, जो कैम्ब्रिज में डॉ. सिंह के सहपाठी और मित्र थे। बिजनेस स्टैंडर्ड के एक तेजतर्रार और तीखे स्तंभकार के रूप में जाने जाते देसाई ने 1995 या उसके आसपास लिखा था कि डॉ. सिंह व्यक्तिगत रूप से ईमानदार हैं, लेकिन अपने आस-पास भ्रष्ट लोगों को बर्दाश्त करते हैं। डॉ. सिंह ने विरोध जताने के लिए मुझे फोन किया और पूछा कि इस तरह की आलोचना से खुद का बचाव कैसे करें। मैंने कहा कि लेखक उनके मित्र हैं और मैं देसाई से आपसे बात करने को कहूंगा। लेकिन यह तथ्य है कि देसाई ने अंगुली सही नब्ज पर रखी थी।

इतना ही नहीं, जिस खुली हवा में हम सांस लेते थे, उसका प्रतिबिंब विज्ञान भवन में डॉ. सिंह की शैक्षणिक उपलब्धियों के सम्मान में लिखे आलेखों के संग्रह के विमोचन हेतु आयोजित एक कार्यक्रम में देखने को मिला। इस संग्रह का सह-संपादन इशर जज अहलूवालिया और ऑक्सफोर्ड में डॉ. सिंह के शिक्षक रहे इयान लिटल ने किया था। कार्यक्रम के वक्ता के रूप में मैंने अपनी आलोचनात्मक टिप्पणियों को व्यंग्य के पुट से हल्का-फुलका बना दिया। लेकिन शिकागो में पढ़ाने वाले और उस समय प्रधानमंत्री के सलाहकार रहे रघुराम राजन ने ऐसा नहीं किया, उन्होंने आलोचनाएं काफी कड़ी कीं। मुझे किसी अन्य प्रशासक की याद नहीं आ रही, जिसकी सरकार के तहत प्रधानमंत्री के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित हो और वक्ता उनके सामने ही उसकी सरकार की खुलकर आलोचना करें और फिर उनके साथ रात्रिभोज में शामिल हों ! उस समय ऐसी ही स्वतंत्रता थी !

एक पत्रकार के रूप में मैंने 35 वर्षों में डॉ. सिंह के साथ जितनी बार बातचीत की, उनकी गर्मजोशी और शिष्टाचार का आनंद लिया, हर बैठक से उनकी बुद्धिमत्ता के नए आलोक के साथ निकला। उनकी और उनकी सरकार की जितनी भी आलोचना मैंने की हो, उसके बावजूद भारत मां के इस सच्चे महान सपूत के प्रति सम्मान सबसे अधिक रहा। उनका निधन मेरे लिए किसी भी अन्य सार्वजनिक व्यक्ति की मृत्यु से अधिक दुःखद घटना है। ●

# साझी विरासत को सम्मान देती सोच से सीख लें

ज्योति मल्होत्रा
*वरिष्ठ पत्रकार*

डॉक्टर मनमोहन सिंह के निधन के बाद के कुछ घंटों में, कांग्रेस नेता मनीष तिवारी के लेख और साथी पत्रकार प्रदीप मैगजीन की सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में विचार व्यक्त किए हैं कि किसलिए मीडिया के एक हिस्से ने 2014 में गैर-जिम्मेदाराना हरकतों को अपनाया था- जब वह उनके प्रधानमंत्रित्व काल के अंतिम महीनों में भले मानस डॉक्टर साहिब के पीछे बेहद अजीब तरीके से पड़ गया था। एक्स प्लेटफार्म पर आई मैगजीन की बहुत सटीक टिप्पणी, काफी कुछ कह गई : ' वह भयानक अहसास : भारत को मनमोहन सिंह को बदनाम करने के अपराध बोध के साथ जीना होगा'।

हममें से जिन लोगों ने 2012-2014 के बीच इस निष्ठुर कथानक को घटते देखा होगा, इसकी आलोचना न करने के कारण इस बदनामी अभियान के भागीदार रहे, इस बारे में कोई मुगालता न रहे। हमने भवन को टुकड़े-दर-टुकड़े भरभराते देखा। हमने देखा कि कैसे राहुल गांधी ने 2013 में प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में उस अध्यादेश को फाड़ दिया था, जिसे मनमोहन सिंह दोषी राजनेताओं को अस्थायी संरक्षण देने के लिए सदन में पास करवाना चाह रहे थे -यह तब हुआ जब भाजपा पहले से डॉ. सिंह पर गांधी परिवार की 'कठपुतली' होने का इल्जाम लगाती आई थी। हमने देखा कि भाजपा ने उसके बाद वाले शीतकालीन संसद सत्र में कामकाज चलने नहीं दिया था और भाजपा नेता अरुण जेटली ने आक्रामक रूप से सदन ठप करने के लिए अपनी पार्टी का बचाव किया। इससे पहले 2008 में, प्रेस गैलरी से हमने देखा था कि कैसे भाजपा ने संसद में भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के पक्ष में प्रधानमंत्री को बोलने नहीं दिया और सदन उस वक्त लगभग ठप हो गया था जब कथित तौर पर सांसदों को एकतरफा वोट देने के एवज में दी गयी नकदी बरामद हुई।

बेशक यूपीए के पास संख्या बल था, इसलिए मतदान में जीत मिली- और जॉर्ज बुश के साथ परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। सीपीआई(एम) के प्रकाश करात सहित अधिकांश लोगों ने यह समझने की बिल्कुल भी जहमत नहीं उठाई कि परमाणु समझौता वास्तव में है क्या - यह किसी विदेशी शक्ति के अधीन काम करने के बारे में कभी भी नहीं था, बल्कि वैश्विक जिम्मेदारी की पुनः पुष्टि को लेकर था, यह भी कि इससे अमेरिका के साथ रिश्ते सहज होने से विदेशी निवेश के दरवाजे खुलेंगे, जिसकी भारत को सख्त जरूरत थी, ताकि वह अपना भाग्य फिर से गढ़ सके।

चीनी नेता देंग का वह पसंदीदा नारा याद कीजिए? 'जब तक बिल्ली चूहे पकड़ने लायक है, तब तक आप यह नहीं पूछते कि वह काली है या सफेद'? चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव और राष्ट्रवादी निश्चित रूप से पश्चिमी देशों के साथ साझेदारी बनाने में चीन की जरूरत का जिक्र कर रहे थे, क्योंकि विदेशियों के पास चीन में निवेश करने की क्षमता थी। अगर चीन अपने वैचारिक दुश्मन को गले लगाने की आवश्यकता समझ सका, तो प्रकाश करात क्यों नहीं? डॉ. मनमोहन सिंह को यह सवाल पूछना चाहिए था - या कम से कम तब पीएमओ में राज्य मंत्री और उनके आंख-कान रहे पृथ्वीराज चव्हाण को अक्सर यह प्रश्न उठाना चाहिए था। मनमोहन सिंह को यह भी पता था कि अमेरिका के साथ भारत की दोस्ती बनने से चीनियों को परेशानी होगी, हो सकता है इसके मद्देनजर वे भारत के साथ अधिक नरम रुख रखने को लिए राजी हों। और ऐसा हुआ भी, जब 2005 में, भारत और चीन ने सीमा विवाद को सुलझाने के लिए वार्ता शुरू की - हालांकि बाद में चीन पीछे हट गया, जब उसने देखा कि भारत दुनिया से अलग-थलग और कमजोर पड़ रहा है, लेकिन यह बाद में हुआ।

दुखद यह कि सीताराम येचुरी, जिन्होंने भारत-अमेरिका समझौते को घरेलू राजनीति से जोड़ने के सीपीएम के फैसले का खुलकर विरोध किया था, उन्हें उनकी अपनी पार्टी ने ही खारिज कर दिया। येचुरी हार गए, करात जीत गए और यूपीए के पैरों तले से जमीन खिसका दी। विडंबना यह है कि कुछ साल बाद, प्रकाश करात के कट्टर सहयोगी पिनाराई विजयन के नेतृत्व वाली केरल की वामपंथी सरकार ने लंदन

स्टॉक एक्सचेंज में 'मसाला बॉन्ड' का समर्थन किया, जिसके जरिए केरल के स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र में नई पहल के वास्ते पूंजी जुटाई गई, और जिससे राज्य की सूरत बदल दी। केरल को छोड़कर, देश के बाकी हिस्सों से सीपीएम साफ हो गई। समय की मांग के साथ आगे बढ़ने की जरूरत का मनमोहन सिंह का मंत्र पूरे भारत में गूंजा - इसने वामपंथियों को व्यावहारिक रूप से खत्म कर दिया और भारतीय उद्यमियों की ह्यजिंदादिलीह्न की प्रवृत्ति को बंधन मुक्त करते हुए उन्हें देश की भौगोलिक सीमा से परे की दुनिया में नई साहसिक छलांगें लगाने का मौका दिया, यह वो था जिसकी कल्पना 1947 में परिवार के साथ रेडक्लिफ सीमा पार कर भारत में आते वक्त खुद डॉ. सिंह ने भी नहीं की होगी। बारिश से भीगते सप्ताहांत में डॉ. सिंह का निधन हमें दो 'कल्पनाएं' करने का अवसर प्रदान करता है। पहली, जरा सोचकर देखें, यदि मनमोहन सिंह चीनियों के साथ सीमा समाधान निकालने में समर्थ होते। गलवान प्रसंग न घटता, तब चार साल तक चीनी आपकी सीमा पर बैठकर आपकी ओर न देखते। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति स्थापित हो चुकी होती। इसके अलावा, यह कल्पना भी करें कि अगर मनमोहन सिंह 2008 में अपने जन्मस्थान गाह के दौरे कर जाते। तो पाकिस्तान के साथ भी चीजें

अच्छी चल रही होतीं। कुछ समय के लिए दोस्ती की ब्यार चली भी, जब 2005 में मुशर्रफ एक क्रिकेट मैच देखने के लिए दिल्ली आए और उन्होंने मनमोहन सिंह को वापसी यात्रा पर आमंत्रित किया था। इस बीच डॉ.सिंह ने सियाचिन का एक संक्षिप्त दौरा किया था और एनजे 9842 नामक जगह पर समाप्त होने वाले ग्लेशियर का जिक्र करते हुए -जिसकी उंचाई का फायदा उठाने की चाहत भारत और पाकिस्तान दोनों को थी - उसे एक ह्यशांति कुंजह्न में बदलने की तमन्ना व्यक्त की। मनमोहन सिंह कश्मीर की एक दिन की यात्रा पर भी गए थे, वहां तमाम किस्म के भारतीयों से संवाद करने और वार्ता प्रक्रिया आगे बढ़ाने के लिए 8 गोलमेज वाताएं हुईं- इनमें राजनीति विषय वाली बैठक की अध्यक्षता उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने की थी।

इस बीच, भारतीयों और पाकिस्तानियों ने पहले ही मन बना रखा था कि रेडक्लिफ लाइन को इतिहास बना दिया जाए झ ताकि लोग एक-दूसरे के यहां आते-जाते रहें। पाकिस्तानी गायकों ने बॉलीवुड फिल्मों के लिए पार्श्व गायन किया, अमृतसर और लाहौर में अचल संपत्ति की कीमतें बढ़ गईं। मुशर्रफ ने गाह को स्ट्रीट लाइट से रोशन करने की विशेष अनुमति दी, जिसकी निगरानी 'टेरी' के आरके पचौरी ने व्यक्तिगत रूप से की। जिस स्कूल में मनमोहन सिंह बचपन में पढ़े थे, उसके भवन को संवारा गया। दोनों शहरों में बातचीत का केंद्र बिंदु था -'रास्ते जल्दी ही खुल जावांगे'।

लेकिन 2008 के मुंबई आतंकी हमले से खुलने की इस प्रक्रिया को एक करारा झटका लगा। पाकिस्तान में, 2009 तक वकीलों के आंदोलन ने जोर पकड़ लिया और मुशर्रफ सत्ता से बाहर हो गए। दोनों मुल्कों में बातचीत पुनर्जीवित करने के प्रयास कभी शुरू तो कभी रुकने का सिलसिला 2014 के चुनावों की पूर्व संध्या तक चलता रहा, जब अमृतसर से लाहौर के बीच निर्बाध राह खोलने के गंभीर प्रयास अंततः दफन हो गए। नरेंद्र मोदी को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन मनमोहन सिंह का अनुसरण करते हुए उन्होंने अपने शपथ ग्रहण के अवसर पर दक्षिण एशिया के सभी नेताओं को दिल्ली आमंत्रित किया।

अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह ( नेहरू या शास्त्री या इंदिरा जितना पीछे न भी जाएं तो ) दोनों ने महसूस किया कि भारत के प्रधानमंत्री को अवश्य ही सभी लोगों को साथ लेकर चलना चाहिए, भले ही उन्होंने आपको वोट दिया हो या नहीं। यह भी कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश को सांप्रदायिक, वर्गीय या जातीय आधार पर नहीं बांटा जा सकता। साथ ही यह कि घर में शांति आपके पड़ोस में शांति का एक कारक है।

कल्पना कीजिए कि काश भारत का मौजूदा राजनीतिक वर्ग इस साझी विरासत को लागू कर सके। ●

एन.एन. बोहरा
*पूर्व आइएएस एवं पूर्व राज्यपाल*

# डॉ मनमोहन प्रखर बुद्धि व अद्वितीय विनम्रता के पर्याय

डॉक्टर मनमोहन सिंह का दुःखद निधन एक दुर्लभ राजनीतिक नेतृत्व के समापन का पर्याय है। ऐसा नेतृत्व जिसकी पहचान असाधारण बौद्धिक क्षमता, ईमानदारी, पारदर्शिता और अद्वितीय विनम्रता के तौर पर रही है। वह मितभाषी थे और उन्होंने सबकी सुनी, चाहे कोई छोटा हो या बड़ा।

अर्थशास्त्री प्रोफेसर से बतौर अपने ट्यूटर मिलने का सौभाग्य मिला। उनके साथ डॉ. मनमोहन सिंह ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट की थी। डॉ. लिटल और उनकी धर्मपत्नी हमेशा सभी को गर्व से बताते थे कि डॉ. मनमोहन सिंह एक असाधारण अर्थशास्त्री थे, जो उस विश्वविद्यालय में अध्ययन करने वाले सर्वश्रेष्ठ स्कॉलर्स में से एक थे। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में भी उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।

उन्होंने बेहद जटिल मुद्दों का समाधान खुद की सूझ-बूझ से निकाला जो राष्ट्रीय हित में सर्वोत्तम निर्णय रहे।

डॉ. सिंह के भारत लौटने के कई साल बाद, मुझे एक बहुत ही प्रतिष्ठित

बतौर प्रशासनिक अधिकारी अपने कैरियर के दौरान मुझे डॉ. सिंह के साथ काम करने का सौभाग्य तब मिला, जब वह सबसे कठिन दौर में देश के केंद्रीय वित्त मंत्री थे। उस वक्त देश को बेहद विषम परिस्थितियों में अपने स्वर्ण भंडार को गिरवी रखने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

मैंने उस वक्त क्रमशः रक्षा और गृह सचिव के रूप में कार्य किया था। उस वक्त संबंधित विभागों की वित्तीय राहत के आग्रह के लिए मुझे प्रतिदिन उनके कार्यालय में दस्तक देनी पड़ती थी।

डॉ. सिंह को सदैव राष्ट्रीय हितों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता के लिए याद किया जाएगा। वर्ष 1990 के दशक की शुरूआत में तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव के नेतृत्व में भारत के आर्थिक सुधारों के जनक के रूप में और बाद में प्रधानमंत्री के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह ने भारत की उद्यमशीलता की भावना यानी ह्यजिंदादिलीह्ल को उजागर करने का प्रयास किया। उस कठिन दौर में उनके महत्वपूर्ण कदमों का ही परिणाम था कि भारत 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के कुप्रभाव से बचा रहा। अपनी ही पार्टी के विरोध के बावजूद उन्होंने सिविल न्यूक्लियर समझौते के लिए अमेरिका से संपर्क साधा और इस तरह वैश्विक पटल पर भारत एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया। पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने के प्रति उनका समर्पण निस्संदेह असाधारण था। इससे भारत और पड़ोसी देशों के लोगों के बीच संबंधों में काफी सुधार हुआ। विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान के नागरिकों से नागरिकों के बीच संबंध बढ़ाने में, 2008 के मुंबई हमलों के बावजूद, विशेषकर उन्होंने पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान को इन हमलों के लिए जिम्मेदार ठहराने में कोई संकोच नहीं किया। मुझे एक बार फिर डॉ. मनमोहन सिंह के साथ तब काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जब वह प्रधानमंत्री थे और मुझे जम्मू-कश्मीर का राज्यपाल नियुक्त किया गया था।

डॉ. सिंह हमेशा नैतिक पथ पर चलने वाले शख्स थे। बात चाहे एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में उनके कामकाज की हो, या फिर एक केंद्रीय मंत्री के रूप में और चाहे बतौर प्रधानमंत्री, अपने लम्बे और प्रतिष्ठित कैरियर के दौरान उन्होंने किसी प्रचार की चाहत नहीं रखी और नैतिक मार्ग पर चट्टान की तरह अडिग रहे। इसके लिए भले ही उन्हें उस राजनीतिक दल से भी परेशानी क्यों न उठानी पड़ी हो, जिसका वह प्रतिनिधित्व करते थे। निस्संदेह उन्हें आने वाले दशकों तक सम्मान के साथ याद किया जाएगा।

मेरी पत्नी और मैं, श्रीमती गुरशरण कौर तथा उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं तथा प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उन्हें इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ●

# मनमोहन सिंह ने बदली भारत की तकदीर

मिहिर एस शर्मा

आज का भारत अपनी तमाम सफलताओं और कमियों के साथ हालिया इतिहास के किसी अन्य व्यक्ति के बजाय मनमोहन सिंह की देन है। उन्हें हमेशा द्यअसंभावितद्ब राजनेता कहा गया लेकिन अपनी तमाम कामयाबियों और नाकामियों के साथ उनका करियर हमें यह याद दिलाता है कि टेक्नोक्रेट भी किसी राजनेता की तरह ही देशों की तकदीर बदल सकते हैं।

तटस्थ होकर बात करें तो अगर सिंह एक असंभावित राजनेता थे तो लोगों को यह सोचने के लिए माफ किया जा सकता है कि वह कहीं अधिक असंभावित उदारवादी थे। उन्होंने अपना पूरा करियर एक ऐसे अर्थशास्त्री और अफसरशाह के रूप में बिताया था जिसने उस समाजवादी व्यवस्था की सेवा में अपना समय दिया था जो 1991 के पहले देश की आधिकारिक आर्थिक विचारधारा थी। जब वह करीब 60 वर्ष के हुए तब राजनीति में उन्होंने अपने करियर की दूसरी पारी शुरू की और सुधारों की प्रक्रिया से जुड़े।

सिंह ने जुलाई 1991 के अपने प्रसिद्ध भाषण के समापन में विक्टर 'गो के कथन को नए सलीके से इस्तेमाल करते हुए कहा था, 'एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में भारत का उभार एक ऐसा विचार था जिसका वक्त आ गया है।' इसके आठ महीने बाद उन्होंने सुधारों के बचाव में जो भाषण दिया था वह भी बहुत प्रेरक है। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि, 'उनसे यह दृष्टि मिली कि भारत में सामाजिक और आर्थिक बदलाव एक खुले समाज के ढांचे में होने थे जो संसदीय लोकतंत्र और विधि के शासन के प्रति प्रतिबद्ध हों।'

उन्होंने यह भी कहा कि सुधार 'उस रचनात्मकता, आदर्श, रोमांच और उद्यमिता को सामने लाएंगे जो हमारे देश के लोगों के पास प्रचुर मात्रा में है।' उनका यह भाषण बिस्मिल के क्रांतिकारी शेर के साथ खत्म हुआ, 'सरफरोशी की तमन्ना..।' परंतु इस शेर से पहले उन्होंने जो कहा वह बताता है कि उस वक्त सुधारक क्या महसूस करते थे, 'आज रात मुझे लग रहा है कि मैं थिएटर जाऊं। हत्यारों को खबर हो जाए कि मैं उनका सामना करने के लिए तैयार हूं।' हत्यारों के रूपक का प्रयोग हमें बताता है कि सुधार के शुरूआती दौर में सिंह किन हालात में काम कर रहे थे।

आज हम यह मानकर चलते हैं कि सुधारों को गति देने के लिए एक मजबूत सरकार की आवश्यकता है जो राजनीतिक रूप से एकजुट हो और जिसके पास सदन में बहुमत हो। परंतु 1991 में दोनों में से कोई बात नहीं थी। बदलाव की इस प्रक्रिया के दौरान उनके साथ कोई राजनीतिक साझेदार नहीं था। उस समय के संसदीय रिकॉर्ड से यह बात स्पष्ट होती है। कांग्रेस के भीतर और बाहर दोनों जगह मौजूद वाम धड़े तथा दक्षिणपंथी धड़े को वैश्विक खुलेपन को लेकर गहरी आशंकाएं थीं। मध्य मार्गी जिनमें से अधिकांश कांग्रेस के भीतर थे, और तत्कालीन प्रधानमंत्री पी वी नरसिंह राव जिनका नेतृत्व कर रहे थे, उन्हें वृद्धि की कोई खास परवाह नहीं थी बल्कि अपने बचाव की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि राव सरकार में शामिल लोगों ने भी हर अंदरूनी बदलाव का विरोध किया।

ऐसे समय में जबकि राव की प्रतिष्ठा को धूमिल करने की कोशिशें भारतीय राजनीतिक बहस में लगातार चल रही हैं, यह याद रखना आवश्यक है कि प्रधानमंत्री सुधार कार्यक्रमों के समर्थक नहीं थे और बल्कि आसन्न संकट बीतने के बाद उन्होंने कई अवसरों पर उसे त्यागने की कोशिश भी की। उन्होंने 1996 के चुनाव प्रचार में इसका जिक्र तक नहीं किया और इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि उनकी सरकार ने नेहरू-गांधी की कांग्रेस के प्रशासन और नीतियों को जारी रखा। आर्थिक प्रगति के लिए बहुमत वाली मजबूत सरकार की हिमायत करने वालों को यह बात याद रखनी चाहिए कि राव के कार्यकाल में जिस समय ज्यादा सुधार हुए उस समय सरकार अल्पमत में थी। हालांकि दो या तीन

साल बाद उसने बहुमत हासिल कर लिया।

राजनीतिक वर्ग भले ही शुरूआती दिनों में सुधार प्रक्रिया के साथ नहीं रहा हो लेकिन सिंह को ऐसे तमाम लोगों का समर्थन हासिल था जो देश के छद्म समाजवाद के लिए काम करते थे। आधारशिला रखी जा चुकी थी और सहमति बन चुकी थी। खुद उस समय राव ने कहा था, 'समाचार पत्रों में अनगिनत बार जिन उपायों के बारे में लिखा गया। महीनों-महीनों तक जिनके बारे में चर्चा की गई। पैनल परिचचाएं होती रहीं। तो ऐसा नहीं है कि ये उपाय रातोरात आसमान से टपक आए, हमें आए हुए तो तीन-चार दिन भी नहीं हुए थे। हम इतने सारे पर्चे कैसे तैयार करते? पर्चे पहले से तैयार थे।' आज जब मैं ऐसे विषयों पर अंतहीन और बेतुकी पैनल चर्चा में बैठता हूं, जो राजनीतिक रूप से असंभव नजर आते हैं, तो मैं राव के शब्दों को याद करके खुद को आश्वस्त करता हूं और उम्मीद करता हूं कि भविष्य में किसी प्रधानमंत्री के पास यह अवसर होगा कि वह ऐसी पैनल चचाओं को सुधार के लिए प्रयोग में लाएगा।

बहरहाल 1991 में सिंह की तरह टेक्नोक्रेट जो काम नहीं कर सकते हैं वह है एक राजनीतिक आंदोलन तैयार करना जो उनके विचारों का समर्थन करे। सुधारों को, जैसा कि उनके विरोधी अक्सर शिकायत करते रहे, ह्यचोरी सेह्न अंजाम दिया गया। दरअसल विरोधी यह कहना चाहते थे कि राजनीतिक दल यह कहते हुए जनता के पास नहीं गए कि आप हमें चुनाव जिताइए ताकि हम हालात बदल सकें। उनका यह कहना गलत भी नहीं है।

अंततः इस बात ने सिंह के प्रधानमंत्रित्व की कामयाबी को सीमित कर दिया। उन्होंने भारत को वित्तीय संकट से उबारा लेकिन क्वांटिटेटिव ईजिंग के समय उच्च घाटे ने इसे बेकार कर दिया क्योंकि ईंधन कीमतों के कारण मुद्रास्फीति में इजाफा हुआ। कोई प्रतिबद्ध बैंक या सुधार समर्थक मतदाता उनके बचाव के लिए नहीं आए। घाटे के कारण बढ़ी महंगाई से नाराज भारतीय मतदाताओं ने उन्हें चुनाव में पराजित किया। उनके उत्तराधिकारी ने इससे सबक लिया और नरेंद्र मोदी की आर्थिक नीति की इकलौती प्राथमिकता रही है कीमतों को नियंत्रण में रखना।

आप कभी इस बात को लेकर निश्चित नहीं हो सकते कि राजनेता किन बातों पर यकीन करते हैं लेकिन आप उनकी कही बातों को लेकर सुनिश्चित हो सकते हैं। टेक्नोक्रेट शायद जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं लेकिन अक्सर सिंह की तरह वे प्रभावी संचार नहीं कर पाते। इसके बावजूद सिंह की प्राथमिकताएं- सामाजिक एकीकरण, उच्च विकास द्वारा जनकल्याण में सुधार और देश के विनिर्माण में सुधार आदि को अभी भी देश की प्राथमिकता होना चाहिए।

मोदी सरकार की सबसे अहम पहलों मसलन डिजिटल भुगतान से लेकर निर्यात आधारित विनिर्माण तक का उभार सिंह की प्रारंभिक पहलों पर केंद्रित है। सिंह सरकार की कई प्राथमिकताएं मसलन मुक्त व्यापार आदि हाशिए पर चली गईं हैं। परिणामस्वरूप भारत को मुश्किलों से जूझना पड़ा है। वर्ष 2010 में जब दुनिया के नेता 2008 के संकट पर साझा प्रतिक्रिया को लेकर मिले तो बराक ओबामा ने सिंह के योगदान के बारे में कहा था कि जब वह बोलते हैं तो हम सुनते हैं। देश में उस कथन का उपहास किया गया। क्या वाकई सिंह मौन रहने वाले प्रधानमंत्री थे? इसका निर्णय शायद इतिहास करेगा। बहरहाल शायद सिंह बहुत कम नहीं बोलते थे लेकिन भारत ने बहुत कम सुना। ●

»लतित गर्ग
*लेखक एवं स्तंभकार*

# उदारीकरण एवं आर्थिक सुधार के महासूर्य का अस्त

भारत के जानेमाने अर्थशास्त्री, प्रशासक, कद्दावर नेता, दो बार प्रधानमंत्री रह चुके डॉ. मनमोहन सिंह का 92 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनके निधन से आर्थिक सुधार का महासूर्य अस्त हो गया। भारतीय राजनीति में एक संभावनाओं भरा राजनीति सफर ठहर गया। यह राष्ट्र के लिए एक गहरा आघात है। एक अपूरणीय क्षति है। वे निश्चित ही आर्थिक सुधारों एवं उदारीकरण के नींव के पत्थर थे, मील के पत्थर थे। वे आर्थिक सुधार की बुलंद आवाज थे। उन्हें आर्थिक सुधार, भारत में वैश्विक बाजार व्यवस्था एवं उदारीकरण का जनक कहा जा सकता है। जिन्होंने न केवल देश-विदेश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाकर, अमिट यादों को जन-जन के हृदय में स्थापित कर हमसे जुदा हो गये हैं। डॉ. सिंह यह नाम भारतीय इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिससे एक सशक्त राष्ट्रनायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, भारत में नये अर्थ के निमार्ता, कुशल प्रशासक, दार्शनिक के साथ-साथ भारत को आर्थिक महाशक्ति का एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग है, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, दार्शनिक और चिंतक हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ. सिंह के निधन पर कह,-''जीवन के हर क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल करना आसान बात नहीं है। एक नेक इंसान के रूप में, एक विद्वान अर्थशास्त्री के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।''

दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह ने पांच दशक तक सक्रिय राजनीति की, अनेक पदों पर रहे, केंद्रीय वित्त मंत्री व प्रधानमंत्री- पर वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। वे भारत के इतिहास में उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं जिन्होंने सिर्फ अपने नाम, व्यक्तित्व और करिश्मे के बूते पर न केवल सरकार चलाई बल्कि एक नयी सोच की राजनीति को पनपाया, पारदर्शी एवं सुशासन को सुदृढ़ किया। विलक्षण प्रतिभा, राजनीतिक कौशल, कुशल नेतृत्व क्षमता, बेवाक सोच, निर्णय क्षमता, दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता के कारण कांग्रेस के सभी नेता उनका लोहा मानते रहे, उनके लिये वे मार्गदर्शक ही नहीं, प्रेरणास्रोत भी है। वे बेहद नम्र इंसान थे और वह अहंकार से कोसों दूर थे। उनके प्रभावी एवं बेवाक व्यक्तित्व से भारतीय राजनीति एवं लोकतांत्रिक संस्थान चमकते रहे हैं। डॉ. सिंह ने भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजारों के लिए खोलने के लिए उदारीकरण सुधार लागू किए। साथ ही, उन्होंने लाइसेंस राज समाप्त कर, निजीकरण और राज्य नियंत्रण में कमी की। डॉ. सिंह द्वारा विदेशी निवेश को आकर्षित करने के साथ निर्यात को प्रोत्साहित किया गया।

डॉ. सिंह का जन्म ब्रिटिश भारत के पंजाब में 26 सितम्बर 1932 को हुआ था। उनकी जन्मतिथि भी 26 एवं निधन तिथि भी 26 एक संयोग ही कहा जाएगा। उनकी माता का नाम अमृत कौर और पिता का नाम गुरुमुख सिंह था। देश के विभाजन के बाद सिंह का परिवार भारत चला आया। डॉ. सिंह की पत्नी का नाम गुरशरण कौर है, जो कि एक गृहिणी और गायिका भी हैं। उनके तीन बेटियां हैं। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। बाद में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये। जहाँ से उन्होंने पीएच. डी. की। तत्पश्चात उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी. फिल. भी किया। डॉ॰ सिंह ने अर्थशास्त्र के अध्यापक के तौर पर काफी ख्याति अर्जित की। वे पंजाब विश्वविद्यालय और बाद में प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकनामिक्स में प्राध्यापक रहे। इसी बीच वे संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन सचिवालय में सलाहकार भी रहे और 1987 तथा 1990 में जेनेवा में साउथ कमीशन में सचिव भी रहे। 1971 में डॉ॰ सिंह भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्रालय में आर्थिक सलाहकार के तौर पर नियुक्त किये गये। इसके तुरन्त बाद 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया। इसके बाद के वर्षों में वे योजना आयोग के उपाध्यक्ष, रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमन्त्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष भी रहे हैं। भारत के आर्थिक इतिहास में हाल के वर्षों में सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब डॉ॰ सिंह 1991 से 1996 तक भारत के वित्त मन्त्री रहे। डॉ. सिंह ने भारत के 13वें प्रधानमंत्री के रूप में लगातार दो कार्यकाल पूरे किए हैं।

पहले कार्यकाल के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम लागू किया। वहीं सूचना का अधिकार अधिनियम भी उनके कार्यकाल में आया। इसके अतिरिक्त उन्हें ऐतिहासिक भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता पर हस्ताक्षर के लिए भी जाना जाता है। दूसरे कार्यकाल में उन्होंने बुनियादी ढांचे के विकास और सामाजिक कल्याण योजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि, इस दौरान उन्हें 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला और राष्ट्रमंडल खेल घोटाले जैसे विवादों का भी सामना करना पड़ा। यह बात हम सभी जानते हैं कि उन्हें मौन पीएम भी कहा जाता था, हालांकि उन्होंने इस पर चुप्पी तोड़ते हुए सार्वजनिक रूप से इसका सटीक जवाब भी दिया था। विकास के प्रति डॉ. सिंह की प्रतिबद्धता और उनकी अनेक उपलब्धियों को उन अनेक सम्मानों के माध्यम से मान्यता मिली है जो उन्हें प्रदान किए गए हैं। इनमें 1987 में पद्म विभूषण, 1993 में वित्त मंत्री के लिए यूरो मनी पुरस्कार, 1993 और 1994 में वित्त मंत्री के लिए एशिया मनी पुरस्कार और 1995 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस का जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी पुरस्कार शामिल हैं। जवाहर लाल नेहरू के बाद मनमोहन दूसरे ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने प्रधानमंत्री के तौर पर दो कार्यकाल पूरा किया। उन्हें अपने फैसलों के लिए काफी अडिग माना जाता है।

2004 से 2014 तक, भारत दसवें स्थान से उठकर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया, जिससे लाखों लोगों का जीवन स्तर सुधरा और गरीबी में कमी आई। डॉ. सिंह के दृष्टिकोण में केवल उच्च विकास नहीं, बल्कि समावेशी विकास और उस विश्वास की भी अहमियत थी जो सभी को ऊपर उठाने वाली लहरें उत्पन्न कर सके। यह विश्वास उनके द्वारा पारित किए गए विधेयकों में दिखाई देता है, जिनसे नागरिकों को भोजन का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, काम का अधिकार और सूचना का अधिकार सुनिश्चित हुआ। डॉ. सिंह की अधिकार-आधारित क्रांति ने भारतीय राजनीति में एक नए युग की शुरूआत की, जो समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर प्रदान करने का संकल्प था। प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल में समृद्धि और विकास की कहानी लिखी गई। जुलाई 1991 में, डॉ. सिंह ने अपने बजट भाषण के अंत में कहा था, 'भारत का दुनिया की प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में उदय एक ऐसा विचार है, जिसका समय अब आ चुका है।'

डॉ. सिंह को न केवल उनके विजन के लिए जाना जाता है, जिसने भारत को एक आर्थिक महाशक्ति बनाया, बल्कि उनकी कड़ी मेहनत और उनके विनम्र, मृदुभाषी व्यवहार के लिए भी जाना जाता है। वह एक ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्हें न केवल उन छलांगों और सीमाओं के लिए याद किया जाएगा, जिनसे उन्होंने भारत को आगे बढ़ाया, बल्कि एक विचारशील और ईमानदार व्यक्ति के रूप में भी याद किया।

डॉ. सिंह के राजनीतिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आये, जब सार्वजनिक तौर पर उनकी प्रतिष्ठा और उनके पद को कमतर दिखाने की कोशिश की गई। लेकिन फिर भी देश के लिए जीने और मरने की कसम खाने वाले डॉ. सिंह ने देश हित में अपमान के ये घूंट भी चुपचाप पी लिए। डॉ. मनमोहन सिंह को एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर भी कहा गया। 2019 में इसी नाम से फिल्म आई। यह संजय बारू की किताब पर बनी थी। डॉ. सिंह देशहित में नीतियां बनाने एवं राजनीति की नयी दिशाएं तलाशने में माहिर थे, उनका जीवन सफर राजनीतिक आदर्शों की ऊंची मीनार हैं, राजनीति का एक प्रकाश है। उनका निधन एक युग की समाप्ति है। वे गहन मानवीय चेतना के चितेरे जुझारु, नीडर, साहसिक एवं प्रखर व्यक्तित्व थे। बेशक डॉ. सिंह अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन अपने सफल राजनीतिक जीवन के दम पर वे हमेशा भारतीय राजनीति के आसमान में एक सितारे की तरह टिमटिमाते रहेंगे। भारतीय राजनीति में सादगी, कर्मठता, ईमानदारी एवं राजनीतिक कौशल से अपनी जगह बनाने वाले एवं निरन्तर चमत्कार घटित करने वाले डॉ. सिंह अपनी प्रभावी एवं शालीन भूमिका से देश की आर्थिक मजबूती की एक बड़ी उम्मीद बने थे। उनका समूचा जीवन राष्ट्र को समर्पित एक जीवन यात्रा का नाम है- आशा को अर्थ देने की यात्रा, ढलान से ऊंचाई की यात्रा, गिरावट से उठने की यात्रा, मजबूरी से मनोबल की यात्रा, सीमा से असीम होने की यात्रा, जीवन के चक्रव्यूहों से बाहर निकलने की यात्रा। मन बार-बार उनकी तड़प को प्रणाम करता है। उस महापुरुष के मनोबल को प्रणाम करता है! ●

# नम्रता, कर्मठता और प्रतिबद्धता मतलब मनमोहन सिंह

हेमेन्द्र क्षीरसागर

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डां मनमोहन सिंह ने दुनिया को अलविदा कह दिया। एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले डॉ सिंह ने अपने जीवन में शिक्षा, अर्थशास्त्र और राजनीति में असाधारण उपलब्धियां हासिल कीं। डॉ मनमोहन सिंह ने 1948 में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (यूके) से 1957 में अर्थशास्त्र में प्रथम श्रेणी ऑनर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1962 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के नफील्ड कॉलेज से अर्थशास्त्र में डिलिट की उपाधि अर्जित की। शिक्षा के प्रति उनका लगाव उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अध्यापन की ओर ले गया।

अनुकरणीय, भारतीय राजनीति और आर्थिक सुधारों में उनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा। 1971 में डॉ. सिंह भारत सरकार से जुड़े और वाणिज्य मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार बने। 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय का मुख्य आर्थिक सलाहकार नियुक्त किया गया। इसके बाद उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें वित्त मंत्रालय के सचिव, योजना आयोग के उपाध्यक्ष, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष जैसे पद शामिल हैं।

समर्पण, 1991 से 1996 तक, डॉ. सिंह भारत के वित्त मंत्री रहे। इस दौरान उन्होंने आर्थिक सुधारों की एक व्यापक नीति लागू की, जिसे विश्वभर में सराहा गया। इन सुधारों ने भारत को आर्थिक संकट से उबारकर एक नई दिशा दी। डॉ. मनमोहन सिंह 1991 में पहली बार राज्यसभा के सदस्य बने। उन्होंने असम का प्रतिनिधित्व पांच बार किया और 2019 में राजस्थान से राज्यसभा सदस्य बने। 1998 से 2004 तक, जब भारतीय जनता पार्टी सत्ता में थी, डॉ. सिंह राज्यसभा में विपक्ष के नेता रहे। उन्होंने 1999 में दक्षिण दिल्ली से लोकसभा चुनाव भी लड़ा, लेकिन सफलता नहीं मिली।

सेवापथ, 2004 के आम चुनावों के बाद 22 मई को उन्हें भारत के चौदहवें प्रधानमंत्री बने। उन्होंने 2009 में दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की

**डॉ. मनमोहन सिंह को दिए गए कई पुरस्कारों और सम्मानों में से सबसे प्रमुख भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्म विभूषण (1987) था। इसके अलावा उन्हें भारतीय विज्ञान कांग्रेस का जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी पुरस्कार (1995), एशिया मनी अवार्ड (1993 और 1994), यूरो मनी अवार्ड (1993), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (1956) का एडम स्मिथ पुरस्कार, कैम्ब्रिज के सेंट जॉन्स कॉलेज में विशिष्ट प्रदर्शन के लिए राइट पुरस्कार (1955) भी मिला था।**

शपथ ली और 2014 तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की और देश के विकास में अहम भूमिका निभाई। वह जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और नरेंद्र मोदी के बाद चौथे सबसे लंबे समय तक पीएम पद पर रहने वाले प्रधानमंत्री थे। अभिभूत, मनमोहन सिंह भारत के पहले सिख प्रधानमंत्री भी थे। लेखक, राजनीतिज्ञ, विचारक और विद्वान के रूप में प्रसिद्ध डॉ. मनमोहन सिंह अपनी नम्रता, कर्मठता और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते रहे।

स्तुत्य, अपने सार्वजनिक जीवन में विभिन्न पुस्तकें के डॉ. मनमोहन सिंह को दिए गए कई पुरस्कारों और सम्मानों में से सबसे प्रमुख भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्म विभूषण (1987) था। इसके अलावा उन्हें भारतीय विज्ञान कांग्रेस का जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी पुरस्कार (1995), एशिया मनी अवार्ड (1993 और 1994), यूरो मनी अवार्ड (1993), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (1956) का एडम स्मिथ पुरस्कार, कैम्ब्रिज के सेंट जॉन्स कॉलेज में विशिष्ट प्रदर्शन के लिए राइट पुरस्कार (1955) भी मिला था। उन्हें जापानी निहोन किजई शिम्बुन एवं अन्य देशों द्वारा सम्मानित किया गया था। डॉ. मनमोहन सिंह को कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड तथा अन्य कई विश्वविद्यालयों द्वारा मानद उपाधियां भी प्रदान की गई थीं। वाहेगुरु जी उनकी आत्मा को सद्गति और देशवासियों को यह दुःख सहने की शक्ति दें। ●

प्रियंका सौरभ
*लेखिका एवं स्तंभकार*

# फिर संकट में हरियाणा की 'सुकन्या समृद्धि'

कन्या भ्रूण हत्या के लिए बदनाम हरियाणा का लिंगानुपात (एसआरबी यानी जन्म के समय लिंगानुपात) राज्य सरकार के-हाल ही में जारी आंकड़ों के अनुसार आठ साल के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। 2024 के पहले 10 महीनों यानी अक्टूबर तक लिंगानुपात 905 दर्ज किया गया। यह पिछले साल से 11 अंक कम है। वर्ष 2016 में इससे कम लिंगानुपात दर्ज किया गया था। वर्ष 2019 में 923 के उच्चतम स्तर पर पहुंचने के बाद वर्ष 2024 में हरियाणा में जन्म के समय लिंगानुपात घटकर 910 रह गया, जो आठ वर्षों में सबसे कम है। इन आंकड़ों ने हरियाणा के कार्यकर्ताओं और नागरिक समाज के सदस्यों को चिंतित कर दिया है, हालांकि अधिकारियों ने नवीनतम आंकड़ों को 'मामूली उतार-चढ़ाव' करार दिया है। वर्ष 2021 में प्रकाशित राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार सर्वेक्षण-5 (एनएफएचएस-5) के अनुसार भारत में जन्म के समय कुल लिंगानुपात 929 था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुशंसित आदर्श लिंगानुपात 950 से हरियाणा बहुत दूर है। राज्य आज तक इस आंकड़े को हासिल नहीं कर पाया है। लिंगानुपात में गिरावट का मतलब है कि राज्य में लड़कियों को गर्भ में ही मार दिया जा रहा है। आर्थिक प्रगति के बावजूद हरियाणा में बड़ी संख्या में लोग अभी भी बेटों को प्राथमिकता देते हैं। जब तक यह सोच नहीं बदलेगी, लिंगानुपात को लेकर स्थिति में सुधार नहीं होगा। राज्य के लोगों में लड़कों को प्राथमिकता दिए जाने के कारण हरियाणा के पड़ोसी राज्यों में अल्ट्रासाउंड संचालकों और गर्भपात केंद्रों का धंधा खूब फल-फूल रहा है। इन राज्यों में ज्यादा सख्ती नहीं है। हरियाणा से लोग दलालों के जरिए यहां पहुंचते हैं। और जांच व गर्भपात करवाते हैं। अल्ट्रासाउंड संचालक पैसे के लिए गर्भ में पल रहे भ्रूण की गलत जानकारी भी देते हैं। ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जब लड़कों को लड़की बताकर गर्भपात करवा दिया गया।

अल्ट्रासाउंड करने वाले और गर्भपात करने वाले एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पिछले एक दशक में इस पैमाने पर उल्लेखनीय सुधार करने वाले राज्य के लिए यह एक झटका है। 2014 में हरियाणा में लिंगानुपात सिर्फ 871 था। इस पर देशभर में भारी आक्रोश फैल गया और नागरिक समाज संगठनों, राज्य सरकार और केंद्र ने स्थिति को सुधारने के लिए ठोस प्रयास किए। हरियाणा में गिरते लिंगानुपात को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2015 में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान शुरू किया था। अभियान के बाद राज्य का लिंगानुपात सुधर कर 2019 में 923 पर पहुंच गया। लेकिन 2020 में इसमें फिर से गिरावट शुरू हो गई, जो अब तक जारी है। हालांकि, तब से लिंगानुपात में एक बार फिर से गिरावट देखी गई है, यह झटका ऐसे समय में आया है जब राज्य की महिलाएं अंतरराष्ट्रीय मंचों सहित खेलों में और साथ ही शिक्षाविदों में भी

## स्वागत है नव-वर्ष तुम्हारा
### अशोक पटेल 'आशु'

स्वागत है नव-वर्ष तुम्हारा
मंगल-बेला है अति प्यारा।

नव-किरण है नव प्रभात
नव-दिवस की है शुरुआत।

रवि की दमकी है कांतियां
फैल रही है स्वर्ण-रश्मियां।

स्वागत करने को है मगन
खग-वृन्द बंदी ये जन-जन।

चहुँ-दिसि है प्रसन्नता छाई
कण-कण में है रंगत आई।

बागों में है फूल खिल आए
कलियां भी देखो मुस्काई।

नव-वर्ष देखो अब आया है
नई आशा मन मे समाया है।

नए संकल्पों का संचार करें
नए उम्मीदों पर ऐतबार करें।

नव-वर्ष में कुछ नया करेंगे
मन नए प्रीत के रंग भरेंगे।

## ग़ज़ल
### मो. जैनुल हक़ अरमान

सरे बज़्म मुझको सज़ा दीजिएगा
मगर मैं न आऊं तो क्या कीजिएगा

ख़ामोशी तुम्हारी समझ लूं मुक़द्दर
सबब दिल्लगी का बता दीजिएगा

ज़रूरत पड़े रोशनी की कभी जो
तो मसकन को मेरे जला दीजिएगा

खुदारा कभी मुँह न मोड़ेंगे हक़ से
भटकते को रस्ता बता दीजिएगा

कभी लड़खड़ाते जो आ जाए अरमाँ
तो जख़्मों पर मरहम लगा दीजिएगा।

उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं।

2014 और 2019 के बीच हुई बढ़त प्री-कॉन्सेप्शन एंड प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्निक्स एक्ट, 1994 (पीएनडीटी एक्ट) के सख्त प्रवर्तन के साथ-साथ गहन जागरूकता अभियान के कारण हुई। इसका उद्देश्य हरियाणा में बड़े पैमाने पर जन्मपूर्व लिंग चयन और कन्या भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाना था, साथ ही साथ सामाजिक दृष्टिकोण को बदलना था, जिसमें परिवार लड़कों को पसंद करते थे और लड़की को बोझ के रूप में देखते थे। हरियाणा में बच्ची के जन्म पर 21, 000 रुपए की एकमुश्त राशि प्रदान करने और सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से लड़कियों के लिए बैंक खाते खोलने के बावजूद, बालिकाओं को बोझ के रूप में क्यों देखा जाता है। कार्यकताओं का कहना है कि नजरिया बदलने के लिए और अधिक काम करने की जरूरत है और हाल के वर्षों में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के उद्देश्य से बनाए गए कानूनों का क्रियान्वयन ढीला पड़ गया है।

लड़कों की पसंद के कारण राज्य में लड़कियों की चाहत कम हो गई है क्योंकि उनके परिवारों को डर है कि वे भागकर शादी करने के कारण भविष्य में बदनामी का कारण बन सकती हैं। उनके अनुसार, लड़कियाँ पैसा और संपत्ति कमाकर अपने परिवार की मदद नहीं कर सकती हैं। इसके विपरीत, परिवारों को उनकी शादी में दहेज देना होगा। ऐसी सोच के कारण हरियाणा में लड़कों को शादी के लिए लड़कियाँ नहीं मिल रही हैं। हरियाणा के अधिकांश गांवों में आमतौर पर ऐसी समस्या है। कई परिवारों में अगर लड़कियों का पालन-पोषण ठीक से नहीं किया जाता है तो वे कुपोषण का शिकार हो जाती हैं और कुछ समय बाद उनकी मौत भी हो जाती है। हरियाणा की आर्थिक तरक्की के बावजूद यहां की बड़ी आबादी की मानसिकता अब भी नहीं बदली है। जब तक लड़कों और लड़कियों में भेदभाव की यह मानसिकता नहीं बदलेगी, हालात बेहतर नहीं होंगे।

# आत्महत्याओं का कलंक

रमेश सर्राफ धमोरा
*लेखक, स्तंभकार*

भारत में आए दिन आत्महत्या की घटनाएं घटित होती रहती है। यहां हर चार मिनट में एक आत्महत्या की जाती है। यहां शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता होगा जब किसी न किसी इलाके से गरीबी, भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगारी, कर्ज जैसी तमाम आर्थिक तथा अन्य सामाजिक दुश्वारियों से परेशान लोगों के आत्महत्या करने की खबरें न आती हों। आत्महत्या करना सभ्य समाज के माथे पर एक कलंक के समान है। आत्महत्या में व्यक्ति स्वयं को दंडित करते हुए अपनी जान दे देता है। ऐसा घिनोना कार्य कोई व्यक्ति तभी करता है जब वह चारों तरफ से निराश हो जाता है।

आत्महत्या करने का सबसे बड़ा कारण आर्थिक पक्ष को माना जाता है। उसके बाद मानसिक, पारिवारिक व अन्य बहुत से कारण हो सकते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर होने पर व्यक्ति स्वयं को गिरा हुआ महसूस करता है और अंत में वह आत्महत्या करने जैसा घिनौना कदम उठा लेता है। हम आए दिन अखबारों में पढ़ते हैं कि बहुत से परिवारों ने आर्थिक कर्म से सामूहिक आत्महत्या कर अपने जीवन लीला समाप्त कर ली। बहुत से किसान अपना खेती का कर्ज नहीं चुका पाने के कारण भी बड़ी संख्या में आत्महत्या करते हैं। आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं को रोकने के लिए सरकार ने कानून तो बना दिया मगर उसका प्रभाव समाज पर पड़ता दिखाई नहीं दे रहा है। प्रेम में असफल होने पर भी बड़ी संख्या में नवयुवक युवतियां आत्महत्या कर अपने जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं।

आंकड़ों की दृष्टि से भारत आत्महत्याओं के मामले में दुनिया में सिरमौर बनता जा रहा है। आत्महत्या रोकने की दिशा में अब तक सरकारी स्तर पर जितने भी प्रयास हुए हैं वह सब नाकाम साबित हुए हैं। सरकारी आंकड़ों में जितनी आत्महत्या की संख्या दशार्यी जाती है उससे कई गुना अधिक लोग आत्महत्या कर अपनी जान गंवा रहे हैं। मगर आत्महत्या की घटनाओं को रोकने की कोई सार्थक पहल नहीं हो पाई है। खेती के लिए लिया गया कर्ज.नहीं चुका पाने के कारण भी बड़ी संख्या में किसान आत्महत्या कर रहे हैं। मगर सरकारी बैंकों, साहूकारों के कर्ज से परेशान किसान आज भी आत्महत्या कर रहें हैं। उन्हें रोकने की दिशा में भी सरकार ने कोई विशेष पहल नहीं की है। बैंक आज भी किसानों से जबरदस्ती कर्ज वसूली के लिए उनकी जमीने नीलाम कर रहे हैं। इसी के चलते किसान मजबूर होकर आत्महत्या जैसे कदम उठाने को मजबूर हो रहे हैं।

भारत में आत्महत्या एक प्रमुख समस्या है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट के अनुसार 2022 में 171,000 आत्महत्याएं की गईं थी जो 2021 की तुलना में 4.2 प्रतिशत अधिक थी । प्रति एक लाख की जनसंख्या पर आत्महत्या की दर 2022 में बढ़कर 12.4 हो गई जो आंकड़ो के हिसाब से सर्वोच्च थी। 2022 के दौरान आत्महत्याओं में 2018 की तुलना में 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई और भारत में दुनिया में सबसे अधिक आत्महत्याएं हुईं। वैश्विक आत्महत्या मौतों में भारत के आंकड़े 1990 में 25.3 प्रतिशत से बढ़कर 2016 में महिलाओं में 36.6 प्रतिशत और पुरुषों में 18.7 प्रतिशत से बढ़कर 24.3 प्रतिशत हो गये। 2016 में 15-29 वर्ष और 15-39 वर्ष के आयु समूहों में आत्महत्या मृत्यु का सबसे आम कारण था। दैनिक वेतन भोगी लोग आत्महत्या पीड़ितों का 26 प्रतिशत हिस्सा थे। जो आत्महत्या के आंकड़ों में सबसे बड़ा समूह था।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट के अनुसार 2022 में राज्यों में सबसे अधिक आत्महत्याएं महाराष्ट्र (22,746) में हुईं। इसके बाद तमिलनाडु में 19,834 और मध्य प्रदेश में 15,386 आत्महत्याएं हुईं। चार राज्यों महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल को मिलाकर देश में हुयी कुल आत्महत्याओं में से लगभग आधी उक्त प्रदेशों में हुयी थी। नागालैंड में केवल 41 आत्महत्याएं हुईं। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और कर्नाटक में 2017 से 2019 के दौरान भारत में लगभग आधी आत्महत्याएं हुयी हैं। केंद्र शासित प्रदेशों में दिल्ली में सबसे अधिक आत्महत्याएं हुईं, उसके बाद पुडुचेरी का स्थान रहा। बिहार और पंजाब में 2018 की तुलना में 2019 में आत्महत्याओं के प्रतिशत में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुयी थी।

एनसीआरबी की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले पांच सालों में आत्महत्या

की घटनाओं का ग्राफ लगातार बढ़ता हुआ दिखता है। 2017 में देश में 1,29,887 आत्महत्याओं की मामले रिकॉर्ड किए गए थे। तब आत्महत्या दर 9.9 प्रतिशत थी। आत्महत्या दर प्रति लाख आबादी पर होने वाली आत्महत्या की घटनाओं को दशार्ता है। 2017 के आंकड़ों के मुताबिक देश में प्रति लाख 9.9 आत्महत्या की घटनाएं दर्ज की गई थी। 2018 में आत्महत्या दर में इजाफा हुआ और ये बढ़ कर 10.2 पर पहुंच गयी थ। तब देश में 1,34,516 आत्महत्या के मामले दर्ज हुए थे। 2019 में कुल 1,39,123 लोगों ने तो 2020 में ये संख्या बढ़कर 1,53,052 हो गई थी। 2021 में आत्महत्या के 1,64,033 मामले हुये थे।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के तुलनात्मक आंकड़े बताते हैं कि भारत में आत्महत्या की दर विश्व आत्महत्या दर के मुकाबले बढ़ी है। भारत में पिछले दो दशकों की आत्महत्या दर में एक लाख लोगों पर 2.5 फीसद की वृद्धि हुई है। आज भारत में 37.8 फीसद आत्महत्या करने वाले लोग 30 वर्ष से भी कम उम्र के हैं। दूसरी ओर 44 वर्ष तक के लोगों में आत्महत्या की दर 71 फीसद तक बढ़ी है। 2018 में पारित हुए मेंटल हेल्थ केयर एक्ट 2017 के तहत भारत में आत्महत्या के अपराधीकरण का कानून खत्म करते हुए मानसिक बीमरियों से जूझ रहे लोगों को मुफ्त मदद का प्रावधान किया गया है। इस नए कानून के तहत आत्महत्या का प्रयास करने वाले किसी भी व्यक्ति को मदद पहुंचाना, इलाज करवाना और पुनर्वास देना सरकार की जिम्मेदारी होगी।

भारत के साथ-साथ पूरे विश्व में मानसिक स्वास्थ से जूझ रहे लोगों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि इस मामले में अभी तक विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से कोई ठोस बयान जारी नहीं किया गया है। लेकिन विश्व के अलग-अलग हिस्सों में हो रहे आत्महत्याओं के बढ़ते मामलों पर तुरंत संज्ञान लेने की जरूरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में हर साल लगभग आठ लाख लोग आत्महत्या करते हैं। जिनमें से 21 फीसदी आत्महत्याएं भारत में होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में सरकारों को सलाह दी गई है कि आत्महत्या का मीडिया ट्रायल नहीं हो। देश में अल्कोहल को लेकर ठोस नीति बनाई जाए। आत्महत्या के संसाधनों पर रोक लगाते हुए आत्महत्या के प्रयास करने वालों की उचित देखभाल की जाए।

आत्महत्या जैसे मामलों को रोकने के लिए समाज के हर एक जिम्मेदार व्यक्ति को सामने आने की जरूरत है। जिससे ज्यादा-से-ज्यादा लोग इस बात से जागरूक हो सकें और आत्महत्या जैसे मामलों में कमी लाई जा सके। सभी को इस बात को समझने की जरूरत है कि आज की इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में तनाव की स्थिति कभी कम तो कभी ज्यादा बनी रहती है। परंतु इसका समाधान अपनी जिन्दगी को समाप्त कर लेना नहीं हैं। जानबूझकर खुद को मारना आत्महत्या या ़फेलो डे सेह्व के रूप में जाना जाता है। भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा 309 आत्महत्या से संबंधित है। इसमें कहा गया है कि जो कोई भी आत्महत्या का प्रयास करेगा और इस तरह के अपराध को अंजाम देगा उसे एक वर्ष से अधिक की अवधि के लिए कारावास, जुमार्ना या दोनों से दंडित किया जाएगा।

विशेषज्ञों का कहना है कि आत्महत्या के मामलों के अध्ययन के बाद सरकार और गैर-सामाजिक संगठनों को मिल कर एक ठोस पहल करनी होगी। इसके लिए जागरुकता अभियान चलाना होगा। ऐसे मामलों पर अंकुश लगाने की ठोस रणनीति के बिना देश में बढ़ती आत्महत्यों पर रोक लगाना मुश्किल होगा। सरकार को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने वाले आर्थिक-सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों की गहराई से पड़ताल करनी चाहिये। साथ ही ऐसे उपाय करे कि लोग अपनी जीवनलीला समाप्त करने का विचार ही दिमाग में न लाए। ●

# प्राकृतिक खेती और पर्यावरण

सुनील कुमार महला
*साहित्यकार, पत्रकार*

आज भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व धीरे-धीरे एक बार पुनः रसायन मुक्त प्राकृतिक और परंपरागत खेती की ओर बढ़ रहा है। भारत सदियों सदियों से विश्व का एक बड़ा कृषि प्रधान देश रहा है और आज भी है और यहां प्राकृतिक खेती होती रही है। कहना गलत नहीं होगा कि हरित क्रांति से पहले भारत परंपरागत और प्राकृतिक खेती करता रहा है। हरित क्रांति के दौरान कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग बढ़ा और आज एक बार फिर भारत परंपरागत और प्राकृतिक खेती की ओर कदम बढ़ा रहा है। वास्तव में प्राकृतिक खेती स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों जैसे कि देसी गाय का मल-मूत्र, विविधता के माध्यम से कीटों के प्रबंधन के साथ ही खेती से विभिन्न सिंथेटिक रासायनिक आदानों का बहिष्करण( रसायन मुक्त कृषि पद्धति ) किए जाने पर आधारित एक साधारण कृषि पद्धति है। कहना गलत नहीं होगा कि हाल ही में जो मिशन भारत में शुरू किया गया है इस मिशन का मुख्य मकसद किसानों को रासायनिक खेती से दूर करके प्राकृतिक खेती( स्थानीय पशुधन, प्राकृतिक तरीके और विविध फसल प्रणालियों का इस्तेमाल ) की ओर ले जाना है। इसी क्रम में भारत सरकार ने रसायन मुक्त और जलवायु-स्मार्ट कृषि को बढ़ावा देने के लिये एक अलग तथा स्वतंत्र योजना के रूप में प्राकृतिक खेती हेतु राष्ट्रीय मिशन (एनएमएनएफ) शुरू किया है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में 25 नवंबर, 2024 को ही राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन का शुभारंभ कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाली एक केन्द्र प्रायोजित योजना के रूप में किया गया है। गौरतलब है कि इस योजना का 15वें वित्त आयोग (2025-26) तक कुल परिव्यय 2481 करोड़ रुपए है, जिसमें भारत सरकार का हिस्सा- 1584 करोड़ रुपये; तथा राज्य का हिस्सा- 897 करोड़ रुपये है। वास्तव में एनएमएनएफ पूरे देश में मिशन मोड में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई है। पाठकों को जानकारी के लिए बताता चलूं कि अगले दो वर्षों में एनएमएनएफ को इच्छुक ग्राम पंचायतों के 15 हजार समूहों में लागू किया जाएगा तथा 01 करोड़ किसानों तक पहुंचाया जाएगा और 7.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती (एनएफ) शुरू की जाएगी। वास्तव में, इसके लिए 10,000 जैव-आदान संसाधन केंद्र (बीआा-रसी) स्थापित किए जाएंगे और 2000 मॉडल प्रदर्शन फार्म बनाए जाएंगे। किसानों को प्रशिक्षण, प्रमाणन और बाजार पहुंच प्रदान की जाएगी। वास्तव में एनएमएनएफ का उद्देश्य सभी के लिए सुरक्षित और

पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। यह मिशन किसानों की खेती की लागत को कम करेगा वहीं दूसरी ओर बाहरी खरीदारी पर निर्भरता कम करने में भी किसानों की मदद करेगा। कहना गलत नहीं होगा कि प्राकृतिक खेती से एक ओर जहां मिट्टी की सेहत में सुधार होगा, वहीं दूसरी ओर इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। कहना गलत नहीं होगा कि मिट्टी में कार्बन की मात्रा और जल उपयोग दक्षता में सुधार के माध्यम से, मिट्टी के सूक्ष्मजीवों और एनएफ में जैव विविधता में वृद्धि होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो प्राकृतिक खेती स्वस्थ मृदा इकोसिस्टम का निर्माण और रख-रखाव करेगी। विविध फसल प्रणालियों को भी इससे बढ़ावा मिल सकेगा। प्राकृतिक खेती से मिट्टी की सेहत( उर्वरता बढ़ेगी) अच्छी होगी तथा जलभराव, बाढ़, सूखे आदि जैसे जलवायु जोखिमों से संभलने का सामर्थ्य पैदा करने में मदद मिल सकेगी। प्राकृतिक खेती के कारण स्वास्थ्य के जोखिम भी निश्चित ही कम होंगे और साथ ही इससे आने वाली पीढ़ियों को भी स्वस्थ धरती उपलब्ध हो सकेगी। कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि प्रकृति और पर्यावरण को निश्चित ही इससे फायदा होगा। गौरतलब है कि जलवायु के अनुकूल खेती से किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को फायदा होगा। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन( एनएमएनएफ) के तहत, कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों और किसानों के खेतों में लगभग 2000 एनएफ मॉडल प्रदर्शन फार्म स्थापित किए जाएंगे और इन्हें अनुभवी और प्रशिक्षित किसान मास्टर प्रशिक्षकों द्वारा सहायता प्रदान की जाएगी। गौरतलब है कि इस मिशन के तहत किसानों को प्रशिक्षण और संसाधन दिए जाएंगे। जैविक संसाधन केंद्र भी स्थापित होंगे। इतना ही नहीं, मिशन के तहत 18.75 लाख प्रशिक्षित इच्छुक किसान अपने पशुओं का उपयोग करके या बीआरसी से खरीद कर जीवामृत, बीजामृत आदि जैसे कृषि संबंधी संसाधन तैयार करेंगे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि किसानों की मदद करने के लिए, उनमें जागरूकता पैदा करने के लिए 30,000 कृषि सखियों/सीआरपी को तैनात किया जाएगा। अंत में यही कहूंगा कि आज के इस आधुनिक युग में किसान एक बार फिर परंपरागत प्राकृतिक खेती की ओर लौट रहे हैं, जैसा कि आज हमारी ज्यादातर जमीनें रासायनिक खादों, उर्वरकों, कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से पहले ही जहरीली हो चुकीं हैं। सरकार ने अब प्राकृतिक खेती की महत्ता को समझते हुए देश में प्राकृतिक खेती हेतु राष्ट्रीय मिशन (एनएमएनएफ) शुरू कर दिया है। इससे निश्चित ही किसानों और पर्यावरण को अभूतपूर्व लाभ पहुंचेंगे। प्राकृतिक खेती से भू-जल स्तर में भी वृद्धि होगी। इतना ही नहीं इससे मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में भी कमी आएगी। मनुष्य का स्वास्थ्य भी ठीक बना रहेगा। फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि होगी। निश्चित ही प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने से हर तरफ लाभ ही लाभ होंगे। ●

▸▸एस आर आज़मी
*बिहार ब्यूरो एवं बेगूसराय ब्यूरोचीफ़*

# एक देश एक चुनाव

जीडी कॉलेज बेगूसराय के पूर्व प्राचार्य **डॉ प्रमोद चौधरी** का कहना है कि भारतीय आजादी के करीब 78 साल गुजर गए। इस लंबे अंतराल में अनेकानेक चुनावी सफर भी गुजरा। देश की राजनीति पटल पर दर्जनों प्रधानमंत्री और हजारों सांसद व विधायक का दौर भी गुजर गया। भारतीय लोकतंत्र की कसौटी पर चुनाव से संबंधित कई उथल-पुथल भी हुए। बैलेट से होने वाला चुनाव अब ईवीएम तक आ गया। तकनीक आधारित इस देश में अब एक राष्ट्र एक चुनाव का विधेयक सामने खड़ा है। अगर यह विधेयक कानून का रूप लेगा, तो कई विशेषताएं भी होंगी। और कुछ त्रुटियां भी साथ लाएंगी। केंद्र में जो सत्तारूढ़ सरकार होगी, उसकी दिली मनसा होगी एक साथ हुए चुनाव में लोकसभा व विधानसभा में उसकी ही सरकार बने। विधेयक की विशेषता होगी कि आर्थिक बोझ सुरक्षा व्यवस्था और समय की बचत घटेगा। एक राष्ट्र एक चुनाव जैसे मुद्दे पर जल्दबाजी की जरूरत नहीं है। इसे बुथ स्तर से लेकर देश स्तर तक आम जनों की राय व सुझाव लेना पड़ेगा, तभी विचारों की एकरूपता बनेगी।

मटिहानी प्रखंड के सिहमा गांव निवासी अवकाश प्राप्त अभियंता **के एन सिंह** का मानना है कि एक देश एक चुनाव भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिए बेहद जरूरी है। वर्ष 1970 से पहले देश में चुनाव की यही व्यवस्था लागू थी, जो पूर्ववर्ती सरकार से संचालित थी। जब देश के विभिन्न राज्यों में लगातार राष्ट्रपति शासन लगाया जाने लगा, तो एक देश एक चुनाव की व्यवस्था टूटने लगी, जिसका नतीजा आज भुगतना पड़ रहा है। लोकसभा और विधानसभा का चुनाव अलग-अलग वर्षों में संपन्न हो रहे हैं। चुनाव की यह व्यवस्था काफी खचीर्ला और बोझिल है। केंद्र की मोदी सरकार की यह सोच समय के अनुसार काफी सही है। आने वाले समय में इसका सीधा प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में लगेगा।

बेगूसराय शहर के विश्वनाथ नगर निवासी व अवकाश प्राप्त अधिकारी **प्रमोद प्रसाद सिंह** की राय में एक राष्ट्र एक चुनाव राष्ट्रीय स्तर पर एक गंभीर विषय है, जिसके हर एक पहलू पर गंभीरता पूर्वक विचार मंथन करने की जरूरत है। अगर यह विधेयक पास हो जाता है, तो राजनीति के पटल पर अर्थव्यवस्था, सामाजिक समरसता, बौद्धिक विकास के साथ-साथ देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर कितना असर डालेगा, और इसका दूरगामी परिणाम क्या होगा, इसका आकलन करने की जरूरत है।

चुनाव संबंधी इस बड़े मुद्दे को देश के सबसे बड़े पांच विश्वविद्यालयो में विद्तजनों के विचार के लिए रखना चाहिए। एक राष्ट्र एक चुनाव को छद्मवेशी तरीके से ऊपर उठकर सवार्नुमति बनाने की दिशा में कारगर कदम उठाना चाहिए। प्रबुद्ध मतदाताओं की राय में अगर यह व्यवस्था अच्छी लगे और सबों की सहमति हो, तो इसे जरूर लागू करना चाहिए।

ईश्वर अस्पताल के निदेशक वरिष्ठ चिकित्सक **डॉक्टर संजय कुमार** का वन नेशन वन इलेक्शन यानी एक देश एक चुनाव पर मानना है कि दरअसल अविश्वास प्रस्ताव, विश्वास प्रस्ताव, विधानसभा भंग होना, त्रिशंकु विधानसभा, दल-बदल का प्रावधान, स्वस्थ और जीवंत प्रजांतत्र के पहरेदार हैं। इन सारे प्रावधानों की अंतिम परिणति नए चुनाव के रुप में होती है। ये प्रावधान सुनिश्चित करते हैं कि लोकतांत्रिक शक्ति का संतुलन बना रहे।इसलिए खर्च या समय का हवाला देकर चुनाव को कम कराने की कोई भी कोशिश डेमोक्रेटिक स्पेस को कम करने जैसा ही माना जाएगा।

विरोध को सहने की आदत राजनेताओं में होनी चाहिए, ताकि कांग्रेस के समय भाजपा के गृहमंत्री जेल में और भाजपा के समय में कांग्रेस के गृहमंत्री जेल में हों, ये नहीं होना चाहिए। बांग्लादेश, पाकिस्तान, चीन, रूस, मिडल ईस्ट के देशों की तरह यहां भी राजनीतिक विरोधियों को अनुचित तरीके से ठिकाने लगाने की प्रवृति बढ़ रही है। और वह दिन दूर नहीं, जबअन्य देशों की तरह यहां भी पूर्व प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि अपने को महफूज नहीं समझेंगे। वन नेशन वन इलेक्शन का साइडइफेक्ट कुछ दिन बाद पता चलेगा प्रजातांत्रिक मूल्यों में गिरावट के रूप में। भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता की अवस्था इस लायक नहीं है अभी।हां पचास वर्ष के सफल लोकतंत्र के

बाद वो अवस्था आ सकती है। खर्च घटाने के लिए टेक्नोलॉजी का सहारा लेकर चुनाव खर्च को 90 प्रतिशत तक घटाया जा सकता है, जहां लोग घर बैठे मतदान प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं।इससे भागीदारी का प्रतिशत भी बहुत बढ़ेगा। और जनमत का ज्यादा प्रभावी दबाव राजनेता भी महसूस करेंगे।

बेगूसराय जिला जनपद के चर्चित सोशल एक्टिविस्ट व पत्रकार बरौनी निवासी **गिरीश प्रसाद गुप्ता** का कहना है कि एक राष्ट्र, एक चुनाव पर कोविंद समिति की रपट पर केंद्रीय मंत्रिमंडल का मोहर लगना और देश में लागू होना तय ही माना जाएगा। यह भी तय है कि संसद में पारित हो भी जाएगा ।और कानून का रूप लेने के लिए उस पर महामहिम राष्ट्रपति का स्वीकृति मिल भी जाएगी। मोदी है तो सब मुमकिन है।

संविधान निमार्ताओं ने निर्णायक रूप में देश में संसदीय प्रणाली को ही चुना था, क्योंकि संसदीय प्रणाली भारत का विविधता के लिए अधिक उपयुक्त था। और देश आजाद होने के बाद यह प्रणाली अभी तक चल रहा है। लेकिन इसमें धीरे-धीरे बदलाव नजर आने लगा और एक राष्ट्र, एक चुनाव का प्रस्ताव भी उसी का एक रूप है। वे देश के प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा अन्य के सभी प्रधानमंत्रियों के कार्यों नीतियों को बदलने पर लगे हुए हैं। और एक नया भारत बनाना चाहते हैं। वे गांधी का इंडिया को भी बदलना चाहते हैं। और नया हिन्दू राष्ट्र बनाने का सपना देख रहे हैं, जो बाद में मोदी का

भारत कहलाएगा। देश में यदि इसे लागू ही करना था तो 2024 के आम चुनाव से करना चाहिए था। इसे 2029 में ले जाने की क्या आवश्यकता थी? मोदी जी तो 2014 से ही देश के मुखिया, प्रधान सेवक हैं। मेरा यह अपना एक छोटा विचार है एक राष्ट्र एक चुनाव और एक डेट में होना चाहिए। इसके होने से चुनाव में फिजूल खर्च की बचत होगी। कदाचार, लूट, खसौट और भ्रष्टाचार पर अंकुश भी लगेगा लेकिन चुनाव के दौरान मुफ्त उपहार देने की परंपरा में तेजी आएगी। फर्जी चुनाव पूर्व सर्वेक्षण दिखाने और उससे प्रभावित दुष्परिणामों पर भी लगाम लगेगी यानी एक राष्ट्र एक चुनाव पर देश को लाभ और हानि दोनों होगी। हानि सभी राजनीतिक दलों की होगी। और लाभ देश और जनता को होगी इसलिए इसे लागू होना चाहिए।

अवकाश प्राप्त शिक्षक व कवि **भुवनेश्वर प्रसाद सिंह** का मानना है कि एक देश एक चुनाव यह एक अत्यंत हर्ष और उत्साहवर्धक बात है कि वर्तमान केंद्रीय सरकार संसद में एक राष्ट्र एक चुनाव विधेयक लाकर उसे पारित कराना चाह रही है। यदि सरकार ऐसा करने में सफल हो जाती है तो यह राष्ट्रहित में एक क्रांतिकारी कदम होगा। वर्तमान समय में चुनाव आयुक्तों को विभिन्न स्तरों के चुनाव प्रायः सालों भर करवाने पड़ते हैं जिससे समय, अर्थ, श्रम और संसाधनों का बड़े पैमाने पर अपव्यय हो जाता है। ऐसा करना कोई बुद्धिमानी नहीं है। संसद में विपक्षी पार्टियां इसे अव्यावहारिक मान रही हैं। देश की आजादी के बाद प्रथम आम चुनाव संसद एवं विधानसभाओं सहित 1952 ईस्वी में कराया गया था। तब से लेकर 1967 तक के आम चुनाव एक राष्ट्र एक चुनाव के तर्ज पर ही सफलतापूर्वक कराए गए थे। उस समय किसी दल के सदस्यों ने इस मुद्दे पर आनाकानी नहीं की थी। एक राष्ट्र एक चुनाव का सिलसिला 1967 के बाद के चुनाव में टूटा। एक राष्ट्र एक चुनाव समय, श्रम और संसाधनों की दृष्टि से किफायती और राष्ट्र हित में है।

मटिहानी प्रखंड के सोनापुर भराठ निवासी सामाजिक कार्यकर्ता व कृषक **राम पुकार सिंह महंत** का मानना है कि वर्तमान लोकसभा में एक राष्ट्र एक चुनाव संबंधी विधेयक पास होना मोदी सरकार का सराहनीय कदम है। लोकसभा में मोदी सरकार के एक साथ लोकसभा और विधानसभा चुनाव करने का जो बिल पास किया बहुत ही सराहनीय है। भारतवर्ष में सालों भर कहीं ना कहीं प्रत्येक राज्य में चुनाव होता ही रहता था। इस बिल को पास हो जाने से आर्थिक मजबूती में सुधार होगा। तथा देश में तेजी से विकास होगा। यह बिल लोकसभा में पहले ही आ जाना चाहिए था। यह बिल राष्ट्र को मजबूत करने का ऐतिहासिक कदम है।

जिले के साम्हो प्रखंड के प्रखंड प्रमुख **मनोज कुमार** का मानना है कि भारतीय लोकतंत्र की नींव चुनाव के जरिए मजबूत होती है। चुनाव पद्धति में समय के अनुसार परिवर्तन होना जरूरी है। ताकि देश के मतदाता नई पद्धति के अनुसार मतदान कर अपने जन प्रतिनिधि का चयन कर सके। एक राष्ट्र एक चुनाव जो विधेयक लोकसभा में पेश करने के उपरांत जेपीसी में भेजा गया है। यह एक प्रभावकारी कदम है। अगर यह बिल सवार्नुमति से पारित हो गया, तो इसके सुखद परिणाम सामने आएगा। देश के मतदाता एक ही बार वोट कर विधायक और सांसद चुन लेंगे। निर्वाचन आयोग की मौजूदा कार्य पद्धति में सुधार की जरूरत है।

एक देश एक कानून को लेकर बेगूसराय नगर निगम कि पार्षद व भाकपा कार्यकर्ता सह सामाजिक एक्टिविस्ट **डॉ शगुफ्ता ताजवर** का मानना है कि संविधान ने हमें संसदीय मॉडल प्रदान किया है। जिसके तहत लोकसभा और विधानसभाओं में सदस्य पांच वर्षों के लिए चुने जाते हैं। लेकिन एक साथ चुनाव कराने के मुद्दे पर हमारे संविधान में कहीं भी कोई प्रावधान

नहीं है। एक देश एक चुनाव संघीय ढांचे के विपरीत होगा। और संसदीय लोकतंत्र के लिए घातक कदम होगा। लोकसभा और राज्यों के विधानसभाओं को चुनाव एक साथ करवाने पर कुछ विधानसभाओं के मर्जी के खिलाफ उनके कार्यकाल को बढ़ाया या घटाया जाएगा, जिससे राज्यों की स्वच्छता प्रभावित हो सकती है। भारत का संघीय ढांचा संसदीय शासन प्रणाली से प्रेरित है। और संसदीय शासन प्रणाली में चुनाव का प्रावधान अलग-अलग समय में करवाना आवश्यक है।

अगर लोकसभा और राज्यों के विधानसभाओं का चुनाव एक साथ करवाए गए तो ज्यादा संभावना है कि राष्ट्रीय मुद्दों के सामने क्षेत्रीय मुद्दे गौण हो जाएंगे या इसके विपरीत क्षेत्रीय मुद्दों के सामने राष्ट्रीय मुद्दे अपना अस्तित्व खो देंगे। दरअसल लोकसभा और विधानसभा के चुनाव का स्वरूप और मुद्दे बिलकुल अलग होते हैं। लोकसभा के चुनाव जहां राष्ट्रीय सरकार के गठन के लिए होते हैं, वहीं विधानसभा के चुनाव राज्य सरकार के गठन के लिए होते हैं। इसलिए लोकसभा में जहां राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे को प्रमुखता दी जाती है, वहीं विधानसभा चुनाव में क्षेत्रीय मुद्दे आगे रहते हैं।

डंडारी प्रखंड के वरीष्ठ सीपीआई नेता **जटाशंकर सिंह** का कहना है कि बीते लोकसभा सत्र में एक देश एक चुनाव का विधेयक पास करना एनडीए सरकार की साजिशपूर्ण रणनीति है। देश के पटल पर मौजूदा समय में महंगाई, बेरोजगारी, कृषक समस्या शिक्षा और रोजगार जैसे गंभीर मुद्दे मुद्दे सामने खड़ा है। इन्हीं मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए और आम जनता को गुमराह करने के लिए एक राष्ट्र एक चुनाव का विधेयक लाया गया है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था में देश पैमाने पर राष्ट्रीय स्तर से लेकर पंचायत स्तर तक विभिन्न चुनाव होते रहे हैं और सबों का परिणाम भी सामने आया है। समय अवधि पूरा होने पर, जहां चुनाव की आवश्यकता होती है, वहां चुनाव अनिवार्य रूप से होते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर करने की नीयत से एनडीए सरकार ने विधेयक लाया है। यह पास होकर अगर कानून का रूप लेगा, तो इसके घातक परिणाम आने वाले दिनों में सामने आएंगे। हर एक राजनीतिक दलों को इस विषय पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

जिले के कटरमाला निवासी कृषक **अमरनाथ सिंह** का कहना है कि एनडीए सरकार द्वारा लाई गई एक देश एक चुनाव संबंधी विधेयक सुखद परिणाम का संकेत है। इस तरह के चुनाव संचालित होने पर समय की बचत के साथ-साथ दलिय कार्यकर्ताओं की परेशानी भी घटेगी। सरकारी मशीनरी एक साथ दोनों तरह के चुनाव को संचालित करेंगी, जिससे आर्थिक बोझ घटेगा। यह विधेयक आम जनों के लिए एवं लोकतंत्र के लिए कल्याणकारी है

शहर के वार्ड संख्या 13 निवासी **प्रोफेसर राकेश कुमार सिंह** की राय में एक देश एक चुनाव वाला विधायक लाया जाना केंद्रीय सरकार का अनूठा कदम है। संयुक्त संसदीय समिति को गंभीरता से विचार कर इस पर सामूहिक सहमति बनानी चाहिए।अगर यह देश में लागू हो जाएगा तो चुनाव का खर्च स्वतः कम हो जाएगा। आम मतदाता सही मूल्यांकन करते हुए लोकसभा एवं विधान सभा से एक साथ अपना प्रतिनिधि चुन पाएंगे। भारतीय अर्थव्यवस्था की ऊपरी रैंकिंग की ओर देश बढ़ रहा है, उसमें चुनाव का खर्च कम होने से काफी सहूलियत मिलेगी। और जनतंत्र को भी काफी मजबूती मिलेगी। लगातार चुनाव होने से आम लोगों को बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता , जिसमें कमी आएगी।

बेगूसराय व्यवहार न्यायालय के वरीय अधिवक्ता व समाजिक कार्यकर्ता **वीरेंद्र कुमार साहु** ने अपनी राय जाहिर करते हुए कहा कि एक देश एक चुनाव का मामला एक स्वागत योग्य कदम है। इस विधेयक पर सभी दलों को मिलजुल कर सहमति बनानी चाहिए। जो विधेयक देश के हित में हो, उस पर सभी दलों की आम सहमति परम आवश्यक है। एक देश एक चुनाव की तरह ही देश में शिक्षा स्वास्थ्य सहित कई कल्याणकारी योजनाओं में भी एकरूपता बरते जाने की जरूरत है। और यह समय की मांग भी है। लोकतांत्रिक देश तभी आगे बढ़ेगा, जब समय के अनुसार चुनाव का रंग ढंग बदलता रहे। ●

# संवाददाता सम्मेलन में विधायक राजकुमार सिंह का दावा

## मटिहानी विधानसभा क्षेत्र में जनहित के कई कार्यो को दिया गया अंजाम

### रिपोर्ट कार्ड जारी

### मनियप्पा को स्मार्ट पंचायत बनाने का ऐलान

मटिहानी के जदयू विधायक राजकुमार सिंह ने संवाददाता सम्मेलन में अपने कार्यकाल का लेखा-जोखा मीडिया के सामने रखा। बेगूसराय के होटल केडीएम पैलेस में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में मटिहानी विधायक ने क्षेत्र के विकास का ब्योरा पेश किया। उन्होंने मीडिया को बताया कि सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि एवं तटबंध सुरक्षा जैसे जनकार्यों को संपन्न किए गए हैं। विधायक ने आगे कहा की उलाव हवाई अड्डे के विस्तार के लिए जिला प्रशासन जमीन तलाश रही है। उन्होंने भरोसा जताया कि जिले को शीघ्रता से हवाई अड्डा प्राप्त होगा।

उन्होंने कहा आईओसी बरौनी से क्षेत्र के कल्याण के लिए राशि दिए जाने के सिलसिले में बातचीत जारी है। विधायक राजुकमार ने मटिहानी प्रखंड के मनियप्पा पंचायत को स्मार्ट पंचायत के रूप में विकसित करने की राज्य सरकार की मंजूरी से भी अवगत कराया। उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के 18 जनवरी को बेगूसराय आने की भी जानकारी दी। और बताया कि इस मौके पर कई और जनहित योजनाओं का शुभारंभ किया जाएगा।

उन्होंने आगे कहा कि जय मंगलागढ़ को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए जोरदार पहल की गई है। इसी तरह सरकारी नियमों के अनुरूप गंगा पार साम्हो प्रखंड मुख्यालय में डिग्री कॉलेज खोलने के लिए विशेष पहल की जा रही है। इस प्रखंड में साम्हो से चलकर सूर्यगढ़ा तक की सड़क का भी मरम्मती की जाएगी। गुप्ता लखमीनिया बांध के दोहरीकरण के लिए काम तेजी से बढा है।

संवाददाता सम्मेलन सह सम्मान सम्मेलन समारोह की अध्यक्षता जेडीयू जिला अध्यक्ष रुदल राय, संयोजन पियूष लाजो एवं संचालन मनोज कुमार ने किया। इस अवसर पर नगर निगम के पूर्व मेयर संजय सिंह, जेडीयू के वरिष्ठ नेता नरेंद्र सिंह धनकु, बेगूसराय सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के उपाध्यक्ष कमल किशोर सिंह, जेडीयू नेता राम विनय कुमार सिंह साहित दर्जनों लोग मौजूद थे। ●

बेगूसराय से एस आर आज़मी की रिपोर्ट

## प्रमंडल बनाने के मांग लेकर पद यात्रा

बेगूसराय के आम व खास लोगों ने प्रमंडल बनाओ अभियान समिति के बैनर तले प्रमंडल बनाने के मांग लेकर पद यात्रा किया। पदयात्रा जीडी कॉलेज से निकलकर मुख्य बाजार, नगर निगम, नगर थाना, कचहरी रोड होते हैं गांधी स्टेडियम पहुंचकर सभा में तब्दील हो गई। इसमें जिला के लगभग सभी राजनीतिक दल, सभी जनप्रतिनिधि, सभी सामाजिक संगठन, सभी सांस्कृतिक संगठन, जन संगठन, कर्मचारी महासंघ खिलाड़ी, छात्र संगठन एवं व्यवसायी महासंघ ने एकजुटता का प्रदर्शन किया।

पदयात्रा का संचालन प्रमंडल बनाओ अभियान समिति के संयोजक दिलीप कुमार सिन्हा ने कहा कि ऐतिहासिक पदयात्रा रहा।

रैली में जिला के सभी महत्वपूर्ण संगठन पूरे जोश के साथ भाग लिया। विधानसभा विधान परिषद के सदस्य डॉ उर्मिला ठाकुर, पैनेसिया के निदेशक डॉ वीरेंद्र कुमार, डॉ रौशन कुमार, डॉ राजेश रौशन, डॉ पुजन कुमारी, डॉ नलिनी रंजन, प्रसिद्ध अधिवक्ता समीर शेखर,पूर्व मेयर सह अध्यक्ष आलोक कुमार अग्रवाल, कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष नरेंद्र प्रसाद सिंह, बाइट कंप्यूटर संजय कुमार सिंह, सेंट जोसेफ के निदेशक अभिषेक कुमार सिंह, नगर निगम पार्षद, जितेंद्र कुमार, रविन्द्र सिंह,मृणाल भारद्वाज, उप महापौर अनिता देवी, पार्षद, पार्षद शगुफ्ता ताजबर,उमेश कुमार,कामनी कुमारी, कई वर्तमान तथा पूर्व पार्षद संजय कुमार सिन्हा, नवीन कुमार सिन्हा, अलख कुमार सिन्हा, पूर्व सैनिक संघ के दर्जनों सदस्य, ब्रह्मानंद जी, हरपुर केयर के निदेशक इंद्रजीत कुमार राय, नीरज कुमार राय, सुशील कुमार राय, लगोरी संगठन के मंजेश कुमार , आनंद बर्मा, जीवन प्रकाश वर्मा, चंदन कुमार, चंदन कुमार सोनु, रणधीर कुमार, सुमनजीत सुमन, संतोष प्रभाकर एवं खगड़िया जिला से सैकड़ों की संख्या में अजय कुमार के नेतृत्व में लोगों ने हिस्सा लिया।

रैली के उपरांत एक मांग पत्र जो जिलाधिकारी के नाम से बना था उसे अनुमंडल पदाधिकारी राजेश कुमार ने गांधी स्टेडियम में सौंपा ।

## कांग्रेस पार्टी ने मनाया140 वां स्थापना दिवस

अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी की बेगूसराय इकाई ने 140 वां स्थापना दिवस मनाया। अध्यक्षता कांग्रेस पार्टी के जिलाध्यक्ष अभय कुमार सिंह सार्जन ने की। कार्यक्रम कि शुरूआत के पहले कांग्रेस जनों ने प्रभात फेरी निकालकर पार्टी दफ्तर में जिलाध्यक्ष के झंडोत्तोलन कियाा। और सेवा दल की ओर से सलामी ग्रहण की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कांग्रेस जिलाध्यक्ष सार्जन ने कहा कि कांग्रेस स्थापना की 140 वर्षों की लंबी यात्रा हमारे पूर्वजों की विरासत हैं। समाज में समरसता और सामाजिक उत्थान हमारी पूंजी रही हैं।

वर्तमान समय के दौर में देश विकट परिस्थितियों से जूझ रहा है ।सत्तारूढ़ पार्टियां धर्म और जाति के आधार पर समाज को तोड़ रही हैं।

इसे बेनकाब कर आपसी एकता बनाते हुए पार्टी के तिरंगे को बुलंद रखना हैं। हमें इसका संकल्प लेना होगा। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल शिक्षक नेता अमरनाथ सिंह ने कहा कि आज कांग्रेस के आपातकाल की चहुं ओर निंदा करने वाले जान लें कि देश के संविधान और तात्कालीन परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए आपातकाल की घोषणा हुई थी।

रजनीकांत पाठक ने कहा कि केंद्र की भाजपा नीत सरकार ने पिछले दस सालों में मनमोहन सिंह के लिए गए कार्यों का उद्घाटन करते हुए नेहरू जी को गाली देते हुए भीम राव अंबेडकर जी का अपमान के सिवा कुछ नहीं किया। दलित नेता लखन पासवान ने कहा कांग्रेस पार्टी कि स्थापना से लेकर मनमोहन सिंह के कार्यकाल तक देश के सभी जाति धर्म समुदाय के लिए पार्टी काम करती रही।

इस अवसर पर पार्टी का स्मारिका 2024 का भी विमोचन किया गया।

अंत में पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह को दो मिनट मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। राष्ट्रगान गायन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

स्थापना दिवस समारोह का संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामविलास सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन जिला प्रवक्ता रणजीत कुमार मुखिया ने किया।

मौके पर वरिष्ठ नेता नारायण सिंह, वरीय अधिवक्ता बैजनाथ प्रसाद सिंह, शशि शेखर राय, रजनीकांत पाठक, रामविलास सिंह, मुरलीधर मुरारी, मिथलेश झा, हारून रसीद खान, चुन चुन राय, फुलेना सिंह, उमेश सिंह सुबोध कुमार, सुबोध प्रसाद सिंह, मुकेश कुमार गुड्डु, मो.मतीन, राजदेव पास-ावान, रामपदारथ साह, विजय सिंह, राकेश सिंह, सुरेंद्र प्रसाद सिंह, विक्रम कुमार, कांग्रेस नेता बद्री सिंह, मिथिलेश झा सहित कई अन्य नेता ने संबोधित किया। ●

शंभू कुमार
*मोटर पार्टस और बाज़ार के जानकार*

# आज के व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा में प्रतिरोधक क्षमता है स्किल और अप-स्किल

आज की प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में प्रतिभा को भी परखने की आवश्यकता है। योग्यता और अनुभव के समन्वय से ही सफलता प्राप्त हो सकती है। वैसे तो प्रकृति का नाम ही परिवर्तन है। संसार के सभी क्षेत्रों में आज आमूल परिवर्तन देखने को मिल रहा है। हर क्षेत्र प्रतिस्पर्धा का दंश झेल रहा है। पहले का व्यापार पूंजी और परिश्रम प्रधान था। मध्यवर्ती समय में व्यापार अनुभव और सिस्टम प्रधान हो गया। लेकिन इन दिनों का व्यापार केवल आइडिया, स्किल और नेटवर्क पर आधारित होकर सीमित रह गया है। बड़े और स्तरीय व्यापार की परिकल्पना नेटवर्क के बिना करना असंभव है। वहीं आज एक्सपर्टी और स्किल-प्रूफ प्रतिनिधियों की ही बाजार और व्यापार में मांग रह गई है। अब केवल कंपनी का उत्पाद ही नहीं, बल्कि सुविधा, संबंध और सेवा से ही व्यवसाय का श्रृंगार बन गया है। ऐसी व्यावसायिक विषम परिस्थिति में व्यावसायिक प्रबंधन विभिन्न प्रतियोगिक मापदंडों पर आधारित प्रतिनिधियों और सहयोगियों का चयन कर रहा है। वैसे तो सभी कार्यक्षेत्रों में मुख्यतः चार प्रवृत्ति के लोग ही कार्य करते हैं।

1. नॉन-स्किलः यह प्रवृत्ति मुख्यतः श्रम प्रधान कार्य करती है, जो घंटे, दिन और महीने के हिसाब से श्रम की सेवा प्रदान कर पारिश्रमिक प्राप्त करती है। यह वर्तमान दृष्टि से देखकर ही काम करती है।

2. स्किलः ऐसे प्रवृत्ति के लोग अपने किसी विशेष गुण के कारण किसी कार्य विशेष के धनी होते हैं। यह अपने कार्य विशेष के गुण को सिस्टम से प्रस्तुत कर संतुष्टि प्रदान करते हैं और अपना अपेक्षित पैकेज प्राप्त करते हैं।

3. री-स्किलः ऐसे प्रवृत्ति के लोग किसी एक विशेष गुण में निपुण होते हैं और अपने कार्यक्षेत्र में जाने-पहचाने जाते हैं, लेकिन अन्य क्षेत्रों में भी औसत जानकारी रखकर सुविधा और सेवा प्रदान करते हैं। खासकर ऐसे प्रवृत्ति के लोगों की प्रतिस्पर्धा में कंपनियों में मांग बढ़ गई है।

4. अप-स्किलः अपने क्षेत्र में किसी कार्य विशेष के गुणों के साथ-साथ आने वाली संभावनाओं और वर्तमान समस्याओं से लेकर भविष्य की समस्याओं का ताना-बाना हमेशा बुनते रहते हैं। ऐसे प्रवृत्ति के लोगों के पास दृष्टि ही नहीं बल्कि दृष्टिकोण होता है जहां वर्तमान में संतुष्टि

> इन दिनों का व्यापार केवल आइडिया, अनुभव और नेटवर्क प्रधान हो गया है। ऐसे प्रतिस्पर्धात्मक और व्यावसायिक मंदी के माहौल में प्रवृत्ति, प्रतिभा, अनुभव और स्किल को परखकर ही चयन करें, ताकि प्रतिस्पर्धा और मंदी के माहौल में भी आप बने रह सकें।

दिलाते हैं, वहीं भविष्य को हमेशा सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं और रिसर्चर के तौर पर भी जाने जाते हैं।

इसीलिए कहा गया है कि किसी भी सफल कंपनी का सबसे ज्यादा खर्च प्रशिक्षण और रिसर्च पर होता है। प्रशिक्षण से जहां वर्तमान की परेशानी कम होती है, वहीं रिसर्च से भविष्य की संभावनाएं उत्पन्न होती हैं। इसी कारण आज छोटी से बड़ी कंपनियां योग्यता के साथ-साथ रुचि और अनुभव को ध्यान में रखकर सहयोगियों का चयन कर रही हैं। आज के प्रतिस्पर्धा में नॉन-स्किल, स्किल, री-स्किल और अप-स्किल में समन्वय और सामंजस्य स्थापित कर ही कोई भी छोटी से बड़ी कंपनियां सफलता और शीर्ष पर पहुंच सकती हैं।

वहीं दूसरी तरफ, ऐसे प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने अपने सर्वेक्षण के दौरान यह भी पाया है किः-

1. 83 प्रतिशत लोगों के पास कोई लक्ष्य नहीं है।

2. 14 प्रतिशत लोगों के पास लक्ष्य तो है, लेकिन उन्हें कब और कैसे प्राप्त किया जाए इसका कोई योजना या ठोस आधार नहीं है।

3. महज 3 प्रतिशत लोगों ने अपने लक्ष्यों को लिखकर अर्जुन दृष्टि और भीष्म संकल्प के साथ हासिल करने का निश्चय किया है। यही तीन प्रतिशत लोग किसी भी क्षेत्र में इतिहास रचते हैं।

धैर्य, विनम्रता और सहनशीलता के साक्षी बनकर ये लोग शीर्ष तक पहुंचकर संसार के लिए अपने क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। ऐसे प्रवृत्ति के लोग सिर्फ अपनी रुचि और परमात्मा को ध्यान में रखकर क्षेत्र का चयन करते हैं। आज भी इस प्रतिस्पर्धा और भीड़ में समर्पण और जुनून की संख्या नगण्य है। ऐसे प्रवृत्ति के लोगों में किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा नहीं होती है। न ही ये किसी को देखकर अनुकरण का प्रयास करते हैं, बल्कि रुचि और अनुभव को ध्यान में रखकर भविष्य का ताना-बाना हमेशा बुनते हैं।

इन दिनों का व्यापार केवल आइडिया, अनुभव और नेटवर्क प्रधान हो गया है। ऐसे प्रतिस्पर्धात्मक और व्यावसायिक मंदी के माहौल में प्रवृत्ति, प्रतिभा, अनुभव और स्किल को परखकर ही चयन करें, ताकि प्रतिस्पर्धा और मंदी के माहौल में भी आप बने रह सकें। ●

# आगरा, ग्वालियर और मथुरा की यात्रा

त्रिभुवन लाल साहू

भिलाई इस्पात संयंत्र ने इस बार ग्वालियर में क्वालिटी सर्कल के आयोजन के लिए प्रतिभागी बनाया और हमने यात्रा की योजना बनाई। पूरी टीम के साथ इस ऐतिहासिक यात्रा की शुरूआत दुर्ग रेलवे स्टेशन से हमसफर एक्सप्रेस द्वारा हुई। मित्रों का साथ होने से यात्रा का उत्साह दुगना हो गया। रास्ते भर ताश खेलते और बातचीत करते हुए रात कब बीत गई, पता ही नहीं चला।

**आगरा में आगमन और नाश्ता**

सुबह 7 बजे आगरा पहुंचने के बाद, स्टेशन के पास एक होटल में ठहराव किया। आगरा का प्रसिद्ध बेड़ई और जलेबी नाश्ते के रूप में लिया, जो अपने स्वाद के लिए पूरे देश में मशहूर है। इसके बाद हमने एक दिन में जितना अधिक हो सके, उतने ऐतिहासिक स्थलों को घूमने का निर्णय लिया।

**फतेहपुर सीकरी:** अकबर का सपना

हमारी पहली मंजिल फतेहपुर सीकरी थी, जो मुगल सम्राट अकबर की सोच और वास्तुकला का अद्भुत नमूना है। अकबर ने इसे अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया था, लेकिन पानी की कमी के कारण इसे छोड़ना पड़ा। यहां के प्रमुख स्थलों में जामा मस्जिद, बुलंद दरवाजा, दीवाने खास, और सलीम चिश्ती की दरगाह शामिल हैं। गाइड की मदद से हमने इन स्थलों की ऐतिहासिकता को समझा।

**बुलंद दरवाजा**

यह दुनिया का सबसे बड़ा प्रवेश द्वार है, जिसे अकबर ने गुजरात विजय के बाद बनवाया था।

**सलीम चिश्ती की दरगाह**

यह सफेद संगमरमर से बनी है और अकबर की संतान सुख की कामना से जुड़ी हुई है। इतिहास में पढ़ी चीजों को सजीव रूप में देखकर एक अनोखा अनुभव हुआ।

**ताजमहल प्रेम और वास्तुकला का अद्भुत संगम**

फतेहपुर सीकरी से लौटते वक्त भोजन के बाद हमारी अगली मंजिल थी ताजमहल, जो शाहजहां ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। यह विश्व के सात अजूबों में से एक है और सफेद संगमरमर से बनी इस इमारत की खूबसूरती अद्वितीय है। हालांकि ट्रैफिक और

लंबी कतारों के कारण प्रवेश में समय लगा, लेकिन जब हमने ताजमहल को देखा, तो उसकी भव्यता ने हमारी सारी थकान मिटा दी।

**लाल किलाः एक मजबूत किला और सत्ता का केंद्र**

अगली सुबह हम लाल किले पहुंचे, जो मुगलों की सत्ता का मुख्य केंद्र था। इसे अकबर ने बनवाना शुरू किया था और शाहजहां ने इसे पूर्ण किया। किले के चारों ओर बनी गहरी खाई इसे दुश्मनों से बचाने के लिए बनाई गई थी। दीवाने आम और दीवाने खासः ये दो मुख्य सभागार हैं, जहां आम जनता और खास लोगों के लिए दरबार लगाए जाते थे।

**मथुरा और वृंदावन यात्रा**

लाल किला घूमने के बाद, हम लगभग सुबह 11 बजे आगरा से मथुरा स्टेशन के लिए रवाना हुए। मथुरा पहुंचने के बाद, हमने होटल बुक किया और निजी वाहन को दो दिन के लिए चिन्हांकित देवस्थलों के दर्शन का जिम्मा सौंपा। हमारी यात्रा की शुरूआत गोकुल की गलियों से हुई, जहां यशोदा नन्दबाबा का घर पूर्वस्थापित अवस्था में स्थित था। यह स्थान न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण था, बल्कि टीवी सीरियल के घर से जुड़ी यादें भी ताजा हो गईं। गोकुल का इतिहास बहुत पुराना है और इसे भगवान श्री कृष्ण के बचपन के स्थल के रूप में जाना जाता है। यहां के प्रत्येक कोने में कृष्ण की लीलाओं का प्रभाव था, और यह स्थल भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शीतकालीन अवकाश के कारण यहां भीड़ अधिक थी, लेकिन यह अनुभव हमें अतीत की गहराई में ले गया।

इसके बाद, हम गोकुल से आगे बढ़े और रमण रेती पहुंचे। यह स्थान अपनी अनोखी रेत के लिए प्रसिद्ध है, जहां राधे कृष्ण ने अपनी बाल लीलाएँ की थीं। रमण रेती का ऐतिहासिक महत्व इस तथ्य में छिपा है कि यह वह स्थान है जहां राधा और कृष्ण ने अपनी मुरली और प्रेम में खोकर साथ समय बिताया। श्रद्धालु यहां रेत में खेलते और नहाते हुए कृष्ण के बाल रूप की लीलाओं को महसूस करते हैं। यह दृश्य बहुत ही भव्य था और हमें एक गाना याद आया, 'तेरे मिट्टी में मरजावा', जो इस स्थल की भावना को पूरी तरह से व्यक्त करता है।अब हम वृंदावन की ओर बढ़े, जहां श्रद्धालुओं की भारी भीड़ थी। गलियां छोटी थीं, लेकिन बाके बिहारी मंदिर का दर्शन

एक अद्भुत अनुभव था। वृंदावन का इतिहास भी बहुत समृद्ध है, जहां भगवान श्री कृष्ण ने अपनी युवावस्था के महत्वपूर्ण क्षण बिताए थे। यहां का प्रत्येक मंदिर और स्थल कृष्ण की लीला और भक्ति से जुड़ा हुआ है। भीड़ अधिक होने के कारण केवल बाके बिहारी की झलक ही मिल पाई, लेकिन वह दृश्य हमारे मन में स्थिर हो गया। इसके बाद, हम इस्कान मंदिर की ओर बढ़े, जहां कृष्ण की भक्ति में मग्न श्रद्धालु और मंदिर की भव्यता ने हमारे भीतर ऊर्जा और भक्ति का संचार किया। इस्कान मंदिर का इतिहास इस रूप में महत्वपूर्ण है कि यह आधुनिक समय में कृष्ण भक्ति के प्रसार का प्रमुख केंद्र है। यहां से 500 मीटर की दूरी पर स्थित प्रेम मंदिर, कृपालु महाराज के निर्मित, अत्यंत भव्य था। सफेद संगमरमर से बनी इस संरचना में जब रात में लाइटिंग पड़तीं हैं तो यह दृश्य मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। प्रेम मंदिर का इतिहास भी एक नई भक्ति परंपरा से जुड़ा है, जो विश्वभर में कृष्ण भक्ति को और गहराई से प्रसारित करता है। हमने यहां आरती में प्रभु को निहारने का अवसर प्राप्त किया, जो हमारे अनुभव को और भी गहरा बना गया। मंदिर रात 8:30 बजे बंद हो गया, और हम अपनी गाड़ी तक जाते तब तक रात के 9:30 हो चुके थे अतः हम लोगो ने होटल लौटने का निर्णय लिया।

अगली सुबह, हमने मथुरा में यमुना नदी में नाव की सवारी की, जो हमें कृष्ण की लीलाओं से जुड़ी अद्भुत स्मृतियों में ले गई। यमुना नदी का ऐतिहासिक महत्व इस तथ्य में है कि यह नदी भगवान श्री कृष्ण के बचपन और युवावस्था से जुड़ी हुई है। इसके बाद, हम द्वारिकाधीश मंदिर पहुंचे और कंस का किला, गोवर्धन पर्वत और कृष्ण जन्मस्थली (कारागर) की यात्रा की। कृष्ण जन्मस्थली का ऐतिहासिक महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यहीं भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। इस स्थल ने हमें भारतीय धर्म और संस्कृति के गहरे अर्थ को समझने का अवसर दिया। कृष्ण जन्मस्थली के दर्शन के दौरान, हमें उस स्थान की ऐतिहासिक महत्ता का अहसास हुआ, जहां भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया था। हमने यहां भंडारे मं प्रसाद ग्रहण किया, और फिर बरसाना की ओर बढ़े, जहां राधा रानी का मंदिर पहाड़ की चोटी पर स्थित है और शाम 4 बजे खुलता है। बरसाना का इतिहास राधा और कृष्ण के अनमोल संबंधों को दर्शाता है, और यह स्थान एक प्रमुख धार्मिक स्थल बन चुका है। यहां भीड़ थी, लेकिन हर जगह ऱाधे राधेऱ का उच्चारण, दिल को शांति और भक्ति की गहरी अनुभूति दे रहा था। मोलभाव न होने के बावजूद, राधे राधे का अद्भुत अदब और माहौल हमें बहुत प्रभावित किया।

हमें भिलाई स्टील प्लांट की ओर से एन सी क्यू सी 2024 में प्रतिभागियों के रूप में सम्मिलित होना

था, इसलिए मथुरा से ग्वालियर के लिए रात में ट्रेन पकड़ी और वहां होटल में ठहरे। ताजगी पाने के बाद, हम अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थान पहुंचे, जहां हमें एक बार फिर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त हुआ। इस सफलता का जश्न मनाने के बाद, रात के समय हम फिर से होटल लौटे।

**ग्वालियर ऐतिहासिक धरोहर की यात्रा**

अगले दिन, हम ग्वालियर के जय विलास महल पहुंचे, जो सिंधिया राजघराने का एक ऐतिहासिक स्थल है। जय विलास महल का निर्माण 1874 में महाराजा जयजीराव सिंधिया ने कराया था और यह महल ग्वालियर शहर के शाही वैभव को प्रदर्शित करता है। महल की वास्तुकला यूरोपीय शैली की है, जो राजपूत और मुस्लिम स्थापत्य शैलियों का मिश्रण है। यह महल सिंधिया परिवार की शक्ति, समृद्धि और शाही ठाठ-बाट का प्रतीक है।महल में रखे गए संग्रहों में 50 किलोग्राम चांदी से बना बग्घा और चांदी से बना एक ट्रेन शामिल हैं। यह सभी चीजें सिंधिया परिवार की विलासिता और रॉयल लाइफस्टाइल को दर्शाती हैं। महल के संग्रहालय में विदेशी वस्त्र, शाही हथियार, कला के दुर्लभ टुकड़े और विभिन्न ऐतिहासिक वस्तुएं रखी गई हैं, जो 19वीं सदी की शाही जीवनशैली की झलक देती हैं।

**तानसेन का मकबरा भारतीय संगीत का ऐतिहासिक स्थल**

हमने तानसेन के मकबरे का भी दौरा किया, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान गायक तानसेन की याद में बना हुआ है। तानसेन, जो मुगल सम्राट अकबर के दरबार के प्रसिद्ध नौ रत्नों में से एक थे, ग्वालियर में जन्मे थे। तानसेन का संगीत भारतीय संगीत के इतिहास में अमिट छाप छोड़ गया है, और उनका मकबरा ग्वालियर के संगीत और सांस्कृतिक इतिहास का एक अहम हिस्सा है। इस स्थल पर जाकर हमें तानसेन की विरासत को महसूस करने का मौका मिला, और इसने हमें भारतीय संगीत की गहरी परंपरा से परिचित कराया।तानसेन के संगीत का प्रभाव आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत में देखा जाता है। उनका योगदान भारतीय संगीत में रागों और तानें के रूप में जीवित है, और उनका मकबरा उस सांगीतिक धरोहर का प्रतीक बन गया है।

**ग्वालियर किला मध्यकालीन भारत का एक महान किला**

ग्वालियर किला, जिसे भारतीय किलों में अपनी अनूठी स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है, हमारी यात्रा का एक और प्रमुख आकर्षण था। यह किला 8वीं सदी में शाही शासकों द्वारा निर्मित किया गया था और इसकी स्थापत्य कला एक अद्भुत मिश्रण है, जिसमें राजपूत, मुस्लिम और अन्य शाही शैलियों का समावेश है। यह किला भारतीय किलों में सबसे पुराने और भव्य किलों में से एक माना जाता है।

किले के अंदर कुछ प्रमुख स्थल हैं, जैसे गुजरी महल, जो एक प्राचीन महल है और जहां की वास्तुकला और दीवारों पर उकेरी गई चित्रकला भारतीय कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसके अलावा, किले के भीतर स्थित सास बहू के मंदिर, जो भगवान विष्णु और भगवान शिव को समर्पित हैं, उनकी शिल्पकला और धार्मिक महत्व को दशार्ते हैं।

ग्वालियर किले में एक लाइट एंड साउंड शो भी आयोजित किया जाता है, जिसमें ग्वालियर के गौरवमयी इतिहास की गाथाएं सुनाई जाती हैं। इस शो के माध्यम से किले की ऐतिहासिक लड़ाइयाँ, सम्राटों की शाही शौर्य गाथाएँ और किले के निर्माण की कहानी प्रस्तुत की जाती है। किले को देखने के बाद स्थानीय बाजार को घूमे फिर रात में हमारा ट्रेन था और हम सवेरे भिलाई को वापस आ गए।यात्रा भारतीय इतिहास, संस्कृति और परंपराओं को करीब से जानने और समझने का एक बेहतरीन माध्यम है। अलग-अलग स्थानों की कला, वास्तुकला, रीति-रिवाज, और स्थानीय लोगों के जीवन जीने के तरीके को देखना हमारे दृष्टिकोण को व्यापक और गहन बनाता है। यात्रा, वास्तव में, एक ऐसा अनुभव है जो ज्ञान और आनंद दोनों प्रदान करता है। ●

# पर्यटकों की पहली पसंद बनने के लिए तैयार है मध्यप्रदेश

भोपाल के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के मार्गदर्शन एवं पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी के दिशा निर्देशन में मध्य प्रदेश में पर्यटन ने नए आयाम स्थापित किए। इन नवाचारों ने न केवल पर्यटन को प्रोत्साहित किया है। इन पहलों में धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, साहसिक पर्यटन, फिल्म पर्यटन जैसे क्षेत्रों को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

फिल्म पर्य़टन के लिहाज से वर्ष 2024 म.प्र. के लिये खास रहा। बॉक्स ऑफिस पर बेहद सफल रही फिल्म स्त्री-2, भूलभुलैया-3, लापता लेडीज, माय हीरो और ओटीटी की सफल वेबसीरीज गुल्लक 3, पंचायत 3 मध्यप्रदेश की विभिन्न लोकेशन्स पर शूट हुई है। प्रमुख सचिव पर्य़टन एवं संस्कृति विभाग और प्रबंध संचालक म.प्र. टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि, फिल्म शूटिंग के लिये म.प्र. देश का सबसे पसंदीदा राज्य है। सरल शूटिंग प्रक्रिया एवं अत्यंत आकर्षक फिल्म टूरिज्म पालिसी में शासनस्तर पर सहयोग की वजह से फिल्म निमार्ता-निर्देशक बार-बार म.प्र. का रूख कर रहे हैं और अब वर्ष 2025 में भी प्रदेश में कई राट्रीय और अन्तराष्ट्रीय फिल्म प्रदेश में शूट होंगी, जिससे प्रदेश के सुंदर पर्गयटन गंतव्तयों व विविध फिल्म लोकेशन को और बढ़ावा मिलेगा .

क्राफ्ट हैंडलूम के क्षेत्र में वर्ष 2024 में पर्यटन विभाग ने कई नवाचार किये, जिन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया। चंदेरी के पास प्राणपुर में देश का पहला क्राफ्ट हैंडलूम टूरिज्म विलेज तैयार किया गया। यहाँ बुनकरों के लगभग 243 घरों में हथकरघा बुनाई का कार्य किया जाता है। प्राणपुर को इसी साल केंद्रीय सूचना मंत्रालय ने बेस्ट टूरिज्म विलेज भी घोषित किया। इसी के साथ सबरबानी और लाडपुरा खास को वर्ष 2024 रेस्पोंसीबिल टूरिज्म की कैटेगिरी में बेस्ट विलेज का खिताब भी मिल चुका है वहीं वर्ष 2025 में भी केंद्रीय वस्त्र मंत्रालय के साथ म.प्र. पर्यटन विभाग महेश्वर में टेक्सटाइल टूरिज्म एवं सतना के उंचेहरा एवं उज्जैन के भेरूगढ़ में 'शिल्प हथकरघा पर्यटन गांव' स्थापित किये जाने हेतु पर्यटन विभाग प्रयासरत है

मध्यप्रदेश में आध्यात्मिक पर्यटन का उदय हो चुका है। उज्जैन में महाकाल लोक निर्माण के बाद से यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या में कई गुना बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2024 में उज्जैन में 6.5 करोड़ से अधिक पर्यटकों की आमद हुई। प्रदेश में पर्यटकों के लिये सुविधाओं में विस्तार करते हुए 20 अन्य धार्मिक स्थलों पर आधारभूत संरचनाएं विकसित की जा रही है। इसमें ओंकारेश्वर में अद्वैत लोक, सिहोर में सलकनपुर लोक, ओरछा में राजाराम लोक, सागर में रविवास लोक, नीमच में भादवा माता लोक, सतना में व्यंकटेश लोक, महेश्वर में देवी अहिल्या लोक, खरगोन में नवग्रह लोक, चित्रकूट में वनवासी राम लोक, इंदौर में अहिल्या नगरी लोक एवं परशुराम लोक, मंदसौर में पशुपति नाथ लोक, भोपाल में महाराणा प्रताप लोक, अमरकंटक में नर्मदा लोक, छतरपुर में छत्रसाल लोक, ग्वालियर में शानि लोक, बडवानी में नाग लोक, दतिया में पीताम्बर लोक तथा जबलपुर में दुर्गावती लोक निमार्णाधीन है।

मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्रदान करने हेतु सदैव प्रयासरत है। इसी कड़ी में पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटकों को ग्रामीण परिवेश व संस्कृति का अनुभव देने के उद्देश्य से होमस्टे की शुरूआत की गयी है। ग्रामीण पर्यटन परियोजना के अंतर्गत 2024 तक कुल 152 ग्रामीण होमस्टे का सफल संचालन किया जा रहा है, जिससे कुल रजिस्टर्ड होमस्टे की संख्या 312 हो चुकी है। वहीं 2025 में 350 होमस्टे का संचालन किया जायेगा। रेस्पोंसिबल सोवेनिर इनिशिएटिव के अनतर्गत 7 जिलों में सेंटर भी शुरू होंगे। मध्यप्रदेश क्लीन, ग्रीन और सेफ डेस्टिनेशन के बतौर स्थापित प्रदेश है। इसी क्रम में बांधवगढ़ के 5 गांव में क्लीन डेस्टिनेशन प्रोजेक्ट इम्प्लेमेंट किया जाएगा। वही पर्यटकों की सुविधाओं में बढ़ावा देते हुए आगामी वर्ष में पर्यटन विभाग ने अमरकंटक, भेड़ाघाट, सांची, जबलपुर, निमाड़ी, अनूपपुर में टूरिस्ट फैसिलिटेशन सेण्टर (टीएफसी) की शुरूआत करने का मन बनाया है। वर्ष 2024 में महिलाओं हेतु सुरक्षित पर्यटन परियोजना के तहत विभन्न कार्यशालायें आयोजित कर लगभग 25,000 लोगों को पर्यटन से जुड़े रोजगार और योजनाओं से अवगत कराया गया। 8100 महिलाओं को 8 सेक्टर में विभिन्न जॉब रोल में स्किल ट्रेनिंग और प्रदेश की 50 टूरिस्ट डेस्टिनेशन में 36,000 महिलाओं को सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग दी जा चुकी है। इनमें 50 फीसदी से अधिक महिलाओं को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए हैं ।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक कदम आगे बढ़ते हुए पर्यटन विभाग ने पचमढ़ी में होटल अमलतास में एक नवाचार की शुरूआत की, जिसका शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किया गया। अमलतास होटल इसलिये खास है क्योंकि, यह संपूर्णतः महिलाओं द्वारा संचालित किया जा रहा है। अमलतास की तरह ही चंदेरी के पास शुरू किया गया प्राणपुर कैफे भी पूर्णतः महिलाओं द्वारा संचालित किया जा रहा है। नवनिर्मित सरसी आइलैंड रिसॉर्ट प्रदेश में पर्यटकों को लग्जरी स्टे देने के उद्देश्य से शुरू किया गया नवीनतम उपक्रम है। शहडोल जिले में बाणसागर डैम के बैकवाटर पर निर्मित यह रिसॉर्ट प्रमुख पर्यटन स्थल बांधवगढ़ नेशनल पार्क और मैहर जैसे प्रमुख पर्यटन स्थलों के समीप स्तिथ है ।

2024 में पर्यटन विभाग द्वारा जारी किए गए टीवी कमर्शियल 'मोह लिया रे' ने दर्शको का मन मोह लिया, जिसे सोशल मिडिया पर 15 लाख से अधिक व्यूज मिले। वर्ष 2025 में प्रदेश के पर्यटन स्थलों को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता दिलाने के उद्देश्य से एक और टीवी कमर्शियल जारी किया जाएगा। इसमें अंतरराष्ट्रीय सितार वादक अनुष्का शंकर नजर आयेंगी। वहीं प्रदेश के संग्राहलय, पर्यटन स्थल, ऐतिहासिक, पुरात्व और सांस्कृतिक गंतव्यों के ब्रोशर और क्रिएटिव पब्लिसिटी मटेरियल भी बनाए जायेंगे। मध्यप्रदेश तकनीकी नवाचारो में भी पीछे नहीं है, 360 डिग्री वीआर वीडियो, ऑडियो बुक्स, डिजिटल टूर्स जैसे नवीन माध्यम से हर आयु वर्ग के पर्यटको को प्रदेश के गंतव्यों से अवगत कराने का प्रयास है। 2025 में हर सीजन में एक विशेष इन्फ्लुएंसर मीट की मेजबानी की जाएगी, जिसमें ट्रेवल ब्लॉगर्स और इन्फ्लुएंसर के माध्यम से ऑफबीट गंतव्यों को प्रचारित किया जाएगा।

मध्यप्रदेश की धरोहरों को संझोने की दिशा में यूनेस्को के विश्व हेरिटेज सेंटर द्वारा अस्थायी सूची (टेंटेटिव सूची) में प्रदेश की 6 धरोहरें ग्वालियर किला, धमनार का ऐतिहासिक समूह, भोजपुर का भोजेश्वर महादेव मंदिर, चंबल घाटी के रॉक कला स्थल, खूनी भंडारा, बुरहानपुर और रामनगर, मंडला का गोंड स्मारक सम्मिलित होना एवं ओरछा को स्थायी सूची में शामिल करने के उद्देश्य से यूनेस्को विश्व धरोहर समिति को 2024 में प्रस्तुत करना एक बडी उपलब्धि रही। अब 2025 में यूनेस्कोव की इंटेंजिबल कल्च रल हेरिटेज (अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर) केटेगिरी में, भगोरिया आदिवासी नृत्य, गोंड चित्रकला, नर्मदा परिक्रमा को शामिल करने हेतु डोजियर संगीत नाटक अकादमी को भेजा जाएगा।

एडवेंचर टूरिज्म का नया हब बना म.प्र.

सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक पर्यटन के साथ ही म.प्र. तेजी से एडवेंचर टूरिज्म हब के रूप में स्थापित हो रहा है। उज्जैन में स्काई डाइविंग फेस्टिवल हो या फिर विभिन्न सॉफ्ट एडवेंचर गतिविधियां, म.प्र. रोमांचप्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। प्रदेश के विभिन्न टाइगर रिजर्व के बफर जोर में मैराथन, साइकिलिंग, ट्रेकिंग, नेचर वॉक जैसी सॉफ्ट एडवेंचर गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जल एवं वायु कनेक्टिविटी पर रहेगा जोर

वर्ष 2024 की तरह वर्ष 2025 में भी टूरिज्म ने कई बड़ी उपलब्धियों को अपने नाम करने के लिए कई योजनायें बनाई है , जिसके अन्तर्गत स्टैच्यु ऑफ यूनिटी एवं स्टैच्यु ऑफ वननेस के बीच प्रस्तावित क्रूज परियोजनापुर्णतः की ओर अग्रसर है। पर्यटन विभाग द्वारा मेघनाथ घाट (कुक्षी) पर प्रस्तावित क्रूज टर्मिनल के लिये प्रक्रिया शुरू कर दी है। अलीराजपुर में यह टर्मिनल अलीराजपुर रोड से 35 किमी, निकटतम रेलवे स्टेशन से 74 किमी और वडोदरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से 150 किमी स्थित होने के कारण उत्कृष्ट कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। दूसरी तरफ अंतरर्राज्यीय कनेक्टिविटी को बेहतर करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा का विस्तार सतना जिले तक किया जा रहा है। सतना को भोपाल, जबलपुर, खजुराहो से जोड़ा गया है। ●

### यूनाइटेड नेशन इनफॉर्मेशन सेंटर के वी द पीपल्स हॉल, यूएन हाउस में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित

# संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख आर्थिक रिपोर्ट पर चर्चा

नई दिल्ली में 9 जनवरी 2025 को यूनाइटेड नेशन इनफॉर्मेशन सेंटर का वी द पीपल्स हॉल, यूएन हाउस में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित किया गया। और इस मौके पर डॉ. नागेश कुमार ने संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख आर्थिक रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए भारत के संदर्भ में पूछे गए कई महत्वपूर्ण सवालों के जवाब भी दिए।

संयुक्त राष्ट्र विश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएं (डब्ल्यूईएसपी) 2025 के अनुसार, पूर्वी और दक्षिण एशिया में मजबूत निजी खपत और निर्यात के आधार पर मजबूत आर्थिक विकास दर्ज किया जाएगा, हालांकि भू-राजनीतिक और व्यापार तनाव, लगातार ऋण चुनौतियों और जलवायु कमजोरियों के कारण इसमें नरमी रहेगी।

संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख आर्थिक रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2025 में वैश्विक विकास दर 2.8 प्रतिशत रहेगी, जो 2024 से अपरिवर्तित रहेगी। जबकि विश्व अर्थव्यवस्था ने परस्पर मजबूत झटकों की एक श्रृंखला को झेलते हुए लचीलेपन का प्रदर्शन किया है, विकास दर महामारी-पूर्व औसत 3.2 प्रतिशत से नीचे बनी हुई है, जो कमजोर निवेश, सुस्त उत्पादकता वृद्धि और उच्च ऋण स्तरों से बाधित है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि कई अर्थव्यवस्थाओं में कम मुद्रास्फीति और चल रही मौद्रिक सहजता 2025 में वैश्विक आर्थिक गतिविधि को मामूली बढ़ावा दे सकती है। हालाँकि, अनिश्चितता अभी भी बड़ी है, भू-राजनीतिक संघर्षों, बढ़ते व्यापार तनाव और दुनिया के कई हिस्सों में उधार लेने की उच्च लागत से उत्पन्न जोखिम। ये चुनौतियाँ विशेष रूप से कम आय वाले और कमजोर देशों के लिए गंभीर हैं, जहाँ कमजोर और कमजोर विकास सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की दिशा में प्रगति को और कमजोर करने की धमकी देता है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने रिपोर्ट की प्रस्तावना में कहा, 'देश इन खतरों को नजरअंदाज नहीं कर सकते। हमारी परस्पर जुड़ी अर्थव्यवस्था में, दुनिया के एक तरफ होने वाले झटके दूसरी तरफ कीमतों को बढ़ाते हैं। हर देश प्रभावित होता है और उसे समाधान का हिस्सा बनना चाहिए- प्रगति के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए।'

'हमने एक रास्ता तय कर लिया है। अब इसे पूरा करने का समय आ गया है। आइए हम सब मिलकर 2025 को ऐसा साल बनाएं, जब हम दुनिया को सभी के लिए समृद्ध, संधारणीय भविष्य की राह पर ले जा सकें।'

पूर्वी एशिया में विकास की संभावनाएं, दक्षिण एशिया में विकास की संभावनाएं ,जोखिमों का मुकाबला करने और लचीलेपन को समर्थन देने की नीतियां, महत्वपूर्ण खनिजः सतत विकास को गति देने का एक महत्वपूर्ण अवसर। जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई।

इसके साथ संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट जिसमें चेतावनी दी गई है कि अनिश्चितता के कारण वैश्विक विकास धीमा रहेगा। उसपर भी चर्चा हुई।

संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख रिपोर्ट, विश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएं (WESP) 2025 के अनुसार, 2025 में वैश्विक आर्थिक वृद्धि 2.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जो 2024 से अपरिवर्तित है, जिसे प्रेस कान्फ्रेंस में जारी किया गया। जबकि वैश्विक अर्थव्यवस्था ने परस्पर मजबूत झटकों की एक श्रृंखला को झेलते हुए लचीलापन दिखाया है, विकास दर महामारी-पूर्व औसत 3.2 प्रतिशत से नीचे बनी हुई है, जो कमजोर निवेश, सुस्त उत्पादकता वृद्धि और उच्च ऋण स्तरों से बाधित है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि कई अर्थव्यवस्थाओं में कम मुद्रास्फीति और चल रही मौद्रिक सहजता 2025 में वैश्विक आर्थिक गतिविधि को मामूली बढ़ावा दे सकती है। हालांकि, अनिश्चितता अभी भी बड़ी है, भू-राजनीतिक संघर्षों, बढ़ते व्यापार तनाव और दुनिया के कई हिस्सों में उधार लेने की उच्च लागत से उत्पन्न जोखिम। ये चुनौतियाँ विशेष रूप से कम आय वाले और कमजोर देशों के लिए गंभीर हैं, जहाँ कमजोर और कमजोर विकास सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की दिशा में प्रगति को और कमजोर करने की धमकी देता है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने रिपोर्ट की प्रस्तावना में कहा, 'देश इन खतरों को नजरअंदाज नहीं कर सकते। हमारी परस्पर जुड़ी अर्थव्यवस्था में, दुनिया के एक तरफ होने वाले झटके दूसरी तरफ कीमतों को बढ़ाते हैं। हर देश प्रभावित होता है और उसे समाधान का हिस्सा बनना चाहिए- प्रगति के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए।' 'हमने एक रास्ता तय कर लिया है। अब इसे पूरा करने का समय आ गया है। आइए हम सब मिलकर 2025 को ऐसा साल बनाएं, जब हम दुनिया को सभी के लिए समृद्ध, संधारणीय भविष्य की राह पर ले जा सकें।'

क्षेत्रीय आर्थिक दृष्टिकोणः भिन्न-भिन्न विकास संभावनाएं, व्यापार में सुधार और मौद्रिक सहजता, उच्च ऋण-भुगतान बोझ और उच्च खाद्य मुद्रास्फीति से खतरा,महत्वपूर्ण खनिजः सतत विकास को गति देने का एक महत्वपूर्ण अवसर। जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई।

नववर्ष
लोहड़ी, मकर
संक्रांति की
हार्दिक शुभकामनाएं
45
YEARS OF EXCELLENCE
!! RADHA SOAMI JI !!
K J
Kasturi Jewellers®
SINCE 1976
100% HALLMARK JEWELLERY SHOWROOM
#GOLD #DIAMOND JEWELLERY #SOLITAIRES
100%
Lifetime Maintenance Free
100%
Buy Back Diamond Jewellery
100%
Certified Diamond Jewellery
Shop No. 15, 16, 17, 18, SDM Market, Mangal Bazar Road, Uttam Nagar, New Delhi-110 059
Shop No. 54-55, Main Pankha Road, Opp. Sagar Pur Police Station, New Delhi-110 046
Kasturi Lal Ph. 98186 09444 | Manish (Monu) Ph. 98186 11313

# ‘दूसरा मत’ प्रकाशन

**‘आमने-सामने’** अपने-आप में एक ऐतिहासिक इंटरव्यू-संग्रह है। इस संग्रह में देश की 62 अहम शख़्सियतों एवं हस्तियों के साक्षात्कार शामिल हैं। यह संग्रह देश ही नहीं विदेशों में भी ख़ासा चर्चित रहा है।

देश के जाने-माने प्रकाशन **‘राजपाल’** के प्रकाशक एवं डीएवी मैनेजमेंट कमिटी के वायस प्रेसिडेंट **विश्वनाथ** जी ने अपने पत्र में स्पष्ट लिखा है,- “इस तरह के विशाल इंटरयू-संग्रह देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अभी तक नहीं आए हैं।

**आमने-सामने** (मूल्य 750/)

**सामना** (मूल्य 1100/)

**‘सामना’** भी एक महत्वपूर्ण इंटरव्यू-संग्रह के तौर पर **‘आमने-सामने’** की तरह सामने आया है। इसे भी शख़्सियतों एवं साक्षात्कार की कला को क़ुबुल करने वाले लोगों ने हाथों-हाथ लिया है। इस संग्रह में देश की विभिन्न क्षेत्रों की 82 हस्तियों की इंटरव्यू की शक्ल में लेखा-जोखा एवं उनकी हस्ती की पड़ताल है।

अपने-अपने क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होने वाले और देश व दुनिया के सामने अपना लोहा मनवाने वाले लोगों के एक समूह विशेष इस अंक में शामिल हैं।